

ऊपर, मोई अचिन्त्यो नमस्तो पञ्ज्यो जायक ॥
 स० ॥ ८६ ॥ अजना कतं सुण सुन्दरी, मांहेरो
 बाप छे चतुर सुजाणक । माता विचक्षण अति
 घणी, माई छे मांहेरा गणा बुद्धिवानक ॥ पिण
 पाप छे मांहेर अति गणा, तं मन मांहे मूल न आणै
 रोसक । आपा पुरव पुण्य कीधा नही, ए सहु
 आपणे करमा रो दोषक ॥ स० ॥ ८७ ॥ हिवे
 गिरवर गुफा स्तामो जोवतां, तिहां दीठो छे मुनिवर
 ध्यान वर धीरक । निर्दोष आचार पालता, तप
 जप स्वप करी शोपव्यो शरीरक ॥ अवधि ज्ञाने
 करी आगला, अजना जाय भेट्या तसु चरणक ।
 अति दुःख मांहे आनन्द हुवो भव भव होज्यो
 स्वामी तुम तणो शरणक ॥ स० ॥ ८८ ॥ हिवे
 हाथ जोडी अजना कहे, पूर्व किस्सु कियो कर्म
 चण्डालक । किण करमां स्वामी मांहेरे इण भव
 मे आयो अणहुन्नो आलक ॥ सासरा सूं काढी
 मो भणी, पीहर राखी नही घर मांहेक । आप
 कृपा करो मो ऊपर सगलाई सम्बन्ध देवो नी

सुणावक ॥ म० ॥ ८६ ॥ द्विवे माधु कहे बाई
 मांमलो, पाछेले भव रो कहे विग्नन्तक । बां
 जोक हुन्ती लिखजावती, आवक धर्म पालती रु
 खंतक ॥ मिदग्य पुत्र थो तेहने, ते चोरी पडोमग
 ने संपियो तेहक । तेरे वडी बांगी जोक टलवली,
 दु.ख वणो धरती मन मांयक ॥ म० ॥ ८७ ॥
 बांगी जोक रे नियम हुन्तो, जो माधु हुवे निग
 नगर मन्तारक । तो बादियां पहली तेहने. अब
 पाणी रो हुन्तो परिहारक ॥ विलाप कीथो निग
 अनि वणो, जब ते पुत्र पाछो दियो तानक ।
 अन्तराय पडी ठरजण तणी निगमं वंध गड बां
 कर्मां रो गमक ॥ म० ॥ ८८ ॥ काल कितोएक
 बीतां पछे साधव्यां आई निग नगर मन्तारक ।
 ते बाणी मांमल तेहनी, वेगग मं लीथो मजम
 नारक ॥ तपन्या करी अणजण कियो, आलोया
 विना पटलो फेरक । कीथा हो कर्म न छुटिये,
 तेरे वडी रो हुवा वर्ष तेरक ॥ म० ॥ ८९ ॥
 मिदग्य पुत्र ते तप करी. तुक्त कुखे आय लियो

चिन्तवे चित्त मभ्भारक । कहे केसरी लुटो काया
हरे, पिण मांहरो धर्म न लेवे लिगारक ॥ म० ॥
६६ ॥ हिवे वमन्तमाला इम उच्चरे, कहे अन्नना
महा सती छै निग्धारक । मोटे रे गज्ज हेल
करे, कोई देव देवी आवो इणवारक ॥ कोठे
सज्जन हुवे अन्नना तणो, तो पिण वेग मं आवज्यो
धायक । उपमर्ग उपनो अति वणो, वमन्तमाला
बोले छै एहवी वायक ॥ म० ॥ ६७ ॥ निण
वन मांहि व्यन्तर यक्ष रहें ते वारे जोजन तणो
गवचालक । ते यक्ष कहे यक्षणी भणी, आपणे
जरणे आवी दोय वालक ॥ निण मं रक्षा कां
आपां एहनी, इम चिन्तव जार्दलो रूप कियो
तेहक । निण मारुला मिह ने पराभवी, काटी
दियो दूर वन ने छेहक ॥ म० ॥ ६८ ॥ माहाज
देई अन्नना नली, देवता बोले छै एहवी वायक ।
मतियां माहि तं निरमली, थांग गुण पूरा मोह
कथा नही जायक ॥ हिवे कलंक उतरसी तांहगे
कुजले आवसी पवन कुमारक । बले मामो थगे

इला जावनी, न निमिन्न रो रण वन मकरक
 ॥ स० ॥ ६६ ॥ पणो पणन सुणो देवता वणो,
 वन माटे दोन रहे अवोरक । वन कल कूल
 निहा ववो जिन धर्म वणो नरो लोदे रे लोहक ॥
 सुत वन पाहे छै निरमला अतोनिश करे छै जिन
 वणो जायक । वरदा करे आवे आकरी अशना
 काटे छै सानिया पायक ॥ स० ॥ १०० ॥ नैव
 मास पूर अष्टमी, पुष्य नक्षत्र आयो ओकारक ।
 रान रा पाडला पोहरमा, अशना जननिपो हणुमन्त
 कुमारक ॥ अशुनी टालो निण अवसरे दासी
 ने कहे अशना आमक । महोदव करतो कुण
 एहना, कटक मे गयो छै आपणो स्वामक ॥ स० ॥
 १०१ ॥ चांदणो रान एनम वणो अशना कर
 धर बैडी छै नन्दक । चटल चपल सुहामणो,
 दीडां पामे वणो हरष आणदक । हरषे बोलावे
 रे मायडी, कुंवर वणो अजै छै लघु बेसक । तारा
 ने ताके रे बालुडो, जाणे के नंद ने लेष अपेटक
 ॥ स० ॥ १०२ ॥ हिबे मामो अशना वणो,

सुरसेन राजा तेहनो नामक । देशान्तर जाय
 पाछो बल्यो. आकाशो विमान थांभ्यो तिण
 ठामक ॥ वन मांहे दीठी दोय बालिका, अचरत
 पामी ने मोकली नारक । जव मामी अञ्जना ने
 ओलम्बी, नैना में छुटी छै जल तणी धारक ॥ स०
 ॥ १०३ ॥ गले लागी बिहु बणी आरझी, एठे
 मामो आयो तत्कालक । अञ्जना ओलम्बने मिल्यो,
 अञ्जना रोवे छै आंमृड़ा रालक ॥ डील सं
 अलगी हुवे नही, बालक जिम धरी रही शीशक ।
 जव ग्वाला में बैसाडी धीरपे, बाई हिवे पुसुं
 तुम तणी आशक ॥ स० ॥ १०४ ॥ हिवे अञ्जना
 कहे मामा भणी, माये आयो मांहे अणहुनो
 आलक । तिण सं काढी सामरा थी मो भणी,
 पोतर मे किणटि न कीधी संभालक ॥ बले आग
 देवाड़ी राय बरो बरे, तिण कारण हं आई न
 मकारक । मामाजी पाप पोते बणा. कण्ठा न
 कीधी मांढरी किणटि लिगारक ॥ स० ॥ १०५ ॥
 हिवे बैस विमाण में सचत्वा, अञ्जना ने गोद में

हनुमन्त कुमारक । ठीठो तिण मोल्यां गो भुमवो,
 रुद्री ने चञ्चल दीधी छे फालक ॥ तोडी मोल्यां
 लड मई पट्यो, अञ्जना मुरझा पामी तिण वारक ।
 तय मामो लेई पुत्र भणी, आण मेल्यो अंजना
 हिये पासक ॥ स० ॥ १०६ ॥ बांह झाली पैठी
 करी, मामो बोले तिहां बोल रमालक । कहे
 देश परदेश मे हू कियो पिण एहवो कटे ही न
 देख्यो बालक ॥ एहवा वचन कहै अंजना भणी,
 आयो छै हनुवाटण मभारक ॥ करे महोच्छव
 अति घणो, नाम दियो हनुमन्त कुमारक ॥ स०
 ॥ १०७ ॥ अञ्जना हनुमन्त इहां रहे, पवनजी
 पहुचा छै लंकापुरी जायक । तिहां रावण राजा
 सूं मुजरो कियो जब रावण बोले छै एहवी वायक ।
 पवनजी आद राजा भणी, थे मेघपुरी जाय करो
 मेलाणक । वरुण राजा ने हटाय ने, बर्तावज्यो
 तिहां मांहरी आणक ॥ स० ॥ १०८ ॥ हिवे
 मेघपुरी दल संचल्यो, साहसा वरसे तिहां वाणना
 मेहक । पिण पवनजी पग नहीं चातरे, मन्हे

मांहि मनुष्य मुवा वणा तेहक ॥ वर्ष दिवस
 विग्रहो रथो, पछे मांहो मांहे मेल कियो ताहक ।
 आण वरतावी रावण तणी, पवनजी हरष पाग्यो
 मन मांहक ॥ स० ॥ १०६ ॥ द्विवे कटक आगो
 रे लङ्का भणी, राजा रावण ने कियो जुहारक ।
 जब रावण बस्त्र बागा आपिया, बले आप्या उ
 शोभता वणा शिणगारक ॥ केई एक दिन
 राग्वियां पछे, रावण सीम दीधी तिण वारक ।
 पवनजी आठ राजा भणी, ते आया छै निज नगर
 मभारक ॥ स० ॥ ११० ॥ पवनजी कुशले घर
 आविया, मात पिता तणे लाग्या छै पायक । जेठे
 माता भोजन करे, तेठले अञ्जना ने घर जायक ॥
 मुनां रे महल मालिया देगिया, कुरले छै तिहां
 अति वणा कागरक । परब बीनी ते पात काना
 मुणी जब पवन रे लागी छै अति वणी आगरक ॥
 स० ॥ १११ ॥ द्विवे पवनजी तिहां थी निरुज्या,
 माता पिता आई लारे तिण वारक ॥ बांढ काली
 पवन ने उम रुहे द्विवे नो जियो च्यारु ही आठ-

रत । हु पवन ने अपना मंगलारत, पवनजी
 सांझो न जोड़े रे नामक । गा होजाय माता
 दने, गया नै राजा मणिरा ने गानक ॥ स० ॥
 ११० । हिवे माता रोवे हुए हांवने काम विमासी
 नही कीनो रे गतक । दल भणी जन नहीं
 मोड़लया अझना ने नही गानी रे गतक ॥ काची
 रे दुहि नारी नणी, वेतुमती गणी बिल्लवे एमक ।
 भिग ० सुभ जीवन भणी नै पापणी कीधो अनि
 सुणो कामक । स० ॥ ११३ ॥ हिवे पवनजी
 करे मन्त्री भणी, हु सातु सुतरा सुं किन करुं
 प्रणामक । मांनरी माता नेहने पराभवी, तिण
 सुं सातरा ने गई मांनरी नामक । हिवे जंचो
 हुई किन बोलसुं, हिल निल ने धान करुंला
 केमक । बले अझना राणी सो उपरे, किण बिध
 धरेली हरष ने प्रेमक ॥ स० ॥ ११४ ॥ मन्त्री
 करे सुणो कुमरजी, आपां तो गया था कटक
 मभारक । लारे सुं काडी अझना भणी, आपरो
 दोष नहीं छै लिगारक ॥ इम करे पवन कुमर

भणी, चाकर मेलियो नगर मभारक । कहे पवनजी
 आप पधारिया. जव अञ्जना ने पीहर हुई चिन्ता
 अपारक ॥ स० ॥ ११५ ॥ महिन्द कहे हं महा
 पापियो, मैं दुष्ट अकारज कीधो रे जाणक ।
 हाजरिया लोक मांढरे वणा. पिण डाल्यो नहीं
 कोई चतुर सुजाणक ॥ सीख नी बात कोने नहीं
 कही, मनमां मांढरे उपनी बहु रीसक । नरक
 नियाणो मैं बांधियो हिवे दुष्ट कर्मा थी केम
 हूदीसक ॥ स० ॥ ११६ ॥ हिवे पवनजी आप
 पधारिया, मांभल मासु पड़ी शिर भालक । पेट
 कटे दोनं हाथ सूं, उदर आधान किहां गई
 बालक ॥ मन मांढे दुःख वेदे वणो, जाणै कोई
 जोर सूं लागै छै बाणक । अञ्जना नो दुःख वें
 वणो, निम २ बोले छै रोवनी बाणक ॥ स० ॥
 ११७ ॥ साथे सेन्या लेई चतुरङ्गिणी, सुसरो
 जंघाई रे माहमो जी जायक । बांह पमारी दोनं
 मिक्या, दोनां रे दुःख वणो मन मांयक ॥ जब
 पवनजी कहे राजा भणी, तुम पुत्रीने कादी हम

नगी मायक ॥ न होय नगी मन मायक ॥ न
 पाये राजा न वेणवे नगी जायक ॥ स० ॥ ११८ ॥
 हिवे पवनजी निज घर आपने मरठनिया मरठन
 इने वगयो तानक । वनि चोरा नन्दन घर-
 निया गतणा वन पतनिया प्रधानक ॥ पर
 भोजन मटप आपने पतनिया भोजन विविध
 पकवानक । पिण पवनजी कवो भरे नगी,
 अङ्गना उपर लाग रखो अन्नर ध्यानक ॥ स० ॥
 ११९ ॥ पिण पवनजी मन माहि चिन्तवे, जो
 पुत्र जायो हुवे तो यथाई जी थायक । वसन्त-
 माला पिण दिसे नही, एम विचार करे मन मांहक ।
 अंजना री मा तिण अवसरे, चिन्ता मन मे करे जी
 अपारक ॥ कहे हं तो पापणी मोटकी, मै अंजना
 ने न राखी घर मभारक ॥ स० ॥ १२० ॥ हिवे
 सालानी सुता रे नाहनडी, तिण ने पवनजी लीधी
 छै खोला मभारक । कहो धांरी भुवाजी स्यू
 करे, ते रुदन करी ने घोली तिणवारक ॥ माता
 पिता ने बंधव सहु, सगलाई कीधो छै कर्म चण्डा-

लक । आंगन न राखी रे अथ बड़ी कलंक मुणी
 ने काढी ननकालक ॥ स० ॥ २०१ ॥ एहवा
 वचन मुणी बालिका नणा. पवनजी दूर फेंक दियो
 छै थालक । महिन्द्रगय आय पाये पड़्यो. तब
 मन्त्री कहे नं. मूर्खे गिंवारक ॥ कलक गी मुन
 कीथी नहीं, गिंजर विचारियां काढी रे बालक ।
 अकल भ्रष्ट हुई नाहंगी. कटुक वचन कथा पिण
 वारक ॥ स० १०२ ॥ द्विवे प्रहसन मन्त्री के
 पवनने, बाले छै सुख थी एहवा वायक । उठे
 स्वामी किम वैसी गद्या, अंजना नी ग्वर कंग
 वेग जायक ॥ मई छै के अथवा जीवनी, मुन
 दुःख भोगवे छै किण ठामक । एहवा वचन मुनी
 मन्त्री नणा, अंजना ने दोनं जोवा छै नामक ॥
 स० ॥ १०३ ॥ द्विवे महिन्द्र राजा पिण मांये
 ह्वो, बले प्रह्लाद गय आयो छेई साथक । बं
 माना पिण आर्ट छै रोवनी. मांमन पुत्र पर
 मांजरी बानक ॥ अन्हें ग्वर करग्यां अंजना
 नणा. थे तो जावो निज नगर मभारक । नगि

गले ताज तोरी मति पवनजी नी नी मारी गग
 लिगारक ॥ स० ॥ १२२ ॥ जव अनेक विमाणा
 चलाविया, वटे गगना परस फेला असवारक ।
 राम राम जोदे अजना मणी, सुग सं मोटे ई
 पवन कुमारक ॥ जो मनी नाने तो ह जीरम,
 नी तो अगले इगटेसं कालक । देज परदेज
 फिरता थका, अजना सुनी ह निज मोसालक ॥
 ॥ स० ॥ १२५ ॥ जव पवनजी चाल्या ह आगले,
 पीछे आवे ह मगलो जी साधक । जव वसन्त
 माला पवनजो ने ओलह्या, कहे अजना ने आव्यो
 ह तुम नणो नाथक ॥ जव अंजना आय पाये
 पडी खोला मे वैसाणो हनुमन्त कुमारक ॥ स०
 ॥ १२६ ॥ वसन्तमाला आय पाये पडी, हीयासूं
 भीडी पवन कुमारक । कहो बाई दुःख तुम किम
 सहा, किम सही माहरी माय नी मारक ॥ किम
 करो वनफल धीणिघा, किम करी रती घन मभा-
 रक । किम करी काल गमावियो, किम करी
 पाव्यो हनुमन्त कुमारक ॥ स० ॥ १२७ ॥ स्वामीजी

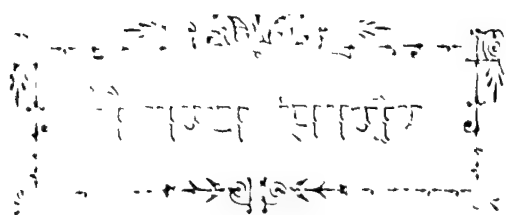
आप कटक में पधारिया, सामरे पीहर झाने
 दियोजी छेहक । निणसुं करी छें वनमें गई बन
 फल भागि ने काडिया डिहक ॥ तिहां मोरा
 मुनिवर भेटिया, बले देवता कीधी छै हम तणी
 मारक । गन दिवस धर्म पालनां मामो छें
 आयो दण नगर मभारक ॥ स० ॥ १०८ ॥ त्रिवे
 वसन्तमाला अने अंजना, पवन ने बोले छै मधुरी
 वाणक । आप किम कटक में मंचल्या किम मया
 राजा वरुण ना घाणक ॥ जब पवन कुमार इमडी
 कहें में वरुण राजा सुं युद्ध कियो तेयक । जब
 याव लागा ने साजा हुवा जीत फते कर आयो
 दुं गयक ॥ स० ॥ स० ॥ १०९ ॥ त्रिवे अंजना
 मती निण अवसरे, सामु सुमरा ने लागी जी
 पायक । जब सुमरो आंग्यां आंसु भरे, में कलंक
 देखे ने कीधी जी अन्यायक ॥ अंजना पाय नली
 कहें घापजी केस करे छो चित्तापक । दोष नहीं
 छै तुम नणो, पोने छै मांहरें बोहला पापक ।
 स० ॥ ११० ॥ बले माता पिता सुं जाय निर्द

माई भोजायां सं अति घणों नेटक । माना पिता
 ते रोवे घणा, अजना मात पिता ने कते छै नेटक ॥
 धे चिन्ता करे गिण कारणे, पाते न मांरे
 मोहला पापक । निण कारणे मै दुःख भोग्या,
 मूल न करज्यो तोई सन्तापक ॥ स० ॥ १३१ ॥
 हिवे एणुपाटन धी चालिया, अजना ने मामे आपी
 घणी आधक । साधे आयो पहुंचायवा, चतुरङ्गणी
 सेन्या लेई साधक ॥ साधे तो परजा अति घणी,
 रतनपुरी आया मोटे मण्डाणक । उछरंग मन
 मांहे अति घणो घर घर वरल्या छै कोड़ कल्या-
 णक ॥ स० ॥ १३२ ॥ हिवे सीख देई मामा
 भणी, अजना सती पवन कुमारक । सुख भोगवे
 संसार ना, मांहे मांति लग रही प्रीत अपारक ॥
 काल कितोक गयां पछे, राजा राणी खारो जाण्यो
 संसारक । राज देई पवनजी भणी, मोटे मण्डान
 लीधो संयम भारक ॥ स० ॥ १३३ ॥ पवन
 नरिन्द राज भोगवे, अजना राणी सूं हेत विशे-
 षक । हनुमन्त कुमार विद्या भणे, वानरी आदि

विद्या भण्यो अनेकक ॥ चतुर विचक्षण अनि
 वणो. देश प्रदेश में हुबो जी विख्यातक । वसन-
 माला रो मान बधारियो. मगलाई प्रष्ट करे तेहने
 वांतक ॥ स० ॥ १३४ ॥ द्विवे वरुण राजा निण
 अवसरे, आपणा पुत्रां ने जाणी मजोरक । वर
 पगक्रम देखी आपणो मन मांदि धरे अनि अनि-
 मानक ॥ निण लड़ा मणी दन मोकल्यो, जे
 तांहेरे युद्ध करवा तणो भावक । तो बीजा
 मुभट डल मोकली. तुम्हे एकर म् जोवा मुम्
 आयक ॥ स० ॥ १३५ ॥ रावण सेना मैली
 वणी, एक तेडो मैल्या रतनपुरी मांदि । जव
 पवनगाय जावा ने मज हुवा, जव हनुमन्त कुमा
 बोले एहवी वाचक ॥ कहे कटक मांदि ह जव
 मं. जव पवनजी अंजना कहे छे आमक । पुत्र
 नृ अजे बालक अछे, कटक मांदि नही तांहेरो काम
 ॥ स० ॥ १३६ ॥ हनुमन्त दह करी चालियो.
 महिन्द्रपुरी जाव कियो मैलाणक । तीन पग
 डल आकल्यो, दंवन बांण्यो नाना ने जाव

शरसेन राजा आय जाँलया, वान नी न किया
 प्रणासक । कां माँतरी माता न रागी नरी निण
 कारणे मे आय तियो मयामक ॥ स० ॥ १३७ ॥
 हिवे हनुमन्त आयो लता मणी, मातमो आयो
 छै रावण रायक । हनुमन्त कुमार ने दग्न,
 रावण पामियो अनि ररप अनाय ॥ घोरो
 भाली ने हनुमन्त निकल्यो बीजा पिण चाल्या
 अति घणा रायक । साँतमो आयो कटक वरुण
 नो, थुड ह्वो घणो, माँतो माँयक ॥ स० ॥ १३८ ॥
 रावण की सेना देखी तगी, सौ पुत्र वरुण ना
 चाल्या तिण वारक । थुड करवा लागा निण
 समे, लोहना बाण जाणे शूंक अझारक ॥ बले
 गोला ने बाण बहे घणा, काम आया बडा बड़ा
 जोधारक । जब रावण की सेना न्हासी गई,
 सेंठो उभो रयो हनुमन्त कुमारक ॥ स० ॥
 १३९ ॥ घणा लोरु कहें हनुमन्त ने, तू मात
 पिता ने अलखावणो वालक । तिण सँ तोने
 मेलियो कटक मे, तू वरुण सँ थुड कियां कर-

जायलो कालक ॥ बल नो हनुमन्त हम कहें,
 वरुण ने पुत्र मिल आवज्यो साथक । बानां कियो
 सुं खबर नहीं, बल तणी खबर पड़े रण में बाबलां
 हाथक ॥ म० ॥ १४० ॥ बानरी बिया भारी
 करी, बानर रूप कियो निण बारक । बारें जोजन
 में वृक्षादिक हुन्ता, ते लेई न्हाव्या वरुण नी फाँज
 मभारक ॥ बणो कतल कियो वरुण नी फाँज
 नां, बले लाम्बो पंड विकुर्व्यो निण बारक । मां
 पुत्र राजा वरुण तणा बांध लिया निण पंड
 मभारक ॥ म० ॥ १४१ ॥ वरुण राजा कं
 हनुमन्त ने, तं बानरी बिया ने मेल दे दूरक ।
 पड़े जीत पामजें रण बिषे, तो हं जाणुं तों
 मोटको गुरक ॥ जय हनुमन्त बिया मेली बांदरी,
 मृलगोरूप करी मेले छैं बाणक । जय वरुण
 राजा हम चिन्तवे, ए बालक दिसे छैं महा द
 बानक ॥ म० ॥ १४२ ॥ द्विवे धधकी ने व
 राजा उठियो, हनुमन्त कुमार सुं मांडी छैं गडक ।
 दोनूं जणा हाथ चलावे निहां, मुष्टि ना बाज ग



॥ मंगलाक्षरणा ॥

ढोहा ।

सिद्धश्री परमात्मा, अरिगंजन अरिहन्त ।
इष्ट देव वन्दुं सदा, भय भंजन भगवंत ॥१॥
अरिहन्त सिद्ध समस्त सदा, आचारज उवभाय ।
साधु सकल के चरणकुं, वन्दु शीश नमाय ॥२॥
शासन नायक समरिये, भगवन्त वीर जिनन्द ।
अलिय विघन दूरे हरे, आपे परमानन्द ॥३॥
अंगुठे अमृत वसे, लब्धि तणो भण्डार ।
श्री गुरु गौतम समरिये, बद्धित फल दातार ॥४॥
श्री गुरुदेव प्रसाद से, होत मनोरथ सिद्ध ।
ज्यं घन वरसत वेलितरु फूल फलन की वृद्ध ॥५॥

परितारक ॥ रावण राजा निण असभर ॥
 ने ऊपर तीर्थो छे राधक । जय हनुमन्त ॥
 राजा मणी, बांधीने न्हाय दिगो रण भागि ॥
 स० ॥ १४३ ॥ हनुमन्त कहें पन्थन ना
 तांदरा, जो रावण राजा रे लागे तू पायक । जय
 वरुण कहें वीतराग विन, अवर रा पाय वन्दू नदी
 जायक ॥ चारित्र लेणो छै माहरे, तव हनुमन्त
 धन्यन तोडिया तामक । वरुण लियो चारित्र
 वैराग सुं, तिणरा पुत्र ने राज दियो रावण राधक ॥
 स० ॥ १४४ ॥ रावण हनुमन्त ने प्रशंसियो,
 तू शूर धणो धांरी लघुजी वेशक । ते मोटा
 राजा ने हटावियो, रीझ देई आयो लंक नरेशक ॥
 परणाई भाणेजी आपणी, सीख दीवी सनमान
 सत्कारक । वले हनुमन्त मोटा राजा तणी,
 रूपवती कन्या परणियो एक हजारक ॥ स० ॥
 १४५ ॥ पवन नरिन्द राज भोगवे, मानेती राणी
 अञ्जना नारक । घसन्तमाला सुं हेत अति धणो,
 वले मानेतो छै हनुमन्त कुमारक ॥ ते संसार

ना सुख भोगवे, हनुमन्त कुमार सहस्र नालां
 सहितक । रतन जडित महिलां मभे, मांहो मांहि
 लग रही अति प्रीतिक ॥ म० ॥ १४३ ॥ हिवे
 काल कितोक गयां पछै. अन्नना चिंतवे चित
 मभारक । परभाते राजा ने पृछने, लेणो मिर
 मोने संयम भारक ॥ इम चिंतवी आई राजा
 कने हाथ जोड़ी बोले जीश नमायक । आज्ञा
 वो स्वामीजी मो भणी चारित्र लई देऊं कर्म
 व्यपायक ॥ १४७ ॥ जय राय कहें अन्नना भणी.
 केईक दिन रहो घर मभारक । हिवे पुत्र बालक
 अछै पछे माये लेस्यां आवे संयम भारक ॥ तय
 अन्नना हाथ जोड़ी ने इम कहें, मोने काल रं
 विश्वास नहीं छै लिगारक । निण कारण दीक्षा
 लेमं सहि, जय राजा पिण हुबो छै माये तैयारक
 ॥ म० ॥ १४८ ॥ हिवे हनुमन्त कुमारने तेइ
 पवनजी बोले छै एहवी वायक । अमं चाग्रि
 लेम्या वंगम सं. हनुमन्त कुमार गेयो वणो नायक.
 पछे राज वंसायो मोट मण्डान सं, वसन्तनाथ

श्री गणेशाय नमः श्री श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

जुवो मांस दारु थकी, करे बेरया सँ जोग ।
जीव हिंसा चोगी करे, परनारी नों भोग ॥१॥

॥ डाल राम की चाल ॥

व्यसन मानमो परनारी नो, प्रत्यक्ष जा
देवायो । गवण पदमोत्तर मणरय राजा, तीनों
गज गमायो ॥ गजवीयाने राज पियागे ।
पदेगी ॥ १ ॥ मणरय राजा कर मनसुयो डाल
बाटु ने मायो । आप सुओ ने गज गमार
दाय कटुय न आयो ॥ ग० ॥ २ ॥ रावण ग

पणिला हुवो पोडे पदमोत्तर गयो । नीजी क्या
मणरथ राजा नो, ने सुणज्यो नित्त लागो । रा०

॥ ३ ॥ जनुद्रोष न नरन जेव मे नगर सुडर-
शम भागो । पन न पण देवन सुन्दर नैपन
सुतो राजा गो ॥ रा० ॥ ४ ॥ मणरथ राजा रे
परणो रागो, छदि नगो विस्तारो । हाथो घोडा
ने रथ पादक सेना, वगने चौथो आरो ॥ रा० ॥

५ ॥ स्वन्न ने परनक केरो विरोध नहों
निगवारो । मणरथ राजा रे जुगबाहु भाई,
नारो नाहि नै प्यारो ॥ रा० ॥ ६ ॥ पान इन्द्री
ना भोग भोगवता, नाटक पडे दिन रैणो । विविध
प्रकार नो कोडा करना विषय विरोध मडाणो ॥

॥ ७ ॥ मणरथ राजा राज भोगवता, चढियो
महल उदारो । निग अवतरे मणरथा दीठी,
जुगबाहु नो नारो । रा० ॥ ८ ॥ रूप देखी ने
राजा अचरज पान्यो अहो अहो रूप तुमारो ।
इम राणो ने हू महल मे राखूँ सुत विलखूँ
सत्तारो ॥ रा० ॥ ९ ॥ मणरथ राजा कर मनसुने

है गानो । मैणरखा मन उणी जाणी, जेठ पिना
 री ठामो ॥ १७ ॥ इम जाणी ने गणी उराह
 लीधा वस्तु आभूषण नारो । नेह मनेह वस्तु
 मेली जाण्यो राजा लागो न्हारी लागो ॥ रा० ॥
 १८ ॥ मैणरखा ने रीसज आई, दीनो दासी ने
 झुझारो । धणी नो न्हारो परदेश सिधायो,
 राजा पाडियो न्हारी लागो ॥ रा० ॥ १९ ॥ दासी
 नो मन मे दिलगीर हुई, राजा पासे आई ।
 मैणरखा नो महाराज कोष करी ने, दीनी वस्तु
 बगाई ॥ रा० ॥ २० ॥ मणरथ राजा रान समय
 ने, महल भाई रे आयो । उगवाजो नो जडियो
 दीठो, हेलो नारे है रायो ॥ रा० ॥ २१ ॥ मैण-
 रखा नो मन नारि जाण्यो, मणरथ राजा आयो ।
 बीजो नो कोई उपाय न दीसे ह सासु ने बुरे
 जणायो ॥ रा० ॥ २२ ॥ मैणरखा नो छाने
 जाय ने, दीनो सासु ने जणायो । अमलां मस्तनां
 माना जाण्यो, बेठो भोले आयो ॥ रा० ॥ २३ ॥
 ओ नो महल बेठा जुगवाहु रो, महल पेली

जुगवाहु ने बुलायो । करो सजाई आयुद्धशाला
 नी, हूं देश लेवण ने जायो ॥ रा० ॥ १० ॥ हाथ
 जोड़ी ने जुगवाहु बोल्पो, ओ तो छै थोड़ो कामो ।
 राज विराजो राजसभा में, हूं जासूं भाई नामो
 ॥ रा० ॥ ११ ॥ मणरथ राजा राजी हुवो हुकुम
 कियो छै भाई । देश किल्लो कायम करी आवो,
 ले जावो फौज सजाई ॥ रा० ॥ १२ ॥ जुगवाहु
 तो उद्यो शताव सूं, हरष हुवो मन मांदि ।
 किल्लो कायम कर पाछो आजं जब मुजरो कल्ला
 भाई ॥ रा० ॥ १३ ॥ ले फौजां जुगवाहु चाल्यो,
 मजला मजला जायो । जुगवाहु तो मन में नही
 जाण्यो, मणरथ कियो उपायो ॥ रा० ॥ १४ ॥
 मणरथ राजा मणरथ्या कारणे, भारी वस्तु मगावे ।
 गहणा जडाव रा पहरण मारूं, दासी रे हाथ
 पहंचावे ॥ रा० ॥ १५ ॥ दासी राजा र हुकुम
 छाने, वस्तु लेई देवे गणी ने जायो । मणर
 राजा चोज बनायो, निगरी खबर न कायो ॥ रा० ॥
 १६ ॥ मणरथ्या मन मांदि जाण्यो, धणी चाल्यो

सुनाई । जुगवाहु तो मन मे न जाण्यो, मारेलो
मन भाई ॥ रा० ॥ ३१ ॥ जुगवाहु ने आयो
जाणी ने, डर उपनो राजा रे । मणरथ राजा
करे विमासण उमराव छै डण रे सारे ॥ रा० ॥
३२ ॥ जुगवाहु ने राणी कहे छै, दगो करेलो
वारो भाई । साथ समान छै डणरे सारे, तो ह
पहेली मारुं जाई ॥ रा० ॥ ३३ ॥ भाई मारण
राजा रात रो चाल्यो, चढ़ियो एक सखाई । दोढ़ी-
दार चाकर पालतां गयो धकाय ने माई ॥ रा० ॥
३४ ॥ मैणरह्या तो मनरी दाखवी, जितरे मनरथ
आयो । राणी कहे सावधान ह्रवो, मारे लो
याने भायो ॥ रा० ॥ ३५ ॥ मैणरह्या तो न्यारी
हुई, राजा नेडो आयो । जुगवाहु तो न्यारो सूतो,
मणरथ घावज वायो ॥ रा० ॥ ३६ ॥ भाई मार
राजा पाछो बलियो, ह्रयो घोड़े असवारो । सरप
पूछड़ी खूर हेठे चींथी, खाधो छै तिण वारो ॥ रा०
॥ ३७ ॥ मणरथ राजा हेठे पडियो, मरने गयो
नरक तत्कालो । खबर नही कोई राज सभा मे,

पंच परसंछी देव को, भजनपुर पहिचान ।
कर्म अरि भाजे सची, होवे परम कल्याण ॥६॥
श्रीजिन युगपद कमल में, मुक्त मन भमर वसाय ।
कव उगे वो दिनकर, श्रीमुख दर्शन पाय ॥ ७ ॥

नवकार मंत्र १०८ गुण सहित ।

॥ रामो अरिहंताणं ॥

नमस्कार थावो अरिहंत भगवन्तने

ते अरिहन्त भगवन्त केहवा छै १२ वारे गुणे
करी सहित छै ते कहै छै—अनन्तो जान १ अनन्तो
दर्शण २ अनन्तो बल ३ अनन्तो सुख ४ देव
ध्वनि ५ भामण्डल ६ फटिक मिहामण ७ आशोक
वृक्ष ८ पुष्प वृष्टि ९ देव दुन्दुभी १० चमरबीज
११ छत्र धारे १२

॥ रामो सिद्धाणं ॥

नमस्कार थावो सिद्ध भगवन्तने ।

ते सिद्ध भगवन्त केहवा छै आठ गुणे करी
सहित छै ते कहै छै—केवल जान १ केवल दर्शण २

रामज्यो, जावजीव पस्तारो ॥ रा० ॥ ४५ ॥ मोरा
 प्रीतमजी ये राग हेष दोई, बभ कर्मा रा जाणो ।
 कलह अभगात्यान पैशुन्य चाही, पर परिवाद
 पचसत्ताणो ॥ रा० ॥ ४६ ॥ मोरा प्रीतमजी
 रति अरति इम जाणो, माया मोसो नहीं भलो ।
 पाप अठारै त्रिविध योमराजं मित्या दरशण
 सलो ॥ रा० ॥ ४७ ॥ मोरा प्रीतमजी मरण
 तणो भय न आणो धर्म साचो करि जाणो ।
 परभव में ते साधे चालसी, गांठे बांध्यो नाणो ॥
 रा० ॥ ४८ ॥ मोरा प्रीतमजी धे मोह धकी मन
 घालो मोह मे जीव मती घालो । करो आलो-
 यणा कारज सरे उर्ध्व, मन राखो कोई सालो ॥
 रा० ॥ ४९ ॥ मोरा प्रीतमजी दश दृष्टान्तै,
 मनुष्य जमारो दोहेलो । इण भव मे जो पुन्य
 करे तो, परभव सुख सोहेलो ॥ रा० ॥ ५० ॥
 मोरा प्रीतमजी ज्ञाने विचारो, सुपनारी माया
 जाणो । डाभ अणी जल बिन्दु जिम जाणो,
 मन मे समता आणो ॥ रा० ॥ ५१ ॥ मोरा

प्रीतमजी थें दोष कस्मां गे जाणो, बीजा ने दोष
 न दीजे । ऋण बैर तो कोई न छोडे, बांझा ने
 भुगतीजे ॥ ग० ॥ ५० ॥ मोरा प्रीतमजी किण
 रा मान पिता, कुण कुटुम्ब कुण भाई । वर गी
 तो साहिव नहीं स्त्री व्याथ मरथ मगाई ॥ ग०
 ॥ ग० ॥ ५३ ॥ मोरा प्रीतमजी नहीं काय
 आपणी साची धर्म मगाई । शत्रु मित्र ने
 मरीवा जाणो, अवसर जावे डाई ॥ ग० ॥ ५४ ॥
 मोरा प्रीतमजी थारें मरदहणा शुद्ध छै, चंविहार
 अण्डाण दियो । मरणो महु ने एक दिहाई
 मंडो राखणो दीयो ॥ ग० ॥ ५५ ॥ जुगबार्
 तो मयागे मरथो, साहाज दियो छै गणी ।
 कान्हे मारें कान्ह करी ने, जाय उपनो विमानी ॥
 ग० ॥ ५६ ॥ मंगरत्ना छाती काठी कान्हे,
 काज धणी नो क्रियो । पग मित्र ने पार उतारें,
 धन जीवित जिण गे जियो ॥ ग० ॥ ५७ ॥ मोर
 बडो होय काम बिगाडे, मरण चिरिया नरक में
 पावे । मगा नहीं ने पग बैरी, मंस लेतां

री, गजबोरा नमनार्थ । सुदि माहिनी उभी
 मैली न तोर नही रण माहि ॥ रा० ॥ ५३ ॥
 बिषम उजाह में आर पेटो नो सुन नही तिल
 रतो । मेरगगा नो हु न करती बेटी, लड़क पयो
 नै नवी ॥ रा० ॥ ५४ ॥ करे रानी ने करे विलाप,
 हु न भर जाने काटे मेरगगा नो हु न प्रभु
 जाणे, बेटी नै नट माटे ॥ रा० ॥ ५५ ॥ मजोग
 रूपगो रोहो हुनो विजोगे निग बाली । नाथ
 बिहगो हु ननो करतो आणी रण मे गली ॥ रा०
 ५६ ॥ देखो लगाई इन संसार में बिचहतां
 नही वारी । इन जागो ने सनसुन सेवो, लाहो
 लेख्यो लागे रा० ॥ ५७ ॥ निग अवस्तर मे
 देवता इन जाग्यो, हु न करे नै राणी । वैज्जिय
 रूप कियो राथो रो रमत माहो पाणी ॥ रा० ॥
 ५८ ॥ हु न विहाग्य विनम्बज कियो सुंड
 ल उजाले पाणी हु न छोडी ने राथी दीठो,
 रमत देखे राणी ५९ ॥ जिम जिम रमत देखे
 राणी, अवरज रमत नारी । धने अंकुरो

संजोगे, आवे छै नर नारी ॥ ग० ॥ ८० ॥ देवता
 छै कोई पर उपकारी, गणी ने मुंड मूं भाले ।
 जितरे नेडा आय निकलिया, लेके विमाण में भेले
 ॥ ग० ॥ ८१ ॥ विद्याधर तो गजी हुवो ह्य
 घणो डण नारी । तुरन्त विमाण में ले पायो
 बलियो, मुख बिलसा संसारी ॥ ग० ॥ ८२ ॥
 मंणरह्या तो मन में जाण्यो, तुरन्त बल्यो छै पायो ।
 कुण जाणे कुण देश ले जावे, ओ तो नहीं
 दीसे छै आछो ॥ ग० ॥ ८३ ॥ विद्याधर
 ने मंणरह्या प्रछे, जाना किण दिश भाई । अवे
 तो थे पाछा बलिया, कांई दिल में आई ॥ ग० ॥
 ८४ ॥ भगवन्त ने तो दग्गण जानां, तो मरीची
 मिली नारी । हम जाणी ने पाछो बलियो मुख
 बिलसा संसारी ॥ ग० ॥ ८५ ॥ मंणरह्या मीठे
 बचने टाखवे, भगवन्त दग्गण जानां । माग
 में थाने जंज मिली छे, नफो घणो दग्गण करना
 ॥ ग० ॥ ८६ ॥ तीर्थहर नो दग्गण करनां
 प्रसन्न होमी नारी काया । विद्याधर तो पायो

ग० ॥ ६४ ॥ परपदा देखने हमवा लागी, देव
 दीसे छै गहलो । स्त्री ने तो बन्दना कीयी, जिग
 रो प्रभु उत्तर देलो ॥ ग० ॥ ६५ ॥ जुगवाट
 ढणगे नामज हुनो, मणरथा ढणगी नारो । धर्म
 तणो ढण ने साहज दीनो हुयो सुर अवतारो ॥
 ग० ॥ ६६ ॥ मणरथा रे कारण ढण ने मणर
 भाई माव्यो । दे शरणा ने संम करव्यो ढण ने
 मणरथा नाव्यो ॥ ग० ॥ ६७ ॥ मैनरथा तो
 मन में जाण्यो, धनी दीसे छै म्हागे । इन
 अवसर में समय आवे, पीछे विद्यावर नों नरी
 मारो ॥ ग० ॥ ६८ ॥ भरी परपदा में मणरथा
 उठी, बोल्यो छै करजोड़ी । आज्ञा दो तो घाली
 संयम लेऊ, दालं भव तणी ग्वांड़ी ॥ ग० ॥ ६९ ॥
 देव कहे बाने आज्ञा म्हारी ल्यो ये समय नरी ।
 जुगवाट तो उखण हुयो, मनरथा ने नारी ॥ ग०
 ॥ ७० ॥ मोने तो विद्यावर लायो, परब
 बान प्रकाशी । कहे विद्यावर कथो देवता गदं
 विद्यावर नारी ॥ ग० ॥ ७१ ॥ मणरथा ने

आत्मिक स्वत्व ३ क्षायक ममकित ४ अटल अव-
गातगा ५ अमूर्तिभाव ६ अशुक्लघु भाव ७ अन्त-
राय रहित ८

॥ रामो अय्यरियारं ॥

नमस्कार थावो आचार्य महाराजने ।

ते आचार्य महाराज केहवा छै ३६ षट्त्रिंश
गुणे करी भरित छै ते कहै छै—आरजदेश ना उपना
१ आरज कुल ना उपना २ जानिवंत ३ रूपवंत ४
धिर संघयण ५ धीरजवंत ६ आलोचना दूसरा
पासे कहे नही ७ पोतेरा गुण पोते वर्णन न करे ८
कपटी न होवे ९ शब्दादिक पांच इन्द्री जीते १०
राग द्वेष रहित होवे ११ देश ना जाण होवे १२
काल ना जाण होवे १३ तिक्षण बुद्धि होवे १४
घणा देशांरी भाषा जाणे १५ पांच आचार सहित
१६ सूत्रांरा जाण होवे १७ अर्थरा जाण होवे १८
सूत्र अर्थ दोनरा जाण होवे १९ कपट करी पूछै
तो छलावै नही २० हेतुना जाण होवे २१ कारणरा

राज बलवान ने मारवा राजा से मर्याद न करने मारो
 ग० । ३ । डोम राजा से मारवा हुबो,
 मर्याद हुने मारवा मारवा को निकल नाछो
 बिना से मरवा न करे । ग० । ४ । मरवा
 से को कारण कियो राज जुगबलान ने दियो
 कियो ने दोष न डोले मारो करन आग कियो ।
 ग० । ५ । जुगबलान को राज करे छै, बरने छै
 औधो आगे मार मर्याद न से थोडो आवे, पिन
 ने हुत बरने न वा गो । ग० । ६ । ननी कुमार
 को मोरो हुबो बिरत मर्याद राजा गो । ननी कुमार
 ने राज बैसाछो हुत बिरले नतारो । ग० ॥
 १०० ॥ जुगबाहु को देवता हुबो, मरवा सयन
 मारे । जुगबलान ने ननी भाई दोनू राज रुडवाले
 ॥ ग० । १०१ ॥ आठ करन छै मर्या जोरावर,
 जोवा ने कोडा मारे । च्याग ने को न्याग कोना,
 करन खेल दिखाले । ग० । १०२ । दोनू
 राजा राज भोगबन्ता अटवो पडो ई सीनाडे ।
 भूनि आगो राखन साह, करे राजवरी ने ॥

ग० ॥ १२३ ॥ जुगवल्लभ तो मन में जाण्यो,
 आयलड़ दिसे कटारो । देखोने म्हारी धरती लेसी,
 राजविया अहङ्कारो ॥ ग० ॥ १२४ ॥ जुगवल्लभ
 तो फौजां ले चढ़ियो, कांकड़ सीमे जावे । नमी राजा
 मन में कोप करी ने, मन में मगज न मावे ॥ ग०
 ॥ १२५ ॥ नमीराय तो करी सजाई, बोले छे
 बांकी बाणी । मरम मोसो बोले माना रो, चढ़ियो
 छे डम जाणी ॥ ग० ॥ १२६ ॥ निण अवसर
 में मणरत्नाजी, मन में डमड़ी आणी । अह जान छे
 दोनूं म्हाग, नही हठे पुन्य प्राणी ॥ ग० ॥ १२७ ॥
 वणा जीव नी वातज होसी, मरसी वणा अजाणी ।
 घामृ वणे जो उपगार कीजे, मणरत्ना मन आणी
 ॥ ग० ॥ १२८ ॥ कर बंदना गुहणी ने पूछे,
 आप कटो तो इ जाऊं । दोनूं राजा रे गड़ मंत्री
 छे, इ जटि ने समझाऊं ॥ ग० ॥ १२९ ॥ मांछो
 माछि तो फोट न हटसी अह जान छे म्हाग ।
 वणा जीव नी वातज होसी, परिणाम एरु दया
 ग० ॥ १३० ॥ देखो पुन्याई राजवियां नी, गुहणी

नो बिग नो धरने धरन आन नो सेनो नाने
 पोहे पगोपगन रगोजे ॥ रा० ॥ ३२ कर
 भवना ने मगरना जानो ने मतिन नो सागो ।
 हुगबलन नं नो सेन पिनाय, पहेलो उण नं
 धानो ॥ रा० ॥ ३३ क'कर सोना और
 ठिकाने कौजा पडो नै डोई, हुगबलन नो
 लशकर पगो, जानो मेणरदा सोई ॥ रा० ॥ ३३॥
 मेणरदा लनो नगन शरीरो आन नीने पर नारी ।
 राज कचेडो ल नेडो आई निजर पडी राजा री ॥
 रा० ॥ ३४ हुगबलन नो उड्यो शताव ल,
 बिनय कलो छै भारो लान आठ पग सामो
 जार्द ने, मरासनिदा केन पधारी ॥ रा० ॥ ३४ ॥
 मेणरदा नो कहे राजा ने कारण पडियो नोन्यु भारी ।
 कौज बंशो नो ये भेलो कोनो, में निग ल कारण
 बिचारो ॥ रा० ॥ ३५ आपलड म्हागी धरती
 लेतो नोच चण्डाल नर जायो । साथ सामान
 रग भेलो कोनो, निग काग्य चडी आयो ॥ रा० ॥
 ३६ ॥ बेडा छो धे राजबिया ग बोलो बोले

विचारो । और थां ऊपर कौण चढ़ आमी, गो
 भाई छै थारो ॥ रा० ॥ १३८ ॥ यान सुणी ने
 राजा लाज्यो, नीचो मुख करी जोवे । मागी
 बचन कथ्यो माता ने, राजा ने नहीं मोवे ॥ रा० ॥
 ॥ १३९ ॥ जुगबल्लभ तो कहे माता ने, बेलीगे
 संयम भारो । मौत आपदा किण विध हुई, शत
 कठो विस्तारो ॥ रा० ॥ १४० ॥ मणरथ राजा
 थांग पिता ने माख्यो, हं रात ने निकली आई ।
 जनम नमी रो वन में हूवो हं मेल आई वन में
 भाई ॥ रा० ॥ १४१ ॥ तीर नदी ने बैठी हुली,
 विमाण विद्याधर नों आयो । देव उचाय ने
 मोने मांहे मेली हं गई समोसरण मांयो ॥ रा०
 ॥ १४२ ॥ पिता तो थारो देवता हूवो, दशरथ
 प्रभु के आयो । आज्ञा मांगी ने में तो संयम
 लीयो, भेट्या प्रभु रा पायो ॥ रा० ॥ १४३ ॥
 दोनं राजा रे म वैरज सुणियो, लड़मी मांयो
 भाई । वणा आठमी मरण पामसी, निग कारन
 इ भाई ॥ रा० ॥ १४४ ॥ जुगबल्लभ राजा वन

रुई छै राजी ॥ ग० ॥ १३३ ॥ उत्तीम द्वाज
 आरज्यां मांहे, गुरणी चन्दनवाला । निग रे
 पाटे पदवी पाई, शिष्यणी गनना गी माला ॥ ग०
 ॥ १३७ ॥ चेड़ानी जे माने पुत्री, भगवन्त आ
 यवाणी । चेलणा मृगावती नीजी प्रभावती, चौरी
 शिवादे गणी ॥ ग० ॥ १३८ ॥ पांचवीं पदना-
 वती छटी मुलमा, जेष्टा मानमी जाणी । मष्ट
 पद्यां मती शीलज गल्यो, दमयन्ती नल गनी
 ॥ ग० ॥ १३९ ॥ अञ्जना मती छै महिन्द राज
 नी बेटी, बिबो मथ्यो बन मांहीं । मंरुट पद्या
 मती शीलज गल्यो, यश कीर्त्तन जग मांश ।
 ग० ॥ १४० ॥ मती टौपटी तो आगे रुई, दल
 लीधो जग मांई । मोटा राजा रो विगेव निशो
 मंगरथा गी अचिकई ॥ ग० ॥ १४१ ॥ मंयन
 छेने मुकुन कीज्यो, मनुष्य जनारो मन मोज्यो ।
 जिन गामन मे जिन मंगरथा कीनी, जिन नर
 कोटे कीज्यो ॥ ग० ॥ १४२ ॥ मंगरथा तो ईसो
 छेने नन गद मंयन पाले । जिन माग ने नन

કીર્ણાઓ મનદૂષણ સહ ટાલે ॥ રાં ॥ ૧૭૩ ॥
 મળરહ્યા તો ફુલ નાગક યુદ્ધ લડ્યા આપ રી રાખી ।
 વિન્નો સળો પિણ ગીલ ન માડ્યો મગવન્ત
 તેરના સાચી ॥ રાં ॥ ૧૭૪ ॥ જુગમાટ
 ને મેળરહ્યા સતી, જુગવદ્ધન નમી માઈ ।
 ચ્વારાં રો તો કારજ સીધો, મળરથ દુર્ગતિ
 માંહિ ॥ રાં ॥ ૧૭૫ ॥ વ્યસન સાતમો
 પરનારી નો, જીવ ઘાત થર દાણી । મળરથ રાજા
 નરક પહુન્તો, કુચશ વાખને પ્રાણી ॥ રાં ॥ ૧૭૬ ॥
 એક કુવ્યસન મળરથ સેવ્યો, ઘટુ મલિયો સસારો ।
 સાતું કુવ્યસન જે સેવે પ્રાણી, તિણ ને દુઃખ
 અપારો ॥ રાં ॥ ૧૭૭ ॥ વિવશ રસ તે વિષ
 સમ જાણી ને, સતગુરુ સેવા કીજે । મળરથ
 રાજા ની ઘાત સુણી ને, પરનારી સગ ન કીજે ॥
 ॥ રાં ॥ ૧૭૮ ॥ દાન શીલ તથ સંયમ પાલો,
 દોષણ સગલા ટાલો । દયા ધર્મ રી સમતા આણી,
 શુદ્ધ આચાર તે પાલો ॥ રાં ॥ ૧૭૯ ॥ ધર્મ
 દયા મે કેવલી માલ્યો, તે રાચો કર જાણો । જે

जाणी लेवे भव प्राणी, ते पाने निग्वागो ग०
 ॥ १२० ॥ जय नय नयन पालो रे भाई, विषय
 विकार गमाई । जीव जिके तो शिव तुम गवे,
 श्रीवीर पवन मन लाई ॥ १२१ ॥

अथ श्रीनिम्बफार नौ छन्द ।

तुम कागज भवियण मनगे नित नवरुण ।
 जिन शानन आगन, चौदह कुम्बनो नार ॥ १ ॥
 ७ मंत्रनी नदिना कहिनां न लहुं पार । तुम्ह
 जिन चिन्तन वंछित कल दानार ॥ २ ॥ तु
 शानव मानव मेवा करै कर जोड़ । सुवि नन्द
 दिखै नाई भवियण कोइ ॥ ३ ॥ तुम्ह
 चित्तमे अनिदय जान अनन्त । पद पहिले ननिरे
 अरि नरुन अगिन्न ॥ ४ ॥ जे पन्द्रह मेरे निद्र
 पना नगवन्त पदनी गति पडोता अष्ट हन
 करि जन्त ॥ ५ ॥ कल अमल स्वामी, पद्मानन्द
 निन्दक गुरु दत्त, बीजे पद बलि पद ।

जाण होवे २२ दृष्टान्त ना जाण होवे २३ न्यायरा
जाण होवे २४ मीग्वने समर्थ २५ प्रायश्चित्तना
जाण होवे २६ थिर परिवार २७ आदेज वचन बोले
२८ परीपह जीते २९ समय परममय ना जाण ३०
गंभीर होवे ३१ तेजवंत होवे ३२ पण्डित विचक्षण
होवे ३३ सोम चन्द्रमा जिसा ३४ शूरवीर होवे ३५
बहु गुणी होवे ३६ ।

पुनः

५ पांच इन्द्री जीते च्यार कपाय टाले, नव-
पाङ्ग सहित ब्रह्मचर्य पाले ५ पंच महाव्रत पाले ५
पंच आचार पाले ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ तप
४ वीर्य ५, ५ पंच सुमति पाले ढर्या १ भाषा २
ऐषणा ३ अयाण भंडमन नपेवणा ४ उचारपासवण
५, ३ तीन गुप्ति मन १ वचन २ काय गुप्ति ३ ।

इति पट्त्रीस गुण सम्पूर्ण ।

॥ राम्णे उक्त्वाभ्यासं ॥

नमस्कार थावो उपाध्याय महाराजने ।

ते उपाध्याय महाराज केहवा छै २५ पचवीस

॥ ૬ ॥ ગન્ધમાલ પુરુષાર સગર જાગિતર જોમ ।
 ફરે સારણ વારણ ગુણ નીતીસે ધોમ ॥ ૭ ॥ ધ્રુવ
 જાળ શિરોમણિ, સાગર જિમ ગરમીર । તીર્થ પદ
 નમિયે, આચારજ ગુણધીર ॥ ૮ ॥ ધ્રુવધર ગુણ
 આગર, સુત્ર મળાવે સાર । તપ વિધિ સંયોગે,
 ભાવે અર્થે વિચાર ॥ ૯ ॥ સુનિવર ગુણ યુક્તા,
 કરિયે તે ઉવડભાગ । પદ ચૌથે નમિયે, અહો
 નિશિ તેહના પાગ ॥ ૧૦ ॥ પચાસવ ટાલે, પાલૈ
 પશ્ચાચાર ॥ તપસી ગુણધારી, વારે વિષય વિકાર ॥
 ॥ ૧૧ ॥ ત્રસ વાવર પીયર, લોક માહિ જે સાધ ।
 ત્રિવિધે તે પ્રણમું, પરમારથ જિણે લાધ ॥ ૧૨ ॥
 અરિ કરિ હરિ સાયણિ, હાયણિ ભૂત બૈતાલ । સવિ
 પાપ પનાસે, ઘાથે મંગલ માલ ॥ ૧૩ ॥ દુણ સમઘાં
 સંકટ દૂર ટલે તત્કાલ । ડમ જંવે જિન પ્રભ, સુરિ
 શિષ્ય રસાલ ॥ ૧૪ ॥ હતિ ॥

। अथ पुण्यप्रभाविक भावक श्रीनालाडी रजति सिद्धि

श्रीगुरुदेवसुखसिद्धिस्तुति ॥

॥ दोहा ॥

निद्र श्री परमानना, अग्निंजन अग्निं ।
दृष्ट देव वन्दुं मदा, भय भंजन भगवन् ॥ १ ॥
अग्निंन निद्र सुमन्तं मदा, आचारज उवज्ज्मय ।
मायु मकल के चरणक, वन्दुं गीडा नमाय ॥ २ ॥
गामन नायक मनगिये, भगवंत वीर जिज्ज्म ।
अलिय वियन दूर दूर, आपे परमानन्द ॥ ३ ॥
अंगुटे अलून वसे, ललिय नणा भग्ना ।
श्री गुरु गौतम मनगिये, वंछित फल दाना ॥ ४ ॥
श्री गुरु देव प्रसाद में, होत मनोग्थ निद्र ।
जुं वन वरमन देलि नर, फल फलन की वृद्ध ॥ ५ ॥
नर परमेश्वर देव को, भजनपर पवित्र ।
कर्म अग्नि जाले मारी, होवे परम कल्याण ॥ ६ ॥

श्री गुरु गुरु गुरु गुरु, गुरु गुरु गुरु गुरु ।
 इह जने जो । नार । योग्य । नान पाप । ॥
 प्रणमी पद पद नमी । अग्नि न । अग्नि ।
 कथन कर अर जीवन, । । न । न । ॥ ८ ॥
 आरम विपद रपाय रपा । नमिया पाप अनन्त ।
 तन नाराजी योनि में, अर नारी नगवन्त ॥ ९ ॥
 देव गुरु भर्म पृत्र में नवतत्वादि ह जोग ।
 अभिजाओन जे कला, मिच्छामि दुव हए मोय ॥ १० ॥
 मोह अज्ञान मिध्यात्व को, मरियो रोग अधाग ।
 वैशराज गुरु शरण भी, आपभ ज्ञान वैराग ॥ ११ ॥
 जे मैं जीव विराभिगा, सेव्या पाप अठार ।
 प्रभु तुमारो साखसे, बारम्बार धिक्कार ॥ १२ ॥
 तुरा तुरा सबको कह, तुरा न दीसे कोय ॥
 जो पद सोध आवणो, तो मोस् तुरा न कोय ॥ १३ ॥
 कहेवा मे आवे नहीं, अवगुण भखो अनन्त ।
 लिखवामैं कथोकर लिखूं, जाणें श्रीभगवन्त ॥ १४ ॥
 करुणा निधि कृपा करी, कठिन कर्म मोय छेद ।
 मोह अज्ञान मिध्यात्व को, करजो ग्रन्थी भेद ॥ १५ ॥

राग द्वेष दो गीज से कर्म बंधकी व्याध ।
 ज्ञानात्म बंधाग्य से, पावे मुक्ति समाध ॥ १७ ॥
 अवसर वीर्यो जात है, अपने वश कछु होत ।
 पुन्य छतां पुन्य तोत है, दीपक दीपक ज्योत ॥ १७ ॥
 कल्पवृक्ष चिन्तामणि, इन भव मे सुखकार ।
 ज्ञान शुद्धि इनसे अधिक, भव दुःख मंजनहार ॥ १८ ॥
 राई मात्र घट बंध नहीं, देख्यां केवल ज्ञान ।
 यह निश्चय कर जानके तजिए परधम ध्यान ॥ १९ ॥
 दृजाकुं भी न चितिये, कर्मबध बहु दोष ।
 प्रीजा चौथा ध्याय के करिये मन सन्तोष ॥ २० ॥
 गई वस्तु मोचे नहीं आगम बछा मांह ।
 वर्त्तमान वनें मटा, सो ज्ञानी जग मांह ॥ २१ ॥
 अहो समदृष्टी जीवडा, करे कुटुम्ब प्रतिपाल ।
 अंतर्गत न्यारा रहे ज्युं धाय तिलावे घाल ॥ २२ ॥
 सुख दुःख दोनूं बसत है, ज्ञानी के घट मांय ।
 गिरि सर दीखे मुकुर मे, भार बोजवो नांय ॥ २३ ॥
 जो जो पुद्गल फरसना, निश्चे फरसे सोय ।
 ममता समता भाव से, करम बंध क्षय होय ॥ २४ ॥

दांया मोदी भोगवे, कर्म शुभाशुभ भाव ।
 फल निर्जग होत है, यद्द समाधि चित चाव ॥२१॥
 यांया चित सुगते नदी, चित भुगव्यां न छोडाय ।
 आसक्ति करता भोगता, आसदी दूर कराव ॥२२॥
 पय कुपय यद्द यय करी, गेग हानि वृद्धि पाव ।
 यु पुण्य पार क्रिया करी सुख दु ख जगमें पाव ॥२३॥
 सुख दिया, सुख होत है दु, ख दियां दु ख होय ।
 आर हने नदीं अवसुं, तो आपने हणे न कोय ॥२४॥
 जान गरीरी गुन वचन नग्न वचन निर्दोष ।
 दनहु मर्जी न छोटि, अद्वा शील संताप ॥२५॥
 मन मन छोडो हा नग लक्ष्मी चांगुणी होय ।
 सुख दु ख रचा कर्मकी, दाली दले न कोय ॥२६॥
 हा मन गन मन रत्न मन कवन ज्ञान सुखान ।
 मन छोडो मनोप मन मय मन धूल समान ॥२७॥
 दीप रत्न पोरो रत्न मय रत्नां की ज्ञान ।
 मन पादरी लक्ष्मी रती शीलमें आन ॥ २८ ॥
 हा मन र आनंद छोले शील आन ।
 हा र रती रती न न जावे मन भाग ॥२९॥

विनुं डियां छुटे नहीं. यह निश्चय कर मन ।
 हंस हंस के क्युं खरबिये. दाम विगना जन । ३०
 जीव जिंसा करनां धकां. लागे मिट्ट उठान ।
 जानी हम जागे नहीं विष मिलियो पकवान । ३१
 काम भोग प्याग लगे फल मिनाक ममन ।
 मीठी खाज खुजावतां. पीछे दुःख की खान ।
 तब जब मंजम डोहियो औषध कड़वी जन ।
 सुख कारण पीछे घणा. निश्चय पट निगवान । ३२
 दाम अगी जल बिदुओ सुख विषयन को नद
 नवमानर दुःख जल भयो यह संसार स्वभाव । ३३
 चढ़ उत्तम जर्मने पवन शिखर नहीं वो रुत ।
 निमसुख अन्तर दुःख वसे मोसुख भीदु नरन । ३४
 जय लग निमके दण्डका,

गुणे कगे सहित है ते कहै है—१४ चवदे पुरब
११ जगारे अग भणे भणावे ।

पुन.

११ जगारे अग १२ बारे उपांग भणे भणावे ।

॥ रामो लोए सच्च साहूख ॥

नमस्कार धावो लोकने दिपे सर्व साधु मुनिराजोने

ते साधु मुनिराज केहवा है नमस्वीस गुणे
करी सहित है ते कहै है—५ पच महाव्रत पाले ५

इन्दी जीने ४ चवार कषाय टाले भाव संचय १५

करण सचय १६ जोग सचय १७ जमावंत १८

वैराग्यवत १९ मन समा धारणिया २० वचन

समा धारणिया २१ काय समाधारणिया २२ नाण

संपना २३ दर्शन संपना २४ चारित्र संपना २५

वेदनी आयां समो अहियासे २६ मरण आयां

समो अहियासे २७

२४ तीर्थकरों के नाम ।

१ पहला श्री कृष्णभनाथजी ।

२ दुजा श्री अजितनाथ स्वामीजी ।

सकल पदार्थों की अविनय भक्ति आद्या
तनादिक करी करार्ह अनुमोदी मन वचन कायाण
करी द्रव्य थी, क्षेत्र थी काल थी भाव थी,
सम्पक प्रकारे विनय भक्ति आराधना पालना
परमना सेवनादिक यथायोग्य अनुक्रमे नहीं
करी नहीं करायी नहीं अनुमोदी, तें मुझे धिक्कार
धिक्कार, बारम्बार मिच्छामि दुक्कडं ॥ मेरी मूल
चृक अवगुण अपराध सब माफ करो, वक्षो मुझे
मैं खभावुं मन वचन कायाये करी ॥

॥ दोहा ॥

मैं अपराधी गुरु देवको । तीन भवन को चोर ॥
ठगूं विराना माल मैं । हा हा कर्म कठोर ॥ १ ॥
कामी कपटी लालची । अपछंदा अविनीत ॥
अविवेकी क्रोधी कठिन । महापापी रणजीत ॥ २ ॥
जे मैं जीव विराधिया । सेव्या पाप अठार ॥
नाथ तुमारी साख सैं । बारम्बार धिक्कार ॥ ३ ॥

मैंने लोकायपणे लही काय की विराधना करी
 पृथ्वीकाय अप्पकाय तेउकाय, वाउकाय, वनस्पति-
 काय, वेडन्डिय, तेडन्डिय चौगिन्डिय, पंचेन्द्रिय
 सत्ती असत्ती गर्जेज चौडह प्रकारे समुच्छिम प्रमुख,
 त्रस थावर जीवां की विराधना करी, कगवी,
 अनुमोदी मन वचन कायाये करी, उठतां बेमतां,
 सुतां, हालतां, चालतां शस्त्र बम्ब्र मरुतानाडिक
 उपकरणे करी उठावतां नरतां, लेतां देतां, वर्ततां
 वर्तावतां, अप्पडिलेहणा सम्बन्धी अप्रमादूर्जना,
 सम्बन्धी, अविकी ओछी, विपरीत पुत्रना, संवंगी
 और आहार विहागडिक नाना प्रकार का पडि-
 लेहणा वणा वणा कर्तव्योमा सम्पत्ता अम-
 म्पत्ता अने निर्गोद आश्रमी अनन्ता जीवांहा,
 जितना प्राण लह्या ये सब जीवो का, मैं पापी
 अपराधी ॥ निश्चैही बडला हा देणहार हू,
 सर्व जीव मुक्त प्रते माफ़ करे मेरी मुल ब्रह्म
 अवगुण अपराध सब माफ़ करे देवमी गडमी,
 चौमामी अने मायन्मरिह सम्बन्धी पारम्भार

मित्र, मित्र दुष्ट, वारंवार मे ममा ॥ ३५ ॥
गमजो ॥

गाममि सन्ने जावा, न ॥ जावा गम, म ॥
भित्ति मे सन्ने नगण ॥ ३६ ॥ न कण ॥ २ ॥

बो दिन न ॥ ३७ ॥ जा दिन म न ॥
हाय हा वर बदला म निव ॥ गा ॥ भव चागमी
लान जीवा योनि ॥ अन्धटान देऊगा, सो दिन
मेरा परम कल्याण का होईगा ॥

॥ दोहा ॥

सुग्न दिया सुग्न होत है, दुःख दिया दुःख होय ॥
आप हण नहीं अवश, आपक हण नहीं कोय ॥ १ ॥

इति दृजा पाप मृषावाड सो भूठ बोल्या ॥
क्रोधवश, मानवश, मायावश, लोभवश, हास्ये
करो, भगवश, इत्यादिक मृषा वचन बोल्या ॥ २ ॥
निद्रा विरुवा करी, कर्कश कठोर मर्म ही भाषा
बोली, इत्यादिक अनेक प्रकारे मन वचन कायाये

करी मृपावाद झूठ बोल्या, बोलाया, बोलाने
अनुमोद्या सो मन वचन कायाण करी मिच्छाभि दुक्कड़ं

॥ दोहर ॥

धापण मोमा मै किया, करि विश्वासज गान ।

पर नारी धन चोरिया, प्रगट कथो नदी जान ॥१॥

ते मुझे धिक्कार धिक्कार, वाग्वाग् मिच्छाभि
दुक्कड़ं । वो दिन मेरा बन्य होवेगा, जिस दिन
सर्वथा प्रकारे मृपावाद का त्याग करूंगा, सो दिन
मेरा परम कल्याण कर होवेगा ॥ २ ॥ श्रीज्ञा
पात्र अदत्तादान है सो अणदीप्ती वस्तु चोरी
करीने लीयी, ते मोटकी चोरी, लौकिक विन्द,
अत्र चोरी घर सम्बन्धी नाना प्रकार का कर्तव्यो
ने उपयोग मयित तथा बिना उपयोगे अदत्तादान
चोरी करी रगड़ रगटाने अनुमोदी मन वचन
कायाणे करी, तथा मेरे सम्बन्धी जान दर्शन,
चागिअ अब नरही श्री नगरुन मुह दरोही जग,
आज रगड़े नर ने मुझे धिक्कार धिक्कार

बारबार निच्छामि ॥ ७ ॥ न मगं भव
 होवेना जिम दिन सर्वथा प्रकार अउत्ताटान का
 त्याग कलना हो ॥ ८ ॥ न मगं भव नववाण का
 होवेना ॥ ९ ॥ नाया सुख सेवन न विप्रे मन बचन
 अर साया का योग पदनाया नववाण सहित
 प्रसन्नता नहा गलना नववाण अमुद्रपणे प्रवृत्ति
 हुर, आप सेवना अतरा पास सेवना, सेवना
 प्रत्ये नवा जाण्या तो मन बचन कायाये करी
 सुखे भिक्कार भिक्कार बारबार निच्छामि दुक्कड ॥
 वो दिन पन्ना होवेना जिम दिन म नववाड सहित
 प्रसन्नता शोल रत आराधना सर्वथा प्रकारे
 काम विकारसे निवतना, तो दिन मेरा परम
 कल्याणका होवेना ॥ १० ॥ पाचमा परिग्रह तो
 सचित्त परिग्रह तो दास दासी दुपद चौपद
 तथा मणि पत्थर प्रहण अनेक प्रकार का हे अर
 अचित्त परिग्रह जो सोना रूपा वस्त्र आभरण
 प्रमुख अनेक वस्तु है, निणतो मनना मूर्च्छा आप
 णात करो । अत पर जाडेक नव प्रकारका धाम

- ३ तीजा श्री सम्भवनाथ स्वामीजी ।
- ४ चौथा श्री अभिनन्दननाथ स्वामीजी ।
- ५ पांचवां श्री सुमतिनाथ स्वामीजी ।
- ६ छट्टा श्री पद्मप्रभु स्वामीजी ।
- ७ सातवां श्री सुपारमनाथ स्वामीजी ।
- ८ आठवां श्री चन्द्रप्रभ स्वामीजी ।
- ९ नवमां श्री सुविधनाथ स्वामीजी ।
- १० दशवां श्री शीतलनाथ स्वामीजी ।
- ११ इग्यारमां श्री श्रेयांसनाथ स्वामीजी ।
- १२ बारमां श्री वासुपूज्यनाथ स्वामीजी ।
- १३ तेरमां श्री विमलनाथ स्वामीजी ।
- १४ चौदमां श्री अनन्तनाथ स्वामीजी ।
- १५ पन्द्रमां श्री धर्मनाथ स्वामीजी ।
- १६ सोलमां श्री शान्तिनाथ स्वामीजी ।
- १७ सतरमां श्री कुंधुनाथ स्वामीजी ।
- १८ अठारमां श्री अरनाथ स्वामीजी ।
- १९ उगणीसमां श्री महिनाथ स्वामीजी ।
- २० बीसमां श्री मुनिसुव्रतनाथ स्वामीजी ।

णतों मन बचने अरु कायावे रुगी मेव्या, मेव-
 राया, अनुमोद्या अथे अनथे, वर्नअथे, कामवजे,
 मोहवजे, न्यवजे, परवजे, डीयावा, गट्या,
 एगोवा, परिमाणओवा पुत्तेवा जागरमाणेवा,
 इन भव मे पहेला मल्लवाना अमल्लवाना अनन्ता
 भवों मे भवप्रवण रुगना आज दिन सुधी, राग,
 द्वेष विषय कषात आरुन प्रमादादिक पादमलिक
 प्रपञ्च परगुण परजाप या विकल्प मल रुगी
 ज्ञान की विगयना रुगी उद्यम की विगयना रुगी,
 चाग्रि की विगयना रुगी पाग्रिचापाग्रि की
 तप की विगयना रुगी मुड अडा डीउ मन्ताप
 अमादिक निज मयल पा विगयना रुगी उपजम,
 विवेक, नवरा मरु, मरु, मरु, मरु, मरु, मरु,
 ध्यान मानादिक निज मयल पा विगयना रुगी
 डीउ नर मनुष्य की विगयना रुगी पादमलिक-
 कारी इन योगी अरु योगी अरु योगी मन बचन
 अरु काया रु रुगी नरु, नरु, नरु, नरु, नरु, नरु,
 नरी । लुगी आदरुदरु मयल प्रकाश विगयना उपजम

सति आगम्या नहीं, पाण्या नहीं परम्या
 नहीं, विधि उपयोग सति निराधार पणें यस्या,
 परन्तु आठर सन्सार भाव सति सति नहीं
 कस्या, जानसा चोदत, समकित ना पात, दारतवन
 का साठ कर्मठान का पन्द्रह सलेपणा का पांच, एवं
 नवाणु अतिचार साहे तथा १२४ अतिचार माहे
 तथा साधुजी का १२५ अतिचार माहे तथा ५२
 अनाचार की श्रद्धानादिक से विराधनादिक जो कोई
 अतिक्रम व्यतिक्रम, अतिचारादिक सेव्या, सेवराव्या,
 अनुमोद्या, जाणतां, अजाणतां सन वचन कायाये
 करी ते मुखे धिक्कार धिक्कार, दारभ्यार मिच्छामि
 दुक्कहं । मैंने जीव कूं अजीव सरध्या परुण्या,
 अजीव कूं जीव सरध्या परुण्या धर्म कूं अधर्म
 अरु अधर्म कूं धर्म सरध्या परुण्या तथा साधुजी
 को असाधु और असाधु को साधु सरध्या परुण्या,
 तथा उत्तम पुरुष साधु मुनिराज, महासतियांजी
 की सेवा भक्ति यथा विधि मानतादिक नहीं करी,
 नहीं करावी, नहीं अनुमोदी, तथा असाधुओं

सेवा भक्ति आदिक मानता पक्ष कन्या. मुक्ति का
 मार्ग में संसार का मार्ग. वाचन पक्षीम मिथ्यात्व
 मांदिता मिथ्यात्व संन्या संवाया, अनुमोया,
 मनं करी वचनं करी आयाये करी, पक्षीम कपाय
 मन्वन्धी, पक्षीम त्रिया मन्वन्धी नेत्रीम अगा-
 तना मन्वन्धी, ग्यान का उगगीठा टोप. बन्धना
 का वक्षीम टोप. सामायिक का वक्षीम टोप. अने
 पोमद का अटारद टोप मन्वन्धी, मन वचन
 कायाये करी जे काटे पार टोप लाना लनाया,
 अनुमोया न नुन रिहार रिहार वागव्या मित्रासि
 दुद्ध । मन्वा मादनीय कपय का वक्षीम
 ग्यानक का मन वचन अन मायाम मन्वा मन्वाया,
 अनुमोया । जीवनी सब बाढ़ आद प्रवन्न
 मन्वा का की विगारमदिह मन्वा वायद का
 लक्ष्मीम गुण अन वायद मन्वा की विगारमदिह
 मन वचन अन मन्वा का मन्वा वायदी
 अनुमोया । मन्वा नीन अनुम अन वायद मन्वा
 की, मन्वा की मन्वा करी अन नीन मन्वा मन्वा

का लक्षण ही होता है, जिसका नहीं। नहीं
 वहाँ जहाँ से आते हैं वहाँ से आते हैं। लोका
 गोप्य। नहीं मानना। अन्तर्गत आगना करी प्रव-
 र्त्तना, अन्तर्गत आगना करी नहीं अन्तर्गत आगना की
 निवेदन नहीं करी, अन्तर्गत आगना अन्तर्गत आगना की
 निवेदन करनेका नियम नहीं करना, कल्पना करी
 तथा व प्रकारे ज्ञानावलीय अन्तर्गत आगना, ऐसे ही
 व प्रकार का अन्तर्गत आगना अन्तर्गत आगना, यावत्
 अन्तर्गत आगना अन्तर्गत आगना अन्तर्गत आगना
 करी अन्तर्गत आगना अन्तर्गत आगना अन्तर्गत आगना, अनु-
 मोदी मन करी अन्तर्गत आगना अन्तर्गत आगना, ते अन्तर्गत
 अन्तर्गत आगना अन्तर्गत आगना अन्तर्गत आगना। एक
 एक अन्तर्गत आगना अन्तर्गत आगना अन्तर्गत आगना,
 अन्तर्गत आगना अन्तर्गत आगना अन्तर्गत आगना, मैं जो
 अन्तर्गत आगना अन्तर्गत आगना अन्तर्गत आगना
 नहीं अन्तर्गत आगना नहीं, अन्तर्गत आगना नहीं तथा अन्तर्गत आगना
 अन्तर्गत आगना करी, करी अन्तर्गत आगना अन्तर्गत आगना
 अन्तर्गत आगना करी ते अन्तर्गत आगना अन्तर्गत आगना





॥ दोहा ॥

श्रद्धा अशुद्ध प्रवृत्ति, करी परमना मोय ।
 जाण अजाण पक्षपानसे मिन्यासि दुष्टां मोय ॥ १ ॥
 यत्र अर्थ ज्ञानं नही अल्पबुद्धि अणजाण ।
 जिन नापित सब ज्ञान, अर्थ पाठ परमाण ॥ २ ॥
 देव गुरु धर्म पत्र कं नव नन्वादिक जोय ।
 अधिका ओछा जे कथा मिन्यासि दुष्टां मोय ॥ ३ ॥
 हं सगनेलियो हो रघो, नही ज्ञान रम भीज ।
 गुरु सेवा न करि सकं, किम सुख कारज मीक ॥ ४ ॥
 जाणो देखे जे सुणो देखे नवे मोय ।
 अपराधी उन सयन को, बडला देशं मोय ॥ ५ ॥
 गवन करं बुगचा रतन, दख भाव सब कोय ।
 लोकन में प्रगट करं, फट पाट मोय ॥ ६ ॥
 जैन धर्म शुद्ध पायको, वस्तु विषय कपाय ।
 गह अचमा हो रक्षा, जल में लागी लाय ॥ ७ ॥
 जितनी वस्तु जगत में, नीच नीच में नीच ।
 सब में में पापी बुरो, फस मोह के बीच ॥ ८ ॥

२१. ऋषीन्ममा श्री नमिनाथ स्वामीजी ।
 २२. न बोन्ममा श्री अग्निनेमनाथ स्वामीजी ।
 २३. नेमोन्ममा श्री पार्श्वनाथ स्वामीजी ।
 २४. नौमोन्ममा श्री वरेमान स्वामीजी ।

११ कदाहरों के नाम :

- | | |
|--------------|-----------------|
| १. इन्द्रभनि | ६. मण्डित |
| २. अग्निभनि | ७. मौर्यपुत्र |
| ३. वायुभनि | ८. अकम्पित |
| ४. वाक् | ९. अन्तर्भ्राता |
| ५. सुभनि | १०. मेतार्थ |

११ प्रभास

१२ सतियों के नाम :

- | | |
|--------------|-------------|
| १. ब्राह्मी | ६. कौशल्या |
| २. सुन्दरी | ७. सुगावती |
| ३. वन्दनबाला | ८. सुलता |
| ४. राजेनती | ९. सीता |
| ५. शोषदी | १०. सुभद्रा |

बुरो बुरा सच को कहे, भुग न दीसे कोय ।
जो घट सोभं आपणो तं सोय भुग न कोय ॥१४॥
कामी कपटी लालची, कठिन तंग को दाम ।
तुम पारस परमंगधी, सुवरन भाजुं स्वाम ॥१५॥

॥ श्लोक ॥

मैं जपहीन हूं तपहीन हूं प्रभु हीन संन्यस
समगतं । हे दयाल कृपाल करुणानिधि, आयो
तुम शरणागतं प्रभु आयो तुम शरणागत ॥१६॥

॥ दोहा ॥

नहिं विद्या नहि वचन बल, नहि धीरज गुण ज्ञान ।
तुलसीदास गरीब की, पत राखो भगवान ॥१७॥
विषय कषाय अनादि को, भरिया रोग अगाध ।
वैद्यराज गुरु शरण धी, पाऊं चित्त समाध ॥ १८॥
कहेवा मे आवे नही, अवगुण भखो अनन्त ।
लिखवा मे क्युं कर लिखूं, जाणे श्रीभगवन्त ॥१९॥

एक कनक अरु कानिनी, दो नेंदी नगर ।
उज्या था जिन भजनकं, विच में लिया नर ॥

॥ स्तुति ॥

मैं नदीपारी छांड के मंनार जग छाड़ी ज
विदार करूं, आगला कुछ थोप कीच के गेव
पीच रहूं, विषय लुप्त चार नर प्रभुता बरगी
है । कनक ककीगी पेंनी अनीगी की जान रह
काहेकु विज्ञार जिर रागरी उतारी है ॥ १० ॥

॥ देहि ॥

न्यागन कर मंदर करूं, विषय वनन जिन आशर ।
तुलसी ए लुक्त पतिन हूं, बार बार रिद्धर ॥ ११ ॥
गग उंय दो बीज है, रुने वंश लक्ष हैन ।
इकी कानिनी में ब-सो उंठ नरो प्रचेन ॥ १२ ॥
स्वन ब-सो गडरी विषे, लक्ष जियो नर माहि ।
निह विजय ने जियो नार बडे कहु माहि ॥ १३ ॥

बुरो बुरो सब को कहे, दुरो न दीसे कोय ।
जो घट सोभं आपणो, तो मोसं दुरो न कोय ॥१४॥
कामी कपटी लालची, कठिन लोह को दाम ।
तुम पारस परसंगधी, सुवरन धाशुं स्वाम ॥१५॥

॥ श्लोक ॥

मैं जपहीन हूं तपहीन हूं प्रभु हीन संव्यर
समगतं । हे दयाल कृपाल करणानिधि, आयो
तुम शरणागतं प्रभु आयो तुम शरणागतं ॥१६॥

॥ दोहा ॥

नहि विद्या नहि वचन बल, नहि धीरज गुण ज्ञान ।
तुलसीदास गरीब की, पत राखो भगवान ॥१७॥
विषय कषाय अनादि को, भरिया रोग अगाध ।
वैद्यराज गुरु शरण धी, पाजं चित्त समाध ॥ १८॥
कहेवा मे आवे नही, अवगुण भखो अनन्त ।
लिखवा मे क्युं कर लिखूं, जाणे श्रीभगवन्त ॥१९॥

गाननपति बडेमानजी, तुम मग मेरी डोड ।
 जैसे महुड जहाज बिना बलन पार न डोर ॥२६॥
 भव व्रमण मस्तार हु ग नाका बार न पार ।
 निर्लोनी महुगुर बिना कवण उतारे पार ॥२७॥
 भवनागर मनार मे दिग श्री जिनराज ।
 उगम करि पटुने तिरे बैढी वरुष जहाज ॥२८॥
 पवित उडारन नाथजी असनो चिन्ह विचार ।
 मल नुक सब ग्हाथरी, नमिथे मागवार ॥ २९ ॥
 नाक कगे सब म्हापरा आज तलकना शोष ।
 दोन दुवाल दियो हसे अडा शील नंतोष ॥३०॥
 देव अरिहत गुरु निग्रथ संवर निर्जरा धर्म ।
 केवली भापित शान्त ए, पही जैन मन नर्म ॥३१॥
 इस्त अपार सत्तार मे शरण नहीं अर कोय ।
 पाने तुम पद भगत ही भक्त सगई होय ॥३२॥
 छूटं पिछला पापथी, नवा न माथं कोय ।
 ओ गुरुदेव प्रसादनों, सकल मनोरथ होय ॥३३॥
 आरंभ परिग्रह नजि करो, नमस्ति व्रत आराध ।
 अंत अवसर आलोपके अपराध चित्त नमाथ ॥३४॥

॥ नमोकार सह्य पचक्खाण ॥

उग्गद चरे नमोकार सह्य पचक्खामि,
चउविहंपि आहार अत्तण पाण ताइम साइम
अत्तन्थणा भोगेण सहसागरेण वोत्तिरामि ।

॥ पोरसिथंका पचक्खाण ॥

पोरसिथ पचक्खामि उग्गद चरे चउविहंपि
आहारं अत्तण पाण ताइम साइमं, अत्तन्थणा
भोगेणं सहसागारेणं पच्छत्त कल्लेणं, दित्तानो-
हेणं ताहुवण्णेणं, तच्च तमाह्वित्तियागारेण
वोत्तिरामि ।

॥ एगात्तणंका पचक्खाण ॥

एगात्तण पचक्खामि निविहंपि आहारं अत्तण
साइम साइमं, अत्तन्थणा भोगेणं, सहसागारेणं
तागारियागारेण आउट्ठगत्तारेणं, गुरु अण्डु-
डाणेणं महत्तरागारेणं तच्च तमाह्वित्तियागारेण,
वोत्तिरामि ।

११ जैज्या

१४ चेलणा

१२ कुन्ती

१५ प्रभावती

१३ दमयन्ती

१६ पद्मावती

चत्तारि मंगलं की पाटी ।

चत्तारि मंगलं. अग्निन्ता मंगलं. मिट्टामंगलं,
माहुमंगलं केवलि पन्नन्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि
लोगुत्तमा, अग्निन्ता लोगुत्तमा. मिट्टालोगुत्तमा,
माहु लोगुत्तमा. केवलिपन्नन्तो धम्मो लोगुत्तमा ।
चत्तारि मरणं पवज्जामि अग्निन्ता मरणं पवज्जामि,
मिट्टामरणं पवज्जामि माहुमरणं पवज्जामि केवलि
पन्नन्तो धम्मो मरणं पवज्जामि ।

ए चार शरणा मगा और मगा नही कोय ।

जो नर नागी आदरे अक्षय अमर पद होय ॥

अथ श्री साधु कन्दर्प ।

नमं अनन चौवीसी. अप्पादिक महावीर ।
आर्य श्रेष्ठ मां घाली धर्म नी मीर ॥१॥ महा अनुत्प
धनी नर गुरुवीर ने धीर । तीर्थ प्रवर्त्तावी, पद्मोता

उपवास करने उपवास की पाप्मा पर
तिणको काई फल पड़े ॥ १ ॥

उ०—हो गौतमजी ७७ मा अरथ ७७ मा १ ७७
लाख ७७ हजार ७ स ७७ पत्थोपम भाजेंगे
नारकी नो आयु नटे । देवता नो शुभ आयुष
बांधे ॥ १ ॥

प्र०—हो भगवान, कोई पाप्मा सत्ति पोरसी करे
तिणको काई फल होवे ? ^{अर्थात्} ^{सोसिधिये} ^{जेर्रीको फल}

उ०—हो गौतम जी ३४६ काड़ २२ लाख २२
हजार २२२ पात्थोपम भाजेंगे नारकीनो
आयुषो तटे देवतानो शुभ आयुष बांधे
॥ २ ॥

प्र०—हो भगवान कोई आधा मुहरत संवर करे
तिणको काई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी ४६ करोड़ २६ लाख ६१
हजार ६ स पत्थोपम भाजेंगे नारकी नो
आयुषो तटे देवता नो शुभ आयुष
बांधे ॥ ३ ॥

प्र०—हो भगवान् कोई एक समायक करे निष्कको
काई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी ६० कोड़ ५६ लाख २५ हजार
६ स २५ पत्थोपम भाजगे नारकीनो
आडयो नृदे देवताना शुभ आयुष थावे ॥ ४ ॥

प्र०—हो भगवान् कोई बड़ी बड़ीना पचस्रान
करे निष्कको काई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी ८ कोड़ १३ हजार १०८
पत्थोपम भाजगे नारकीनो आडयो नृदे
देवतानो शुभ आयुष थावे ॥ ५ ॥

प्र०—हो भगवान् कोई एक नवकार मन्त्र को
ध्यान करे निष्कको काई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी १६ लाख ३३ हजार २३३
पत्थोपम भाजगे नारकीनो आडयो नृदे
देवताना शुभ आयुष थावे ॥ ६ ॥

प्र०—हो भगवान् कोई एक अष्टवृत्ति गणे निष्कको
काई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी २२२२ ३० सप्तोपम भाजगे

उत्कृष्टा पांन सौ सागरोपम भोजेरो नार-
कीनो आठषो नूटे देवतानो शुभ आयुष
षांघे ॥ ५ ॥

प्र०—हो भगवान कोई एक नवकारसी करे
निणको काई होवे :

उ०—हो गौतमजी सौ वर्ष नारकीनो आठषो
नूटे देवतानो शुभ आयुष षांघे ॥ ८ ॥

प्र०—हो भगवान कोई पोरसी करे निणको काई
फल होवे :

उ०—हो गौतमजी १ हजार वर्ष नारकीनो आठषो
नूटे देवता नो शुभ आयुष षांघे ॥ ९ ॥

प्र०—हो भगवान कोई दो पोरसी करे निणको
काई फल होवे :

उ०—हो गौतमजी १० हजार वर्ष नारकी नो
आठषो नूटे देवतानो शुभ आयुष
षांघे ॥ १० ॥

प्र०—हो भगवान कोई तीन पोरसी करे निणको
काई फल होवे :



१ महीना का—३३६५७०० सामउसाम ॥ ५ ॥

३ महीना का—१०१८७१०० सामउसाम ॥ ६ ॥

६ महीने का—२०३७४२०० सामउसाम ॥ ७ ॥

८ महीने का—३०५६१३०० सामउसाम ॥ ८ ॥

१२ महीनेका—४०७४८४०० सामउसाम जाणवो ६

ॐ इति ॐ

पृथ्वीकाय का जीव एक सुदृग्न में १०८०४

जनम मरण करे ॥ १ ॥

अपकाय का जीव एक सुदृग्न में १०८०४

जनम मरण करे ॥ २ ॥

तेउकाय का जीव एक सुदृग्न में १०८०४

जनम मरण करे ॥ ३ ॥

वायुकाय का जीव एक सुदृग्न में १०८०४

जनम मरण करे ॥ ४ ॥

प्रत्येक धनधानिकाय का जीव एक सुदृग्न में

३००० जनम मरण करे ॥ ५ ॥

साधारण वनस्पतिकाय का जीव एक सुहृत् में ६५५३६ जनम मरण करे ॥ ६ ॥

बेहन्द्री जीव एक सुहृत् में ८० जनम मरण करे ॥ ७ ॥

तेहन्द्री जीव एक सुहृत् में ६० जनम मरण करे ॥ ८ ॥

चञ्जहन्द्री जीव एक सुहृत् में ४० जनम मरण करे ॥ ९ ॥

असती पंचेन्द्री जीव एक सुहृत् में २४ जनम मरण करे ॥ १० ॥

सती पंचेन्द्री जीव एक भव करे ।

॥ इति सासडसाम को थोकडो सन्पूर्णम् ॥

॥ मोक्ष मार्गनो थोकडो प्रारम्भी ए छे ॥

श्रीगौतम स्वामीजी महाराज हाथ जोड़ी मान मोड़ी वन्दणा नमस्कार करके श्रवण भाव
श्री महावीर देवने पूछना हुआ ।

प्र०—हो भगवान् । जीव कर्मोंके वश किम रमरह्यो ?

“हो गौतमजी जिम तिलीमें तेल रमरह्यो”

“जिम सेलड़ी में रस रमरह्यो”

“जिम ठही में मक्खन रमरह्यो”

“जिम पाषाणमें वातु रमरह्यो”

“जिम फलमें वामना रस रही

‘ जिम खर पृथ्वी में हीगल रमरह्यो”

“जिम यो जीव कर्मों के वश रमरह्यो छे”

प्र०—हो भगवान् यो जीव किम करीनें मुगत जावसी ?

उ० हो गौतमजी । जिम फोई समारी पुष्प समार की कला केलवी न जिम तिल्ली में तेल काइ ।

सेलड़ी में स रस काइ ।

ठही में स माखन काइ ।

फल में स वामना काइ ।

पाषाण में स वातु काइ ।

खर पृथ्वी में स हीगल काइ ।

निम यो जीव, ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य तप,
अंगीकार करीने सुगत जावनी ।

प्र०—हो भगवान् । जीव जीव सगला सुगत में
जावेगा अजीव अजीव अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ
नहीं ।

प्र०—हो भगवान् । काई कारण से ?

उ०—हो गौतमजी । जीवका दो भेद एक सूक्ष्म
इतरा यादर । ते यादर कुं सुगति छे सूक्ष्म
कुं नहीं ।

प्र०—हो भगवान् । यादर यादर जीव सगला
सुगत में जावेगा सूक्ष्म सूक्ष्म जीव सगला
अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी । नो अठे समठे, यो अर्थ
समर्थ नहीं ।

प्र०—हो भगवान् । काई कारण से ?

उ०—हो गौतमजी । यादर के दो भेद एक ब्रह्म

दृजा म्यावर त्रमकुं मुगती छे म्यावर कुं
मुगत नहीं ।

प्र०—हो भगवान । त्रम त्रम मगला मुगत में
जावेगा, म्यावर २ मगला अटे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी । नो अटे समटे यो अर्थ
समर्थ नहीं ।

प्र०—हो भगवान काटे कारण से ?

उ०—हो गौतमजी । त्रमका हो भेट (१) पंचेन्ट्री
ने (२) तीन विकलेन्ट्री । पंचेन्ट्री कुं मुगत
छे तीन विकलेन्ट्री कुं मुगत नहीं ।

प्र०—हो भगवान पंचेन्ट्री २ मगला मुगत जावेगा
तिन विकलेन्ट्री २ मगला अटे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी । नो अटे समटे यो अर्थ
समर्थ नहीं ।

प्र०—हो भगवान काटे कारण से ?

उ०—हो गौतमजी । पंचेन्ट्री का हो भेट एक
मगली दृजा मगली । विकलेन्ट्री का मुगत छे
त्रमकी कुं मुगत नहीं ।

भवजल तीर ॥ २ ॥ सीमंभर प्रमल, जगन्ग नी-
 क्य वीस । छि अहीहीप्रभा, जगन्गना जगदीश
 ॥ ३ ॥ एक घा न भितर, उरुछेय पद जगिअ ।
 धन्य मोदा प्रसुती, जेहेन नमार्न कोश ॥ ४ ॥
 केवली दीप कोही उरुछेय नव कोइ । सुनि दीप
 सरल कोही, उरुछेय नव सहस कोइ ॥ ५ ॥
 विन्दे विदेह म, मोदा नपरेवी घोर । भावे कयी
 वरुं, टाले भव नी जोइ ॥ ६ ॥ सीवसि जिन न
 सवला न गणधर । चवदेस न बावन, न प्रणम
 सुखकार ॥ ७ ॥ जिन आसन नायक, धन्य श्री
 वीर जिगद । गीनमादिक गणधर, वसीये
 आगद ॥ ८ ॥ श्री ऋषभदेव ना भरनादिक सी
 पूत । वैराग्य मन आणी, संयम लियो अर्धुन
 ॥ ९ ॥ केवल उपराजी, करि करणी करुन ।
 जिनमन दीपावी, सवला मोक्ष पडन ॥ १० ॥ श्री
 भरीभर ना, हुआ पाटीधर आठ । आदिन्य
 जगदीक पहीना विवपुर वाट ॥ ११ ॥ श्री जिन
 अन्तर ना, हुआ पाट असद्वय । सुनि सुनि पहीना

प्र०—हो भगवान् ! मली २ सगला हुगत जावेगा
असली २ सगला अडे रह जावेगा :

उ०—हो गौतमजी ! नो अडे समडे, यो अर्थ
समर्थ नही ।

प्र०—हो भगवान् काई कारण से :

उ०—हो गौतमजी मलीका दो भेद, एक मनुष्य
दूजा निर्यञ्ज, मनुष्य कुंनो हुगती छे निर्यञ्ज
कुं हुगती नही ।

प्र०—हो भगवान् मनुष्य २ सगला हुगत में
जावेगा निर्यञ्ज निर्यञ्ज अडे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी नो अडे समडे, यो अर्थ समर्थ
नही ।

प्र०—हो भगवान् काई कारण से :

उ०—हो गौतमजी ! मनुष्य का दो भेद एक
समहृष्टि दूजा मिथ्याहृष्टि । समहृष्टि कुं
हुगन छे मिथ्याहृष्टि कुं हुगन नही ।

प्र०—हो भगवान् ! समहृष्टि २ सगला हुगत में
जावेगा मिथ्याहृष्टि २ अडे रह जावेगा ?

प्र०—हो भगवान् । कोई कारण से ?

उ०—हो गौतमजी । सर्वव्रती का दो भेद एक प्रमादी दूजा अप्रमादी अप्रमादी कुं मुग्त हे प्रमादी कुं मुग्त नहीं ।

प्र०—हो भगवान् । अप्रमादी अप्रमादी सगला मुग्त मे जावेगा, प्रमादी २ अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी । नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं ।

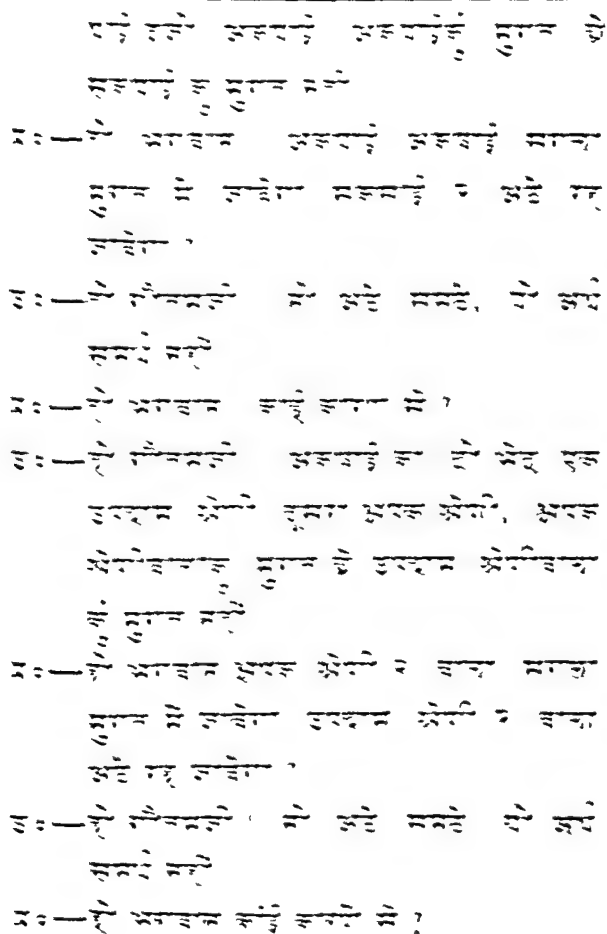
प्र०—हो भगवान् । कोई कारण से ?

उ०—हो गौतमजी । अप्रमादी का दो भेद एक क्रियावादी दूजा अक्रियावादी क्रियावादीकुं मुग्त हे अक्रियावादी कुं मुग्त नहीं ।

प्र०—हो भगवान् । क्रियावादी २ सगला मुग्तमे जावेगा अक्रियावादी २ सगला अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी । नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र०—हो भगवान् । कोई कारण से ?



आवे तो तीर्थं कर गोत्र बांधे ।

१८—अपर्वकरण ज्ञान नयो नयो भणतो मीलतो
थको जीव कर्मां की कोड खपावे, उन्कृष्टी
रमायण आवे तो तीर्थं कर गोत्र बांधे ।

१९—सत्र सिद्धांतना विनय भगती उन्कृष्ट भाव
में करतो थको जीव कर्मां की कोड खपावे,
उन्कृष्टी रमायण आवे तो तीर्थं कर गोत्र
बांधे ।

२०—ग्राम नगर पुर पाटन विचरता, विद्यात
उन्वापतां समगत वापतां जीव कर्मां की
कोड खपावे उन्कृष्टी रमायण आवे तो
तीर्थं कर गोत्र बांधे ।

॥ इति सप्तमोऽध्यायः ॥

दाली कर्म नो बंकर ॥ १७ ॥ धन्य कपिल मुनिवर,
 नमि नमं अणगार । जेणे तन्त्राण व्याप्यो, महन्त्र
 रमणि परिवार ॥ १८ ॥ मुनिवर ढरकेणी, चित्त
 मुनीश्वर मार । गुड संयम पाली. पान्या भव नो
 पार ॥ १९ ॥ बली डगुकार राजा, वर कमलावती
 नार । भगु ने जशा, नेदना दाय कुमार ॥ २० ॥
 छये छति ऋद्धि छांड़ी ने, लीधो संयम भार । उम
 अल्प कालमां, पान्या मोक्ष द्वार ॥ २१ ॥ बली
 मंजनी राजा, द्विगण आदिदे जाय । मुनिवर
 गदमाली. आग्यो मारग टाय ॥ २२ ॥ चाग्रि
 छेई ने. नेट्या गुन ना पाय । श्वत्री गजच्छपीश्वर,
 चर्चा करी चित्त लाय ॥ २३ ॥ बली दश चक्रवर्ति
 राज्य रमणी ऋद्धि छोड़ । दश मुक्ति पद्मोता, कुल
 कुल ने शोभा चोड़ ॥ २४ ॥ इण अवमर्पिणी मां.
 आठ राम गया मोक्ष । बलभद्र मुनीश्वर गया,
 पंचमं देवलोका ॥ २५ ॥ दशार्णभद्र राजा, वीर
 बांध्या धरि मान । पछे इन्द्र ह्दायो. दियो छः काय
 अनय दान ॥ २६ ॥ कर्कंड प्रमुन्व, चारं प्रत्येक

અથ કર્મ વિપાક ધર્મ કથાના

ચોલ લિખ્યતે ।

પુત્ર કે ધર્મ કથા માઠી સાડા ત્રીન
। છે તિણ માહે દોય કોડ સોલે
તે પાંચસૌરો યોકડો. તિણ માંહી
ના કથા ચાલી તે માંહેલો ભાવ
તલ તરુપ માંટિયો છે ।

હો ત્વામી ? કાનો હોય તે કિસા
ન ને ઉદે ।

શેષ્ય ? જે પૂર્વે અગલા ભવ માહે
તલ વીજ વીધિયા (તોડિયા) તેના
કાનો હોય છે ।

શિષ્ય—આંગો હોય તે કોણસા કર્મ થી હોય ?

ગુરુ—જેણે પૂર્વે વ્રત ધાવર જીવો ને પાળી માહે
હુનોઈને માલ્યા તેના કારણથી અધત્વ પાવે ।

गुरु०—जे पूर्वे पशुपक्षी जीवोने भंभावकरतांग
लागलो करतो पकेन्द्री नी जड ग्वणतो
तेना प्रतापे ।

शि०—गूंगो, घोवडो होयते किंसा कर्मने उदे ?

गुरु०—जेणे संजमवत, गुणवंत, शीलवंत जीवनी
पुठपाछे चावत (ग्वोटो आल) करी तेना
प्रतापे ।

शि०—खोज्यो होय ते किंसा कर्मने उदे ?

गुरु०—जेणे पूर्व भवे वेदगिरी का काम कीधा
तेना प्रतापे ।

शि०—बेहेरो पात्रलो थाय ते किंसा कर्मने उदे ?

गुरु०—जेणे पूरवे घणी वनस्पती स्वहाते करीने
छेदी तेना कारणसू ते जीव बेहेरो पात्रलो
उपजे ।

शि०—गूंगो टोलो होयते किंसा कर्मधी होय ?

गुरु०—जेणे पूर्व भवे चार तीर्थना अवगुण कखा
तेना प्रतापे ।

शि०—गलत कोडी जीव उपजे ते किंसा कर्मधी ?

શિ૦—શરીર ને ત્રિપે મગર રોગ ઉપજે તે ત્યાં
કર્મ ને ઉદે ઉપજે નૈ ।

ગુહ૦—જે પરદે સ્વતાને તરો પચેન્દી જીવો ને
હાણિયા તેના પ્રતાપે ।

શિ૦—દુષ્પનો માના કરે અનેરાને દ્રવ્ય પામે તે
કિત્તા કરમને ઉદે :

ગુહ૦—જે પ્વે અનેરાને દ્રવ્યનો અંતરાય પાડિયા
તેના પ્રતાપે ।

શિ૦—ફડમાલા રોગ હોય તે કિત્તા કર્મને ઉદે ?

ગુહ૦—જે પ્વે વળા માછલા મારિયા તેના પ્રતાપે ।

શિ૦—શરીરને બિલે પાથરી રોગ હોય તે કિત્તા
કર્મને ઉદે :

ગુહ૦—જે પૂર્વમંત્રે નૈધુન વળા સેવિયા તેના
પ્રતાપે ।

શિ૦—અર્શ રોગ હોય તે કિત્તા કર્મને ઉદે ?

ગુહ૦—જે પ્વે પૂરવે ધુળો ઘાલો વળા જીવાને
સત્તાવિયા તેના પ્રતાપે ?

शिः—शरीरने चिपे वाला निकले ने हिमा रुम
ने उडे ?

गुः—जे उन्हे बगल जीवाग डावल नांडी शोना
बगलवी नेमा प्रतापे ।

शिः—शरीरने चिपे गेग डीने नदीं जीव अनेक
हु न गवे ने हिमा रुम ने उडे ?

गुः—ज उव नुडो बोली लाच लीधा नेमा
प्रतापे ।

शिः—मजामना विजोग थाव ने हिमा रुमने
उडे ।

गुः—जे उन्हे माया मरदाउं तथा निच कपडाउं
हुनप्रता कीरी नेमा प्रतापे !

शिः—शरीर हुनने गमे ने हिमा रुमने उडे ?

गुः—उव बगल कड बीज नोडिया गोते ह्य
दलाया नेमा प्रतापे !

शिः—जीव उव कडे अगरी मायमां उडे
ने हिमा रुमने उडे ।

गुः—जे उव कड कड माय की ता नेमा प्रतापे ।

शि०—शरीरने विपे पाठो गंग भाग ते किसान
करमने उदे ?

गु०—जेणे पूरवे वावल्या कुंवा मणाव्या तेना
प्रतापे ।

शि०—कोई जीव मीठो बोले अनेराने कडवो लागे
ते किसान करमने उदे ?

गु०—जेणे पूरवे पंचेन्द्री जीवना आहार कीधा
तेना प्रतापे ।

शि०—शरीरने विपे खाज फटणी चाले ते किसान
करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे घणा तेन्द्री जीव ताडवे अगन
पाणी माहे नाखी मराविया तेना प्रतापे ।

शि०—मिथ्या शास्त्र मणे प्रपंच करे सो किसान
करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे घणा जीव उपर क्रोध कीधो भूठो
आल दीधो तेना प्रतापे ।

शि०—कोई जीव सूत्र मणवा वयावच करे पडे

મળેલા ચાન્દાગ અવગુણ થાડ થોલે તે
કિસા કરમને ઉઠે ?

ગુરુ—જેણે પરચે વી મેન નેલના ચામન ઉઘાડા
મેલિયા માટે જીવ જગાવિયા તેના પ્રતારે ।

શિષ્ય—સ્ત્રી નપુંસક થાય તે કિસા કરમને ઉઠે ?

ગુરુ—જે પરચે માયા કપડાં ફરી દ્રવ્ય સ્ત્રીને
નથી ગટં નના પ્રતારે ?

શિષ્ય—ફોડિયો થાય તે કિસા કરમને ઉઠે ?

ગુરુ—જે પરચે તુલ્યોજાવના ડેડન નેડન સીધા
નના પ્રતાર ।

શિષ્ય—અમીચન વિષ્ય જુવા પડે તે કિસા કરમેસં ?

ગુરુ—જે પરચે નાડ્યાના આશર સીધા તેના
પ્રતારે ।

શિષ્ય—ફોડ જીવ ના ફરં જવ ફરં મહનાય ફરં
વર યો સીધો અંગે ને મુશરં નથી ન
કિસા કરમને ઉઠે ?

ગુરુ—જે પરચે અધિકાર નથી કરત નિષ્ઠ ફરં
ફરં ના નના પ્રતાર ।

शि०—तप जप न हुवे ते किंसा कर्मने उदे ?

गु०—जेणे पुरवे तप जपनो मद कीधो तेना प्रतापे ।

शि०—कोई जीव बोलिगा अनेराने सुहावे नही ते किंसा कर्मने उदे ?

गु०—जे पुरवे वचन कलानो अहंकार कीधो तेना प्रतापे ।

शि०—शरीरने अशुभ वर्ण पामे ते किंसा कर्मने उदे ।

गु०—जे पुरवे रूपनो मद कीधो तेना प्रतापे ।

शि०—कूडो आल माघे आवे ते किंसा कर्म ने उदे ?

गु०—जे पुरवे अठारमो पापस्थानक बार बार घणो सेवियो तेना प्रतापे ।

शि०—आपणे अण कीना अपयश अपकीरत बने ते किंसा कर्मने उदे ?

गु०—जे पुरवे अस्त्री हती तेवारे सासु नणंद नाई

मो० । मुनि मुक्ति पयोना जोना कर्म मया जोध
 ॥ २२ ॥ अन्य मोठा मुनिवर, मुनामुत्र जगीश ।
 मुनिवर अनायो जोना राग ने रीता ॥ २३ ॥ बली
 समुद्रपाल मुनि, गजेनानि रहनेम । केशी ने गौतम
 पन्या शिवपुर क्षेत्र ॥ २४ ॥ अन्य विजय घोष
 मुनि, जयघोष बली जाण । ओगर्गाचार्य, पहोना
 लै निर्वाण ॥ २५ ॥ ओ उत्तराध्ययन मां, जिनवर
 किया बलाण । शुद्ध मन ले ध्यावो, मन में धीरज
 आण ॥ २६ ॥ बली दानक सन्यासी, राख्यो
 गौतम स्नेह मरावीर समीपे पच महावन लेह
 ॥ २७ ॥ नप कठिन करीने भोली अपणी देह ।
 गया अच्युत देवलोकें बवी लेले भव छेह ॥ २८ ॥
 बली ऋषभदत्त मुनि लेठ सुदर्शन तार । शिव-
 राज कृषिस्वर अन्य गानेय अणगार ॥ २९ ॥ शुद्ध
 सयम पाली पान्या केवल तार । ए चारे मुनिवर,
 पहोना मोक्ष मभार ॥ ३० ॥ भगवन्तनी माना,
 अन्य अन्य तनी देवानन्दा । बली तनी जयन्ति,
 छोड दिया घर कन्दा ॥ ३१ ॥ तनी मुक्ति पहोनी,

शि०—कोई जीव बोलहो बहिरो अशुभ अणगमतो
संधान पामे ते किन्ना करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे सुमर संधान माहे मद कीनो
घणी हसा कीधी मद करी घणा जीवाने
ताउ दीधो तेना प्रतापे ।

शि०—अनुष्य सुरससंधान पामे ते किन्ना करमने
उदे ?

गु०—जे पूरवे पर जीवने मीठा बोले, रक्षा करै,
पापना गीन बरजे तेना प्रतापे ।

शि०—पंचेन्द्री जीव बलहीण उपजे ते किन्ना
करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे तीव्र भावे मांसनो आहार कीधो
तेना प्रतापे ।

शि०—पुरुष लिंग छेदी स्त्री लिंग पामे ते किन्ना
करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे सतरमो पाप स्थानक माया मोसो
पणो सेवियो तेना प्रतापे ।

शि०—कोई जीवने घणो हांसो आवे ते किसा करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे अमजी पचेन्द्री जीव हणिघा हणाविघा तेना प्रतापे ।

शि०—कोई जीव साधु साधवी माहे बालो लागे नहीं ते किसा करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे पचेन्द्री तरुण मनुष्य विराधिया तेना प्रतापे ।

शि०—कोई जीव संसारी जीवने तथा माता पिताने वालो न लागे ते किसा करमने उदे ।

गु०—जे पूरवे घणा विकलेन्द्री जीव विराधिया तेना प्रतापे ।

शि०—पुरुषने तरुणपणे स्त्रीनो वियोग धाय ते किसा करम ने उदे ?

गु०—जे पूरवे अक्रंद भावे कंदर्प सेविया तेना प्रतापे ।

शि०—भणी भणीयानीनो तरुणपणे विजोग धाय ते किसा करमने उदे ?

शि०—निम्नी जौनी आवे ते निम्ना करम ने
उदे ।

सु०—जे पूखे लोनागनी धन धनार्ह तेना प्रनापे ।

शि०—पंचेन्नी पनी पानीनें पने दोलना धुक
गीहगीह आवे तानो देनना दुरगंछा
करे ते किन्ना करम ने उदे ?

सु०—जे पखे मोरन लीह कचगे दना दीन सुधी
पकछो करीने पांनठ धारीया तेना प्रनापे ।

शि०—दना महुप्य सहित पानी माये नाव डूबी
करे ते किन्ना करम ने उदे ?

सु०—जे पखे वेनान मां वेनान कीधो तथा
दना दीन रात्रीने डेरियो तथा ताज-
मना मां उवागसवन पकछा कीधा
महुप्यने करे कीधा तेना प्रनापे ।

शि०—कोई जीव दान मागवानी बांछा करे ते
किन्ना करम ने उदे ?

सु०—जे पखे दान ताजमना दुवागिया तेना
प्रनापे ।

गु०—जे पुरवे घणा वन काटिया कटाविया तेना प्रतापे ।

शि०—घणो कांपणो पामे ते किसा करम ने उदे ?

गु०—जे पुरवे घणा कपामीया तोडीया सेलडी घणी पीलिया तेना प्रतापे ।

शि०—तरुणपणे ढांत पडे माथारा केश धोला थाय ते किसा कर्मने उदे ?

गु०—जे पुरवे कवली वनस्पती हाते करी चुटी चुटाची तेना प्रतापे ।

शि०—शरीरने विपे घणा गुमडा थाय भरीया नीगल होय ते किसा करमने उदे ?

गु०—जे पुरवे आम्वा फल चीरीनें लुणसुं भरीया तेना प्रतापे ।

शि०—ढामपणो पामे ते किसा करमने उदे ?

गु०—जे पुरवे माग्वण (लुणी) इकठो घणा दिनासुं तपावीयो तेना प्रतापे ।

शि०—नासुर रोग थाय ते किसा करमने उदे ?

गु०—जे पुरवे कसाईना कर्म कीया तेना प्रतापे ।

बली ते वीरनी नन्द । महा मनी सुदर्शना वणी
 सतियांना वृन्द ॥३२॥ बली कार्तिक ठेठे, पडिमां
 वही शुर्वीर । जिम्हो मोगं ऊपर, तापस बलती
 खीर ॥ ३३ ॥ पछी चारित्र लीधुं, मंत्री एक सहस्र
 आठ धीर । मरी हुआ सकेंद्र चवी लेसे भव
 तीर ॥ ३४ ॥ बली राय उडाई, दियो भाणेजन
 राज । पछी चारित्र लेई ने, साखा आत्म काज ॥
 गंगदत्त मुनि आनन्द, तरणतारण जिहाज । कुशल
 मुनि रोहो, दियो वणाने साज ॥ ३६ ॥ धन्य सुन-
 क्षत्र मुनिवर, सर्वानुभूति अणगार । आराधक
 हुडने, गया देवलोक मभार ॥ ३७ ॥ चवि मुक्ति
 जासे. बलि सिंह मुनीश्वर सार । बीजा पण मुनिवर,
 भगवनीमां अधिकार ॥३८॥ श्रेणिकना बेटा, मोटा
 मुनिवर मेव । तजी आठ अन्तेउरी, आप्यो मन
 संवेगी ॥ ३९ ॥ वीर पै व्रत लेइने, बांधी तपनी
 तेग । गया विजय विमाणे, चवि लेसे शिव वेग
 ॥ ४० ॥ धन्य वावर्चा पुत्र, तजी वत्रिसे नार ।
 तेनी साथे निकल्या. पुन्य एक हजार ॥४१॥ सुखदेव

पिण तेहना गारे अवगुण माने ते किता
करमने उदे ।

गु०—जे पूरवे गंधनरो काम होशो तेना प्रतापे :

शि०—कोई जीव वस्तु हानी लेंहेने तूपे तेहनी
चुगली करं ते किता करमने उदे ।

गु०—जे पूरवे काजी नील फल अणावोने ताडाना
अंगार उपर धरीया तेना प्रतापे ।

शि०—शरीरने तोले रोग साये उपजे ते किता
करमने उदे ।

गु०—जे पूरवे सेलडीरा कटका करीने घणा घाणी
माहे पीलिया घणा गांस नगर उजाड
कखा, मारीया, बाया वसाया तेना
प्रतापे ।

शि०—कोई जीव गर्न माहे उपजे पछे जन्मनी
पेला आडो आवे तेहने कासीने काडे ते
किता करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे कत्तार्इना हानसुं दान लीया तेना
प्रतापे ।

शि० कोइ जीव गने माटे उपजे पछे नसतो
जाय ने किना करमने उठे ?

गु० जे उगवे मायुने कुटो अल ठीरो आमुनतो
आजग ठीरो नेना दतावे ।

शि०—कोइ स्त्री ने बार बरमगे छटो गेहे ने
किना करमने उठे ?

गु० जे उगवे दगा देसाव पकटा कीया दगा हाव
गर्भने डोलिया जीव नगविया नेना दतावे ।

शि०—कोइ स्त्रीने नेजीज गने चचीने केर नेगीज
कुटो गने माटे उपजे पछे चोचोम बरे
नसत न किना करमने उठे ?

गु०—जे उगवे दगा मैयुन नेविया नीत्र नये
नत नेवन बायन माज ठीरो मादगन
करम कीना नेना दतावे ।

शि०—एउटा ठीराव नव गेग बाव नया मगगे
कीज नहु नहु कर न किना करमने उठे ।

गु०—जे उगवे दगा कुप्या न न मादगन नगविया
नसत नहु नहु

શિઃ—કોઈ જીવ ખરે તરે જન્મ પામેને પડે
કનાઈ માટી કરે રાજદત્ત પકડીને હુ નવે
રોકો ગમે ડંદ કરે મલે હામે માથે ગર ઘર
મીશા મગાવે તે કિતા કરમને ઉદે ।

ગુઃ—જે દરવે સોના નો આગાર કરાવીયો તેના
પ્રતાપે ।

શિઃ—સ્ત્રી બાંધ હુવે તે કિતા કરમને ઉદે ?

ગુઃ—જે દરવે ફુલના અંતર કરાવીયા તેના
પ્રતાપે ।

શિઃ—સ્ત્રી ભરત માંડ હુવે તે કિતા કરમ થી ?

ગુઃ—જેણે દરવે ઉગંતો વનસ્પતો પુકળા ચૂટીયા
(તોડીયા) તેના પ્રતાપે ।

શિઃ—પુરુષ બાંધ હુવે તે કિતા કરમ થી ?

ગુઃ—જેણે પર્વે ખરે ઘણા મીઝમીઝ કાટીયા
નોડોડા તળાવીયા શેફીયા તેના પ્રતાપ
નં ।

શિઃ—પુરુષ દુઃખ અને સ્ત્રીયા ઘણી સર્વ સ્ત્રીયા
માંડ હોય તે કિતા કરમને ઉદે ?

ગુ૦—જેણે પૂર્વે વળી વનસ્પતિનો રમ કરાવિયો
તેના પ્રતાપે ।

શિ૦—કોઈ જીવ ચોરી કરે વાટ મારે ગાઠ લોલે
તે કિમા કરમને ઉદે ।

ગુ૦—જેણે પાવે વળા હલાલલોરના કામ કીધા
તેના પ્રતાપે ।

શિ૦—કોઈ જીવ અનેગને કામી દેવે તે કિમા
કરમને ઉદે ?

ગુ૦—જેણે પાવે જલચર જીવ વળા મારીયા તેના
પ્રતાપે ।

શિ૦—ગીવ વચ્ચે માળમે દુઃખ મરીલો પામે
તે કિમા કરમને ઉદે ?

ગુ૦—જ્યા પાવે ત્યાં વળા વનસ્પતિના પાત ફલ
ચીત્ર ગ્રંથ ઉડીયા બૂટીયા તેના
પ્રતાપે ।

શિ૦—શાક પીડા અન્નપાત્ર માતા પિતાનો
વિભાગ પાત્ર ન કિમા કરમને ઉદે ।

ગુ૦—જ્યા પાવે ત્યાં વનસ્પતિના ગ્રંથ ઉડીયા

अथ कामदेव धावकनी सञ्ज्ञाय

आवक श्रीवीरनो चम्पानो बासीजी ॥ ए ॥
 आंकडी ॥ इकदिन इन्द्र प्रशंसियोजी, भरिय सभा
 रे मांय । इहनाई कामदेवनीजी, कोई देव न सकैरे
 चलाय ॥ आव० ॥ १ ॥ सरव्यो नहीं एक देवताजी,
 रूप पिशाच बणाय । कामदेव आवक कनेजी,
 आयो पौषधशालरे माय ॥ आव० ॥ २ ॥ रूप
 पिशाचनो देवने जी, डरो नहीं रे लिगार ।
 जाग्यो मिथ्यानी देवता जी, लियो शुभ मन
 ध्यान लगाय ॥ आ० ॥ ३ ॥ जमो रहै कामदेव
 जी, तोने कल्पै नहो छै कोय । बारो धर्मज
 छोडनोजी, पिण हु छोटावस्य तोय ॥ आ० ॥ ४ ॥
 हात्तीनो रूप बेने कियोजी, पिशाच पणो कियो
 दूर । पौषधशाला मे आयने जी, बोलै वचन
 कहर ॥ आ० ॥ ५ ॥ मन माहे नही कपियोजी,
 हात्तो संडने झाल । पौषधशाला बारै लेईजी,
 दियो आकाशे उछाल ॥ आ० ॥ ६ ॥ इन्त

घन वार । पहले स्वर्गे ऊपनाजी, चव जासी भव
 पार ॥ आ० ॥ १४ ॥ आ दृढ़ताई देखनेजी,
 पालो आवक धर्म । कामदेव आवकनी परेजी, थे
 पामो शिव सुख पर्म ॥ आ० ॥ १५ ॥ मुरधर
 देशसुं आयनेजी, जैपुर कियो है चौमास । अष्टा-
 दश छीयासीएजी, ऋष कुशालचन्दजी कियो
 प्रकाश ॥ आ० ॥ १६ ॥

सुगापुत्र की टाढ़ १

सुगरीव नगर सुहावणो जी, राजा बलभद्र
 नाम । तस घर राणो सुगावतीजी, तस नन्दन
 गुणधाम । ए माता सिण लाखीणी रे जाय ॥ १ ॥
 एक दिन बैठा गोमडेजी, राण्यां रे पगिवा ।
 शीश दाभै ने रवि तपे जी, दीटा तप अनवार
 ॥ ए माना० ॥ सुनि देखी नव लालच्योनी
 मन वसियोरे बैराग । हरष वर्गने इटिया ई
 लागा मानाजीरे पाय । ए नन्दनी सुन्दरी रे

મોગી માય ॥ માતા૦ ॥ ૩ ॥ તું સુકુમાલ
 સુદામણો જી, ખોગો સંસાર ના ખોગ । જોશન
 વય પાછી પહે જવ, આઢગજો તુમ જોગ, રે જાયા
 તુઠ્ઠ ચિત વદીરે છઃ માસ ॥ ૪ ॥ પાવ પલકી
 ભવના નદી ન માય, ફરે કાલકોજી માજ । કાલ
 અજાણ્યો કહ પહેજી, ક્યો નીતર પર વાજ ॥ ૫ ॥
 માતા ભિળ લાભિળી ન જાય ॥ ૬ ॥ મ્લ જડિત
 વર આગળાજી, ન સુન્દર અવતાર । મોટા કુલમે
 જપર્તાજી, કાઠે છાંડો નિરવાર ॥ ૭ ॥ રે જાયા તું ॥
 ૮ ॥ વાટા વર વાટી મચિયે ન માય, ભિળમે
 ભેન વાવ ક્ય મમાત્રી મમ્પદાજી, દેવંતા ચિલ
 જાય ॥ ૯ ॥ માતા૦ ॥ ૧૦ ॥ ગિલ્લૂ પયમો પોડળો
 જો ન નાળી ન મસાલ । ફતફ ફચોલે જીમળો
 જો ફાવલદ્રી મે આચાર ॥ ૧૧ ॥ રે જાયા તું ॥ ૧૨ ॥
 માયર જડ પિયા વળાવે માય, મુંઝ્યા માતાગ
 વચ ન મ્લ ન મ્લો જીવદોજી, ક્યક અંગેળા
 વચ ॥ ૧૩ ॥ માતા૦ ॥ ૧૪ ॥ વામિય છે જાયા
 કાઠિ કાઠિ વામિય ભંડારી માર । ચિત દયિયાળો

सन्नासो, एक सत्य जिह्व लार । पा जयमु सेलक,
लीधो सयम भार ॥४२॥ सर्व सत्य अर्द्ध वणा
जीवाने नार । पुटगिरि ऊपर कितो पादो गमण
सधार ॥४३॥ आराधक गर्ते होवो नेवो पार । हुआ
मोटा मुनिवर, नाम लिंगां निस्तार ॥४४॥ धन्य जिन-
पाल मुनिवर, दोय धनावा सांग । गंगा प्रथम देव-
लोके, मोक्ष जासे आराध ॥४५॥ श्रीमल्लिनाथना छः
मित्र मयावल प्रमुख मुनिराय । सर्व मुक्ति सिधाव्या
मोटी पदवी पाय ॥ ४६ ॥ बलि जितशत्रु राजा,
सुबुद्धि नामे प्रधान । पोते चारित्र लेइने, पान्या
मोक्ष निधान ॥ ४७ ॥ धन्य तेनले मुनिवर, दियो
छ काय अभयदान । पोटिला प्रति बोध्या, पान्या
केवल ज्ञान ॥ ४८ ॥ धन्य पांचे पाण्डव, तजी
द्रौपदी नार । ह्यविरानो पासे लीधो सयम भार
॥ ४९ ॥ श्री नेमि वंदणनो, एहवो अनिग्रह
कोध । मास मासतमण तव, शत्रुञ्जय जई सिद्ध
॥ ५० ॥ धर्मघोष तणा शिष्य, धर्मरुचि अणगार ।
किडियांनी कहरणा आणी दया रस सार ॥ ५१ ॥

भुक्तगोजो, औषध नई है लिंगार ॥ रे जाया नृ० ॥
 १० ॥ चारित्र्य छे माना मोहेलोजी, चारित्र्य
 सुगनीजी ज्ञान । नवदेई राजनोक्ताजी फेरा
 दालपहार ॥ ए माना ॥ ११ ॥ मियाले नी लागनी
 जी, उनाले तुरे बाध । चौमासे मेला कापडाजी,
 ए दुन सखो न जाय रे जाया० ॥ १२ ॥ घनमा
 छे एक सुगलोजी, कुण करे उणगिज मार ।
 सुगानी परे विनरस्यं जी, एकल्लो अगगार ॥ ए
 माना० । १३ ॥ मान घवन ले निसखाजी,
 सुगा दुन कुमार । पच महा व्रत आदखाजी,
 लीखे संयम मार ॥ ए माना० ॥ १४ ॥ एक
 मासनी सलेखनाजी, उपनो केवल ज्ञान । कर्म
 खराब हुक्के गया जी ज्योगे लीजे नित प्रति नाम
 । ए माना० । १५ ।

स्त्री-चरित्र की ढाल ।

सतियां तो सीता माग्यी, ज्यांग जिनका
 किया बन्धन । भविष्यण । कुमती कपिला माग्यी,
 प्यारी कर लीज्यो पिछाण । भविष्यण । चरित्र
 मृगो नारी तणा ॥ १ ॥ छाड़ी समारोहों फंद
 । भ० । जीलवन नर माधवल, ते पामें पाम
 आगद । भ० । च० ॥ २ ॥ कुमती में औगुण
 चणा बाग्या श्री जिनगाय । भ० । योद्धासा
 परगद फर ते मृगज्या चित्त ल्याय । भ० । च०
 । ३ ॥ नारी कड़ कट नी कोवली, औगुणनो
 भण्डार । भ० । कलह करवाने सांनरी, भेद
 पडावण तार । भ० । च० ॥ ४ ॥ देहली चढ़ती
 दिग पद चर ज्योति दगर असमान । भ० । पामें
 बंदी नर की गने जाय समान । भ० । च० ॥

१. देव विद्याते ओदक, मियने मन्मथ
 जाय । भ० । साय उमीमें दे मोय, उन्दर मं
 जिहकाय । भ० । च० । २ ॥ कोयल मोर नारी

परै, मोलै मीठा मोल । अ० । भोवर कहवी कुट-
 कली, मारि करै किलोल । अ० । व० ॥ ९ ॥
 निप रोवै निप नै रंनै, निप सुत पावै युंघ ।
 अ० । निप रावै निवै निपे निप दाना निप
 नून । अ० । व० ॥ ८ ॥ धर्म करतां धुंकल
 करै, ऐली नर अलान । अ० । धन्दर ज्युं नचावै
 निज कंधनै, जालै कै असल तुलान । अ० । व० ।
 । ८ ॥ नारीने काजल कोटरी, ए बेहुं एकज रंग । अ० ।
 काजल नर कालो करै नारि करै शील भंग । अ० ।
 । व० ॥ १० ॥ नारी नै मन डेलडी, दोनूं एक
 सभाव । अ० । कंठक संत कुशील नर, निप स्युं
 बेहुं लग ज्यान । अ० । व० ॥ ११ ॥ नान छै
 अडला नर नो, एग सबली छै इग संसार । अ० ।
 समला सुर नर तेरनै, निमला कर दिया नर ।
 । अ० । व० ॥ १२ । सुर नर कितर देवता,
 न्यानै विप बडा किया नर । अ० । नाख्या
 नरक निगोद नै न्यांगी नो दम्य नै दार । अ० ।
 व० ॥ १३ ॥ नैय डैय नारी नयन बचनन मीठा



भ० । च० ॥ ३४ ॥ अग्निग गार्गी नै वृद्धिग
 ब्राह्मणी, सेठ नै दिग उद्वर्ग अनेक । ०० ।
 सेठ सुठरगन चलिगो नही, मन्ये आग विवध
 । भ० । च० ॥ ३५ ॥ अंगुण दद्या द्युतग्या
 तणा, कर्त्तानं न आवे गर । ०० । सनिगंग गृण
 है अनि घणा, न्यांगे नो वदोन विभार । ०० ।
 च० ॥ ३६ ॥ अट्टे कगिला रे अंगुण नगा
 चाल्यो है इवकार । ०० । सेठ नै उद्वर्ग
 भीडियो, पिण सेठ न चलिगो दिग । ०० ।
 च० ॥ ३७ ॥

अथ चार शरणा औ विवध ।

हिरदै धारीजे हो, भविष्य उत्कर्ष प्ररणा
 चार ॥ ए टेक ॥ पोत्र इदं विन लक्ष्मीजे हो
 भविष्य । मंगलीक दाना चार आम्ना इहे
 सम्पदा मिले हो । भविष्य दंष्ट्रना दानार ॥
 अरिहन्त सिद्ध साधु नाना हो ॥ भविष्य

आमना ॥ हो० भ० ॥ नेने न आवे रंग ॥ चरने
आणन्द जीवने ॥ हो० भ० ॥ एत तणा मंयोग
॥ हि० ॥ ६ ॥ मन चिन्त्या मनोरथ फले ॥ हो
भ० ॥ निधय फल निरवाण ॥ कुमी नही देव-
लोक मे ॥ हो० भ० ॥ मुक्त तणा फल जाण ॥
॥ हि० ॥ १० ॥ मंवन अठारे घावन्ने ॥ हो० भ० ॥
पाली सेवे काल ॥ ऋष चौधमलजी इम कहे ॥
हो० भ० ॥ सुणज्यो बाल गोपाल ॥ हि० ॥ ११ ॥

ॐ इति ॐ

चेत चेत नर चेत ।

६ दोहरा ६

परलोके सुख पामवा, कर सारो संकेत ।
हजी बाजी छै हाथ मां, चेत चेत नर चेत ॥
जोर करी ने जीतबुं, खरे खरं रण खेत ।
दुश्मन छै तुझ देहमां, चेत चेत नर चेत ।
गाफल रहिश गमार तुं, फोगट धरुश फजेत

श्वे जन्म कृष्णीयार थड चेत चेत नर चेत ।
 नन धन नें तागं नथी, नथी बिया पणें ।
 पाछल मीं रज्जो पट्यां, चेत चेत नर चेत ।
 माग जेजे जयं रिग्ड थी रिड गंगाजे देव ।
 माटी मां माटी थडो, चेत चेत नर चेत ॥
 रक्षा न गंगा गजिया सुर नर मुनि मने ।
 नुंनो नरणा नुय छे चेत चेत नर चेत ।
 रज्जुन नाग रज्जुन जेन रज्जुनी रेत ।
 पटी नर नर पानीया कयां चेत चेत नर चेत ॥
 काया केम मटी गया, मयें वनीया रेत ।
 दोवर दोर जेनें रज्जुं चेत चेत नर चेत ।
 पाट पट्यां मज्जिने, विचारी ने कर चेत ।
 कदाही आवेजे कदां जेनें चेत चेत नर चेत ॥
 नृप दंडादण्ड मज्जिने, प्रभु माये कर रेत ।
 जेनें जिवित, जेनें छे चेत चेत नर चेत ॥

कटुआ नुंवानो, कीधो मयलो आहार । सर्वार्थ
 मिट्ट पढोता. चवि लेसे भवपार ॥ ५० ॥ बली
 पुंडरिक राजा कुंडरिक डिंगियो जान । पोते चारित्र
 लेई ने, न वाली धर्ममां हाण ॥ ५१ ॥ सर्वार्थ
 मिट्ट पढोता. चवि लेसे भव पार । श्री ज्ञाना
 पत्र में. जिनवर कल्या वखाण ॥ ५२ ॥ गौतमादिक
 कुमर मगा अडारे भ्रान । सर्व अंधक विष्णु सुत,
 धरणी ज्यांगी मान ॥ ५३ ॥ तजी आठ अंतेउगी,
 काढी दीक्षानी वान । चारित्र लेडने कीधी मुक्ति
 नो साथ ॥ ५४ ॥ श्री अनेक सेनादिक, छजं
 सहोदर भाय । वसुदेव ना नन्दन. देवकी ज्यांगी
 माय ॥ ५५ ॥ भद्रीलपुर नगरी. नाग गहावण
 जाण । मुलमां वर बधिया. मांभली नेमिनी वाण
 ॥ ५६ ॥ तजी वत्रीम अंतेउगी. निकलिया छिट-
 काय । नल कुवेर मनाणा, भेट्या श्री नेमिना
 पाय ॥ ५७ ॥ करी छठ २ पारणा मन में वैराग्य
 लाय । एक नाम मंथारे, मुक्ति विराज्या जाय
 ॥ ५८ ॥ बली दान्ण सागण. सुमुग्ध दुमुग्ध मुनि-

छिन्नु जी कोड, ते नर अंते अकेलडो, चाल्यो छै
सहु ऋद्ध छोड़ ॥ मा० ॥ ५ ॥ जे नर छत्र
धरावता, चमर विभ्रंता जी मार, ते नर पोछ्या छे
काठ मे, ऊपर डांगां की मार ॥ मा० ॥ ६ ॥ जे
नर दीपक करी पोढ़ता, फलडां सेज बिछाय, ते
नर अदबी मांहे पोढ़िया, चांचां मारै रे काग ॥
मा० ॥ ७ ॥ यादवपति सरिखा जी चल गया, जोबो
कृष्ण नरेश, वन कशुंवी मे एकलो दणायो बाण
सूं जेम ॥ मा० ॥ ८ ॥ दोदा दोदा रे पावता,
निर्वता बलि छांय, पहिले पोहर बिजा हुता, छले
दीसैजी नांय ॥ मा० ॥ ९ ॥ कदवा गहारां जी
कुण अडे म्हे काढां करड़ा नी पांछा, मगज मांहे
मावता नही, ते तो होय गया रांक ॥ मा० ॥
१० ॥ गरीब लोकां ने खोसता, डरता प्रभुजी
से नांय, रावले रोक्या रे दुख पडे, सोच कर मन
मांय ॥ मा० ॥ ११ ॥ घर मंदिर गृंही गद्या, मांय
पुण्य ने पाप, कुटुम्ब काज कर्म याधिया, मांगवे
एकलो आप ॥ मा० ॥ १२ ॥ नर्म विट्ठणी रे ३

बड़ी, निश्चय निष्फल जाय, ओछा जीव रं
 कारणे, मृद रथो ललचाय ॥ मा० ॥ १३ ॥
 नोषत बुग्ती जी बारणे, मरणाई जंघ भेर, काल
 निहाने जी ले गयो, नहीं कोई लावे जी वेर ॥
 मा० ॥ १४ ॥ धमण धमंती जी रह गई, बुझ
 गई लाल अंगार । पण ठमको जी मिट गयो,
 उठ चल्गो जी लोठार ॥ मा० ॥ १५ ॥ मिम
 पयमणा में पोढ़ता, तेल कुलेल लगाय । एक दिन
 इसही यणी, कृता हाग जे व्याय ॥ मा० ॥ १६ ॥
 नन मगम में बामो रुगी, जीव साये सुख चैन ।
 व्यास नमाम जी कनम, बाजत हे दिन नैन ॥
 मा० ॥ १७ ॥ परमात्मी ने पाछा फिह्या, हुंहुं
 यणी जी दह । जलमें पैज सींचो लिगो, धूम २
 फाम्नु मनह ॥ मा० ॥ १८ ॥ मारी नर मारी
 यवा दता नारही नीच । इस जाणी नम्र आइं,
 न ना पुण्यवन जीव ॥ मा० ॥ १९ ॥ निर्दोषी
 निरालोषी उ कायम सदापाल । आंगि परवीन
 नर पाली नर आद नजाल ॥ मा० ॥ २० ॥

सद्गुरु सांशारे डालसी, जोवो सुबुद्ध नरेश ॥
 साधु श्रावक ब्रत पालज्यो, हुबै सुगति प्रवेश
 ॥ मा० ॥ २१ ॥ कुगुरु कुमारग घालसी, मन
 पनीजज्यो त्यांग । हिंसा धर्म करायन, मेलसे
 नारकी मांग ॥ २२ ॥ तिहां कोई आडो नहीं
 आवसी, जी जी जपसे निवार । मारसे हेलो रे
 एकलो, छेदन भेदन मार ॥ मा० ॥ २३ ॥ अनंत
 भूख तृषा सही, शीत ताप दुःख घोर । धरती
 करवन सारसी, वेदन कठिन कठोर ॥ मा० ॥ २४ ॥
 पांच पच्चीस बाकी रखा, हिंसा भूठ अदत्त । मांस
 मद्य परनारना, लागा दोष अनंत ॥ मा० ॥ २५ ॥
 देव दुंलाला जी आवसी, करता लोचन लाल ।
 देख्यां जीवडो रे कापसी, मारसी मुद्गल भाल ॥
 मा० ॥ २६ ॥ हसतां कर्मज बांधिया, रोयां हूटेजी
 नांय । सतगुरु देवे रे चेतावणी, चेतो चतुर सुजाण
 ॥ मा० ॥ २७ ॥ पडदे रहती जी पदमणी,
 सजती नित शृङ्गार । आखर उतखा जी धर्मरा,
 त्वारे नर २ री पणिहार ॥ मा० ॥ २८ ॥ चिहुं

॥ मा० ॥ ३६ ॥ ए गुण भार्या जी सुख लहे,
पावे मोक्ष प्रभान । देवलोक मांहि वासो मिले,
देखो नवनव ज्ञान ॥ मा० ॥ ३७ ॥ तिहां पिण
सुख जे सुर नणा, रत्नजडित आवास । गहणा
गांठा जी नया नया, अधिकी जोत प्रकाश ॥ मा० ॥
३८ ॥ सामायिक ने पोसा करो, सद्गुरो सुणो
रे बलाण । प्रतीते धर्म पालजो, तो पर भव अमर
विमाण ॥ मा० ॥ ३९ ॥ शीयल व्रत संजम
आदरो, निधो धरो मन माय । ज्यु सुख पामो
जो शाशवता, चित्ते चितवोजी ज्ञान ॥ मा० ॥
४० ॥ संवत् अठारे गुण्यासीये, जोडी मन शुद्ध
भार । वीर प्रभुजी इम कहै, छोड़ो आल जंजाल ॥
मान न कीजे रे मानवी ॥ ४१ ॥

कर्म सङ्काय ।

देव दानव तीर्थङ्कर गणधर, हरिहर नरवर
सबला । कर्म प्रमाणे सुख दुःख पान्या, सबल

हुवा महा निचला रे । प्राणी कर्म समो नही
 कोडे ॥ ७ ॥ आंरुडी ॥ १ ॥ आडीवर जी ने
 कर्म अद्या, वपे दिवस रया नृणा । वीर ने
 वारह वरस दु ल दीया, उपना ब्राह्मणी क्लार ।
 मा ॥ २ ॥ वत्तीस सदस देडांगे साद्वि,
 वकी मनस्कृमार । सोलह गेग डगीरमे उपना,
 कमे हिंगो ननु डार ॥ ३ ॥ साठ सदस मुन
 माना ७६० दिन, जो १ नवान नर जमा ।

पाशवती नारी, कर्त्ता पुन्य कदाचै । अह निजि
 मन्त्र मन्त्राण मे वामो निश्चा भोजन लावे रे ।
 १६ ॥ महम रिग्ग वृज पग्निनी, गत दिवस
 ग्ने अदनी । मोल्लह फला शशिधर जग चाहवां
 दिन दिन जावे यदनी रे ॥ १७ ॥ उम अनेह
 लक्ष्मी नर कम, नाज्या ने पिण माजा । रुदि
 १४ हग जोडिनं विनये नमो नमो कमे मन्त्राणा
 १ । १८ ॥

॥ ३ ॥ ग्रह गोचर पिडा टल जाय, दोषी दुशमन
 लागे पाय । सगलो भांगे मनको भरम, समकित
 पामी काटे करम ॥ ४ ॥ सुणो प्रभुजी मांहरी
 अरदास, हूं सेवग धे पूरवो आश । मारा मनरा
 चिंत्या कारज करो, चिंता अरध विघनज हरो ॥
 ५ ॥ मेढो प्रभुजी म्हांरा आल जंजाल, प्रभुजी
 मुक्कने नैन निहाल । आपरी कीरत ठामो ठाम,
 प्रभुजी सुधारो म्हारो काम ॥ ६ ॥ जे नर नित्य
 प्रभुजीने रटे मोत्यां बंध सम फूला कटे । चोब
 लावण दोनूं भड जाय, विना औपध कट जावे
 छाय ॥ ७ ॥ प्रभुजीरा नाम धी आंख्या निरमल
 धाय, धुंध पडल जाला कट जाय । कवल्यो
 पिलीयो भड भड पडे, शान्त जिनेश्वर साता करे ॥
 ८ ॥ गरमी व्याध मिटावे रोग, सेण मितररो
 मिले संजोग । इसडो देव न दीसे और, नहीं
 चाले दुशमणरो जोर ॥ ९ ॥ लूटेरा सब जावे
 नास, दुरजन फिटी हुवे दास । शान्त प्रभुरी महिमा
 घणी, किरपा कीजो तीन भुवनरा धणी ॥ १० ॥

अरज कसंछं जोड़ी हाथ, थां छानी नहीं दूजी
 बान । दूर गद्दीयाछो पोते आप, काटो प्रभुजी
 म्हांग पाप ॥ ११ ॥ म्हांग मनरा चाचा कीजे
 काज, गम्बो प्रभुजी म्हांगी लाज । थां समान
 जुगमें नहीं कोय, थांनं मिमल्यां मुल्य समत
 होय ॥ १२ ॥ थां आगे न चाले मृगीरो जोर,
 ताव तेजरो नांवे तोड़ । मरी मिटाईदो कर गो
 जान्त, तुम गुणां रो नहीं आवे अंत ॥ १३ ॥ तुमने
 मिमरो माधु मती, थांनं मिमरो जोगी जती ।
 संकट काटो गम्बो मान, अचिचल पदवी आपो
 बान ॥ १४ ॥ समत अटारं चोगणवे जाण,
 दण मानवो डवक यत्नाण । जहर जावलो चंतरं
 मास । दं छं प्रभु चरणारो डाम ॥ १५ ॥ अथ
 स्वभाव यणाया छंद, काटो प्रभुजी म्हांग करमाग
 ६८ । जोय ग्योडं आपरी घाट, मनकी मगली
 बिना घाट ॥ १६ ॥

पूज्य श्रीलालजी महर्षि की लक्ष्मी

श्री हुकम मुनि महाराज हुये बड़ भागी । महाराज किया उद्धार बनाया जी । गिरता उदग मुनि पाट चौध श्रीलाल दीपायाजी ॥ टेर ॥ उगणी सै हन्सीसे टोंक शहर के माही । महाराज पूज्यका जनम जो धाया जी । है ओस वंश धंय जिन कुल धन धन कहलाया जी । चुनीलालजी पिता दूध बहु पाये, महाराज सर्वको अधिक सुहायाजी । धन्य चांद कुंवरजी मान जिन्होंने गोद खिलाया जी (उडावणी) है क्या घातपणा में शरत मोहनगरी । जो देखे जिस कं टागे अतिही प्यारी । है छोटी बयमे संगत साधांकी धारी । शुद्ध गरभा पानी मिथ्या मनको टारी । महाराज जैन का भक्त कहाया जी ॥ शिवलाल ॥ १ ॥ फिर कीवी सगाई मान और भाई ने, महाराज नार सुन्दर परणायाजी । है मान कुंवरिजी नाम रूप गुण सम्पन्न पायाजी । फिर थोड़ा दिनोमे चढ़ा अलुल

जाणोजी । क्या कानिक सुदीके मांह, शहर
 रतलाम पिहाणोजी । मुनि विनय वैयावच कर
 साता उपजाई । महाराज पूज्य मन अति हर-
 षाणोजी । हे लेवो पूज्य पद आज स्वयं मुग्न इम
 पुरमाणोजी (उडावणी) जब गुरु आग्रहसे पूज
 पद मुनि लीनो । पूज मस्तक हाथ रग्न हित उपदेश
 बहु दीनो । मुनि शुद्ध भावसो अमृत सम रस
 भीनो । चारो संघ सन्मुख भोलावण बहु दीनो,
 महाराज चौध पूज्य स्वर्ग सिधायजी ॥ शिवला०
 ॥ ४ ॥ मुनि सम भाव शांति मूरति है प्यारी ।
 महाराज सन्पगुण अधको पायाजी । ये भक्तवच्छल
 मुनिराज सर्वको अधिक सुहायाजी । रतलाम शहर
 चौमासो पूरण करके महाराज फिर इन्दौर
 सिधायजी । कई ग्राम नगर पुर विचर बहु उपकार
 करायाजी (उडावणी) मुनि जहां जावे नहां लागै
 सपको प्यारे । क्या अमृत वाणी मूरति मोहन गारे ।
 मुनि जहां विचरै जहां करै बहुत उपकारे । नपत्या
 स.माइक पोषभ व्रत बहु धारे, महाराज भव्य मन

करवाये । महाराज अनिश्चय गुण अधिका पायाजी ।
 कोई सुरत देग्व डिल मस्त हुवै धर्म चिन लायाजी ।
 (उडावणी) जो घग्वाण सुणवा एक बार कोई
 जावै । फिर नहीं कहणेका काम, तुरत चल आवै ।
 उपदेश सुणके डिल उनका हुलसावै । करे आपसुं
 पञ्चख्यान त्याग मन भावै । महाराज आपका गुण
 बहु छायाजी ॥ शिवला० ॥ ११ ॥ फिर कोटेसे
 अजमेर जो आप पधारे महाराज नवठाणें से
 आयाजी । बहु हाव भावके साथ चौमासो जाण
 मनायाजी । अजमेर पधासा सुणके भट मै आया ।
 महाराज दर्शन कर प्रसन्न धायाजी । हुवो हरष
 हिये उल्लास जोड कथ गुण मै गायाजी (उडावणी)
 कहे लाल कन्हैया बीकानेरका वासी । अजमेर
 लावणी जोडके गाई खासी । चौसठ साल आपाह
 एकम सुदि भासी । सन श्रावक श्राविका सुणके
 हुआ हुलासी । महाराज प्रत्यक्ता जश सवायाजी ।
 शिवलाल उदय मुनि पाट चौथ श्रीलाल दीपाया
 जी ॥ १२ ॥ ॥ इति सम्पूर्ण ॥

पूज्यश्रीश्री १००८ श्रीलालजी

सहायक का मन्त्र

महाग पन्थ परम उपासी मुक्तनं तारजोजी,
श्री श्रीलाल मुनो परवासी पार उताजोजी ॥
० दूर ॥ जन्मपा दारु नगर मन्त्रागी, ज्वांगी चांद
रुवर मन्त्रागी । पिता चुन्नीलाल अवतागी, दीक्षा
चामालीम में बारी, मुक्तनं तारजोजी० ॥ १ ॥
प्रथम ब्रह्म मुनी अवतागी, और जिवलाल उदे-
चन्द बारी ।

शिवपुर ठाम । धूर आदि मकाड, अंत अलक्ष
 मुनि नाम ॥ ७१ ॥ बली कृष्णगायनी, अग्रमहिषी
 आठ । पुत्र बहु दोये, संच्या पुण्यना ठाठ ॥ ७२ ॥
 यादवकुल सतियां, टाली दुग्ध उचाट । पढ़ोंता
 शिवपुर में, ए छै सूत्र नो पाठ ॥ ७३ ॥ श्रेणिक
 नी राणी, कालियादिक दश जाण । दश पुत्र
 वियोगे, सांभली वीरनी बाण ॥ ७४ ॥ चंदनवाला
 पै संजम लेई हुआ जाण । तप करी देह भोसी,
 पढ़ोंता छै निर्वाण ॥ ७५ ॥ नंदादिक तेरह,
 श्रेणिक नृपनी नार । सबली चंदनवाला पै, लीधो
 संयम भार ॥ ७६ ॥ एक माम संधारे, पढ़ोंता
 मुक्ति मभार । ए नवं जणानो, अंतगड़मां अधि-
 कार ॥ ७७ ॥ श्रेणिकना बेटा, जालियादिक तेवीस ।
 वीर पै ब्रत लेई ने, पाल्यो विश्वावीस ॥ ७८ ॥
 तप कठन करी ने, पूरी मन जगीश । देवलोके
 पढ़ोंता, मोक्ष जासे तज रीश ॥ ७९ ॥ काकंदीनो
 धनो, तजी बचीसे नार । महावीर समीपे, लीधो
 संयम भार ॥ ८० ॥ करी छट छट पारणो; आंबिल

बीनतीड़ी अवधारो, म्हे तो सदा दास चरणारो,
मुझने० ॥ ५ ॥ म्हे तो शहर जोधाणे आया,
सम्बत सीतर मे सुख पाया । कानिक सुद पुनम
गुण गाया, केवे जोधकरण चरणारो चाकर,
मुझने० ॥ ६ ॥

अथ श्रीकर्मसुन्दरी स्तुति कृत ध्यानाः ।

प्रथम पद्म आशण धिर करी, पछै मन धिर
करी, धिपे कषाय श्री, चितनी लहर मिटायने,
अन्तः करण मे डम ध्यावणो । नमस्कार यावो
श्री अरिहन्त भगवान ने ते अरिहन्तजी केहवा छै
—सुरासुर सेवित, चरण कमल सर्वज्ञ, भगवन्त
जगन्नाथ जग जीवां ना तारक, कुगत मारग
निवारण, निर्वाण मारग पमाडण, निराह निरहंकार,
निसंग निर्मम, शान्त दान्त करुणा समुद्र, विशोच
उपगार सागर । अनन्त ज्ञान दर्शण चारि

રે જીવ જેહવો સિદ્ધ પરમાન્માનો સરૂપ છે ।
 તેહવો તાંહરો ચેનાનન્દ નો સરૂપ સના મે છે, રે
 નેનાનન્દ તાહરો સરૂપ કર્માં અછગો છે, મોહને
 ઉદય મલીન હોય રહ્યો છે, નિજ સરૂપ ભૂલિ પર
 સરૂપ મે રમ રહ્યો છે । ક્રોધ મે, માન મે, માયા મે,
 લોભ મે, રાગ મે, દ્વેષ મે, હાસ્ય રતિ અરતિ ભય
 સોગ દુગંઢા વદ બિકાર મે વગત રહ્યો છે, કર્મ વશે
 નરકાદિક ચ્યાર ગતિ, ચૌરાસી લાલ્લ જીવા જોની
 મે કુન્મારના ત્રાકની પરૈ પરિભ્રમણ કરિ રહ્યો છે ।
 ભ્રમ્મ તૃષા શીત તાપ હર્ષ સોગ જંત નીચપણો પામી
 રહ્યો છે ચવદે ગજ લોક મે જન્મ મરણ કરિ પરિ
 રહ્યો છે (ગાથા) ન ત્તા જાર્દ ન ત્તા જોળી મ ન
 ઠાળં નતં કુલં ન જાયા ન મૃત્વા જચ્છ સવે જીવા
 અનન્ત સૌ ।

રે જીવ ત્ હિતા મૃઠ ચોરી મૈથુન પરિગ્રહ જાવ
 નિધ્યા દ્રશન સત્ય એ સેવી પાપ ઉપારજી આત્મા
 ખારી કરી નરકે ગયો, તે નર્ક કેહવી છે મહા ઘોર
 શ્દ્ર અન્ધકાર નહિત બિયાનગી છે, નિતાં પેટના

असंख्याती अवसर्पिणी उत सर्पिणी लग्नुणीज्यो
 खदिज्यो दुःख भोगव्या एवं अप्य मे तेउ वाउ में
 वनस्पति में गयो तिहां अनन्ता भव किया सूक्ष्म
 वादर प्रत्येक साधारण मे अनन्ती अवसर्पिणी
 क्षेत्र धकी अनन्ता लोकाकाश प्रमाणे असंख्याता
 पुङ्गल प्रावर्तना ताई स्थौ निगोद मे गयो तिहां
 अंगुल ने संख्यात मे भाग मात्र एक शरीर मे
 अनन्ता भेदे अनन्ता जीव रहै छै तिहां रहिने
 एहवी सकराई भोगवी एक सुहरत मध्ये ६५०००
 हजार ५०० सौ ३६ भव करे एहवी जन्म मरण
 नो वेदना भोगवी छेदन भेदन पासी बले बेइन्द्री
 तेइन्द्री चौइन्द्री में लाग्वां भव किया अनेक दुःख
 भोगव्या बले निर्गन्ध पंचेन्द्री मे जलचर धलचर
 उरपुर भुजपुर खेचर मे लाग्वां भव किया शस्त्र
 धकी भूवो भूख तृपा वध वन्ध परवशादि अनेक
 दुःख भोगव्या घली इम रहते २ घणा कष्टे ३६
 जो भिनख जन्म पायो तो नो मान नाइ लइने
 दुःख सखा प्रथम उत्पति समय तिहां में ईने

(गाथा) 'पुरसा तुम मेव तुम्मीतं' हे पुरुष
 तांदरो तूहीज मित्र छै तूं पाहिर मित्र हिणस्यूं बछे छै
 (गाथा) मितं मीछसी अपाकपावीक्ताय" इत्यादिक
 अतो जीव ए तांदरी आत्मांज कर्मा री कर्ता,
 एहीज भुगतता, एहीज बखेरता, एहीज दुःखनी
 दाता, एहीज सुखनी दाता, एहीज बैरी, एहीज
 मित्र, एहीज पर उपकारनी करणहार, तिणस्यूं ज्ञान
 दर्शन चारित्र संहित आत्मा ऊपर परम प्रतीत
 राखिये, एह टाली ने हिण ही सचित अचित वस्तु
 ऊपर स्नेह न करिवो (गाथा) "असिणेह सिणेह
 करहं" जे आपस्यूं स्नेह करे छै, तांदरे त्यां स्यूं पिण
 निस्नेह पणे रहवो, ए केवली नो बचन छै, बले
 कछो छै (गाथा) "स्नेह पासा भयंकरा" ए स्नेह
 रूपी पाशा महा भयना करणहार छै, तिणसूं रे
 जीव ए वीतराग नो बचन बिमासी तूं हिणस्यूं ही
 स्नेह मत कर जगतना सर्व जीवांस्यूं तांदरे पूर्वे एक
 २ स्यूं अनन्ता २ सगपण क्रिया, इम जाणी राग
 टालिये रे जीव तूं तांदरा निज गुण निहाल, तांदरा



सुखदायनी तेहनी अगीर मय्यां गेग उपशमै
 पढ़वा म्त्री-सगते सुख भोगवी, उः लण्ड नो
 राज्य भोगवी सात मो वषे नो आउलो पाली,
 रुमे उपार्जी सातमी नहे तेनीस सागर ने आउते
 गयो सात सावपा मे २८ कोड १२ कोड ३८ लाप
 ८० हजार व्यास व्यास लिया पहे ही व्यास
 व्यास व्यास नाही नी मास हेह ही ११ लाप
 पद १३ हजार पद २०० सी पद २१ पद पहे
 पद ना नी-प नाग पदमा पद ही पदना भोग पा
 पद व्यासाव्यास ।

उल्लिखित आचार । श्री गोर वनाण्यो भग्न भक्तो
 अणगार ॥ ८१ ॥ एक मान मगारे, सर्वार्थसिद्धि
 पहोत । महाविदेह क्षेत्रमां, हरसे भवनो अन्त
 ॥ ८२ ॥ भक्ता नी रीते, हुवा नवंड संत । श्री
 अनुत्तरोववाईमा, भाग गया भगवंत ॥ ८३ ॥
 सुमाहु प्रसुप्त, पांच पाचसे नार । तजि वीर पै
 लीधा, पच महाव्रत सार ॥ ८४ ॥ चारित्र लेई ने,
 पावगो निरतिचार । देवलोके पहोना, सुखविपाक
 अधिकार ॥ ८५ ॥ श्रेणिकना पौत्रा, पोमादिक
 हुवा दश । वीर पै व्रत लेई ने, काय्यो देहीनो कस
 ॥ ८६ ॥ सजस आराधी, देवलोकमां जई वस ।
 महाविदेह क्षेत्र मां, मोक्ष जासे लेई जश ॥ ८७ ॥
 बलभद्रना नन्दन, निषभादिक हुवा धार । तजी
 पचास अतेउरी, त्याग दियो संसार ॥ ८८ ॥
 सहु नेमि समिपे, चार महाव्रत लीध । स्वार्थसिद्धि
 पहोना, होसे विदेह मे सिद्ध ॥ ८९ ॥ धनो ने
 सालिभद्र, मुनीश्वरां री जोड । नारीना बन्धन,
 तत्क्षण न्हाव्या तोड ॥ ९० ॥ घर कुटुम्ब कवीलो,

समर्थ, पहले देवलोक डोंग सागर नो आउलो
 देवनानो, एक देवता रे आठ देवाङ्गना एकेकी देवी
 सोलह सोलह हजार महा अद्भुत आश्चर्यकारी
 ज्योति कान्ति मनोहर भेष लावण्य जोवन नी
 धरनहार शिणगार नो घर पहवा उतर बैक्रीय रूप
 बैक्रीय करै एतला रूप देवता करे ते देवी केतली
 भोगवे २२ कोड़ो कोड़ २५ लाख कोड़ ७१ हजार
 कोड़ ४०० सै कोड़ २२ कोड़ ५७ लाख १४ हजार
 २२० देवी भोगवै तो पिण तृप्ति न हुबो तो रे
 जीव ए मिनसनों उदारिक शरीर सम्बन्धी महा
 जगला अल्प कालना सुख थी स्पं तृप्त हुसी । इम
 जाणी ने रुचि उतारवी ।

रे जीव आरज खेज उत्तम कुल दीर्घ आउलो
 परी इन्द्री सत्गुरांनी संगत बीतराग ना बचना नो
 सांभहदो बीतराग ना बचन बेहवा छै सत्य छै,
 उत्तम निर्मल निर्दोष सकल कारण नी निद्रि ना
 करणहार जन्म मरण ना मिटावण हार एकान्त
 रिवकारी—रे जीव ज्यां लग जरा नहीं रोग नर ।

साधु मुनिराजके २२ परीपह ।

११ परीपह वेदनी कर्मके—

क्षुधा १ तृषा २ सीन ३ उष्ण ४ डंस मसक
५ चर्पा (चालने का) ६ औंया (बैठने का) ७
बध (छेदन भेदन का) ८ रोग ९ जलमेल १०
नृण स्पर्श ११

२ जानावरणी के—

अज्ञान (सीगने सूं बोल चढ़े नहीं) १ प्रज्ञा
(जाण पणे को अभिमान न करे)

मोहनी के ८—

१ दर्शन मोहनी को—

दर्शन (वीतराग प्ररूपित धर्म सत्ता जाने) १

७ चारित्र मोहनी के—

अरति (धर्म में राजी रहै अरतिपणो न लावै)
१ अच्छेला (वस्त्र मोटो मिलै अधवा नहीं मिले
तो सम भाव रखे) २ स्त्री (स्त्री देखकर
चित्त दश भे राखै) ३ निषया (ध्यान करनां

जाण, भजन कियां होय अमर विमाण । देव
लोक सुखरा भिणकार ॥ वां० ॥ ४ ॥ स्वामी
सुधर्मा वीरजी रे पाट जनम मरण सेवगरा काट ।
मुझने आप तणो आधार ॥ वां० ॥ ५ ॥ मण्डी
पुत्रने मोरीज पूत, मुक्त जावणरा कीधा सुत ।
त्रिविधे त्यागा पाप अडार ॥ वां० ॥ ६ ॥ अकम्पित
ने अचलज भ्राता, वीरजीने वचने रछाज राता ।
चवदै पूरवना भण्डार ॥ वां० ॥ ७ ॥ मैतारजने
श्रीप्रभास, मोक्ष नगर मे कीधो वास । जपतां हुवै
जयजयकार ॥ वां० ॥ ८ ॥ ए इग्यारे ब्राह्मण जान,
चम्पालीसे निकल्या साथ । ज्यां कर दीनो खेवो
पार ॥ वां० ॥ ९ ॥ इण नामे सहु आशा फलै,
दोषी दुश्मन दरे टलै । ऋद्ध वृद्ध पामे सुखसार
॥ वां० ॥ १० ॥ इण नामे सब न्हासे पाप, नितरो
जपिये भवियण जाप । चित्त चोखे हिरदा मे धार
॥ वां० ॥ ११ ॥ समत अडारे तयालीसे जाण,
पूज जेमलजीरी अमृत वाण । चांमासे स्तवन
कियो पिपाड ॥ वां० ॥ १२ ॥ अनाद सुद नानु-

मलजी ने दीक्षा आप दीनी शररे बलुन्दे रे
 मांही । ससन उगणीसै नौणमेरा आना नीज
 निवार ॥ क्ष० ॥ ५ ॥ कर्बे नान्दमल नरणारो
 बाकर मुझ पर महर करीज्योजो । मै अज्ञानी कठिन
 कठोर । न काय को डेदनहार । सर्व पाप केरा
 करस्यं न्गान । बोर दिन होसो म्हारो परम
 कल्याण ॥ क्ष० ॥ ६ ॥





राजा धर्ममित, पद्म प्रभुजी नै वांदूं नित्त । पूर्व
भव जे सुन्दर वाहु तेह सुपास प्रणमूं जग नाहु
॥ ४ ॥ पूर्व भव द्रगवाहु सुनीश, चंद्र प्रभु
प्रणमूं निशदीस । जुगवाहु पूर्वभव जीव, प्रणमूं
सुबिध जिनंद सदीव ॥ ५ ॥ लड्डवाहु पूर्वभव
जास, श्री शीतल प्रणमूं हुलास । दीन राई कुल
तिलक समान, प्रणमूं श्री श्रेयांस प्रधान ॥ ६ ॥
इन्द्रदत्त मुनिवर गुणवंत, वासुपूज्य वांदूं भग-
वंत । पूर्वभव सुन्दर बडभाग वांदूं विमल धरी
मनराग ॥ ७ ॥ पूर्वभव जे राय महिन्द, तेह
अनंत जिन प्रणमूं सुखकद । साधु शिरोमण
सिंहरथ राय धर्मनाथ वांदूं चित्तलाय ॥ ८ ॥
पूर्वभव मेघरथ गुण गाजं, शान्तिनाथ जिनवर
चितलाजं । पूरवभव रूपी मुनि कहियै, कुंथुनाथ
प्रणम्यां सुख लहियै ॥ ९ ॥ राय सुदर्शन
मुनि विख्यात, वांदूं अरजिन त्रिभुवन तात ।
पूरवभव नन्दन मुनिचंद्र, ते प्रणमूं श्री महि
जिनंद ॥ १० ॥ सिंह गिरि पूरव भव सार.

धन कंचननी कोड़ । माम मामन्वमण नय, टालसे
 भवनी खोड़ ॥६१॥ श्रीसुधर्मा स्वामीना शिष्य, धन्य
 धन्य जम्बू खाम । नजी आठ अन्तेउरी मानपिता
 धन धाम ॥ ६२ ॥ प्रभवादिक नारी, पहोंता शिव-
 पूर ठाम । सूत्र प्रवर्तावी, जगमां राख्युं नाम ॥
 ६३॥ धन्य डंडण मुनिवर. कृष्णरायना नन्द । शुद्ध
 अभिग्रह पाली, टाल दियो भव फन्द ॥६४॥ बली
 खंधक ऋषिनी, देह उतारी खाल । परीषह सहीने
 भव, फेरा दिया टाल ॥६५॥ बली खंधक ऋषिना
 हुआ पांचसे शिष्य । वाणीमां पिल्या, मुक्ति गया
 नज रीश ॥ ६६ ॥ संभुति विजय शिष्य, भद्र-
 बाहु मुनिराय । चवदे पूरवधारी चन्द्रगुप्त आण्यो
 ठाय ॥ ६७ ॥ बली आद्रकुमार मुनि, तथुलिभद्र
 नंदिपेण । अरणक अडमुत्तो, मुनीस्वरांनी श्रेण
 ॥ ६८ ॥ चौवीसे जिनना मुनिवर, संख्या अठा-
 वीस लाख । ऊपर सहस्र अड़तालीस, सूत्र परं-
 परा भाख ॥६९॥ कोई उत्तम बांचो, मोढे जयणा
 राख । उवाड़े मुख बोल्यां पाप लागे इम भाख

તીર ॥ ૨ ॥ પર્વતે ચક્રવર્તી થયા, સૂર્ય મંદિર
 નિર્મીત ॥ અજિતાદિત્ય તેવી સ જિજ્ઞાસુ ગણા મનુ
 મંદિરોત્તર ॥ ૩ ॥ વ્રત ભેદે પર્વત ચક્રવર્તી સૂર્ય
 મળ્યા મનમુગ્ધ ॥ પર્વતે મળે તેવી સ જિજ્ઞાસુ મળ્યા
 ઉગ્રાચારી ॥ ૪ ॥ રીતે મળ્યા નિર્મીત મંદિરોત્તર,
 થીતે મળે મુગ્ધ મળ્યા ॥ નિર્મીતે ચક્રવર્તી રીતે
 નિર્મીતે મળ્યા મળ્યા મળ્યા ॥ ૫ ॥

राजा धर्ममित्र, पद्म प्रभुजी नै बाई' नित्त । पूर्व
 भव जे सुन्दर बाहु तेह सुपाम प्रणमं जग नाहु
 ॥ ४ ॥ पूर्व भव दगबाहु सुनीश चद्र प्रभु
 प्रणमूं निशदीस । जुगबाहु पूर्वभव जीव, प्रणमूं
 सुविध जिनंद सदीव ॥ ५ ॥ लहबाहु पूर्वभव
 जास, श्री शीतल प्रणमं हुलास । दीन राई कुल
 निलक समान, प्रणमूं श्री श्रेयांस प्रधान ॥ ६ ॥
 मन्ददत्त सुनिवर गुणवंत, वासुपत्य बाई' भग-
 वंत । पूर्वभव सुन्दर बडभाग बाई' विमल धरी
 मनराग ॥ ७ ॥ पूर्वभव जे राय महिन्द, तेह
 अनंत जिन प्रणमूं सुमचंद । साधु शिरोमण
 तिहरथ राय, धर्मनाथ बाई' वितलाय ॥ ८ ॥
 पूर्वभव मेघरथ गुण गाजं, शान्तिनाथ जिनवर
 वितलाजं । पूर्वभव रूपी सुनि करिपै, कुंधुनाथ
 प्रणम्यां सुत लहियै ॥ ९ ॥ राय सुदर्शन
 सुनि विख्यात, बाई' अरजिन त्रिभुवन तात ।
 पूर्वभव नन्दन सुनिचंद, ते प्रणमूं श्री महि
 जिनंद ॥ १० ॥ तिह गिरि परब भव सार.

કાલ ૩ જી ૧

કાલ રાગ રેલાગ

ચંદ્રાનન જિન પ્રથમ જિનેશ્વર, રૂઝા શ્રીસુચંદ
 ભગવન્તક । અગિયસેણ ત્રીજા તીર્થંકર, ચૌથા
 શ્રી નન્દસેણ અરિહંતક ॥ ત્રિકર્ણ શુદ્ધ સદા જિન
 પ્રણમું ॥ ૧ ॥ ઠેરવ મેત્ર તળારે ચૌવીસક,
 અષ્ઠમાદિક સ્વામી અતુલન દુવા, એક સમૈ જન્મ્યા
 જગદીશક ॥ ત્રિ૦ ॥ ૨ ॥ પંચમા ઇસિદિણ
 ધુળીજૈ, ચવહારી દટ્ટા જિનરાયક । સૌમ-
 ચંદ સાનમા જિન સનહં શુત્તિસેન આઠમા
 સુપસાયક ॥ ત્રિ૦ ॥ ૩ ॥ નવમા અગિયસેણ
 જિન પ્રણમું, દશમા શ્રી શિવસેણ ઉદારક । દેવ
 સમા ઇગ્યારમા ધ્યાજં, ચારમા નિશ્ચિન્ન સત્ય
 સુલકારક ॥ ત્રિ૦ ॥ ૪ ॥ તેરમા અસંજલ જિન
 તારક, ચવદમા શ્રી જિનનાથ અનન્તક । પનરમા
 ઉપશન્ન નમીજૈ, સોલમાં શ્રી શુત્તિસેણ મહંતક ॥
 ત્રિ૦ ॥ ૫ ॥ સતરમા અતિપાત્ત સુળીજૈ પ્રણમું

जोड़ी प्रणमं ते पोह सम, नाम कहं हिव जे
परमिद्वक ॥ त्रि० ॥ १२ ॥

ढाल ४ थी ।

॥ राग वन्यासरी ण्डेशी ।

पोह सम प्रणमं ऋषभ जिणेश्वर, श्री मरुदेवा
सिद्ध सुहंकर । चौरासी गणधार सिरोमणि,
उमभ सेण मुनिवर प्रणमं सुखभणि ॥ १ ॥
॥ उल्लालो० ॥ सुखभणी प्रणमं बाहुबल मुनि,
सहंस चौरासी मुनि । बीस सहंस प्रणमं केवली
वले सिद्ध थया त्रिभुवन धणी ॥ तीन लाख
समणी धुर नमं, नित नाम ब्राह्मी सुन्दरी ।
सहंस चालीसे केवली वले, नमं भ्रमणी चित्त
धरी ॥ २ ॥ आरीसं घर भरत नरेसर, ध्यान
षले कर केवल लहे वर । सहस दसे संघाती
नरपति, विचरे जगमे प्रणमं शुभ मति ॥ ३ ॥
॥ ऊ० ॥ शुभ मति जम्बूद्वीप पन्नती वग्वानियै,
भरतनी परं लहे केवल क्षेत्र द्रव जाणिये ॥

अजिया राणी सती । सागर लावै नवकोड अंतरे,
 केवली जे थया बन्दिये शुभ परे । शुभ परे सुमत
 जिणेश्वर गणधर, चमरकासवि अजया । नेऊ सहंस
 कोड सागर, विच नमूं जे सिद्ध थया ॥ श्रीपद्म-
 प्रभु शिष्य नामी, सुव्वय, सृषि बन्दिये, साहुणी
 ते रई नामे, प्रणम्यां दुस्त दर निकन्दिये ॥ १० ॥
 कोड सहंस नव सागर विच वली, प्रणमूं मुनिवर
 जे थया केवली । श्री सुपास विदर्भ गुणदधि
 प्रणमूं सोमा समणी गुण निधि ॥ ११ ॥ ज० ॥
 गुण निधि नवसे कोड सागर, अंतरे जे केवली ।
 तेह प्रणमूं भाव ह्यं ए, दुःख जावै सह टली ॥
 श्रीचन्द्र प्रभु दीन गणधर, सती समणा ध्याइये ।
 नेऊ सागर कोड अंतरे, केवली गुण गाइये ॥ १२ ॥

ढाल ५ मी ।

॥ सरत सत्तार अतार ८६ गिए—एदेशी ॥

सुवध जिणेश मुनिवरा ए, साहुणी बन्दिये
 बित्त उछाह ए । अंतरो कोड नव सागर सह

॥ १०० ॥ भग्न मरुदेवी माता, ध्यावो निर्मल
 ध्यान । गज हौं दे पागुं निर्मल केवल ज्ञान ॥
 १०१ ॥ भग्न आदेश्वरनी पुत्री, ब्राह्मी सुन्दरी
 दोग्य । चारित्र लेई ने, मुक्ति गयी सिद्ध होय ॥
 १०२ ॥ चौबीसे जिननी, बड़ी शिष्यणी चौबीस ।
 सती मुक्ति पत्नी, परी मन जगीश ॥ १०३ ॥
 चौबीसे जिननी, सर्व साधवी सार । अडनालीस
 लग्न ने, आठसे सितर हजार ॥ १०४ ॥ चेडानी
 पुत्री, राखी धर्मसुं प्रीत । राजेमनी विजया,
 भृगावती सुविनीत ॥ १०५ ॥ पद्मावती मयणरैहा,
 द्रौपदी दमयन्ती सीत । इत्यादि सतियां, गई
 जमारो जीत ॥ १०६ ॥ चौबीसे जिनना, साधु
 साधवी सार । गया मोक्ष देवलोके, हृदय राखो
 धार ॥ १०७ ॥ इण अडीद्वीपमां, घरडा नपस्वी
 बाल । शुद्ध पञ्च महाव्रतधारी, नमो नमो तिण
 काल ॥ १०८ ॥ ए जतियां सतियां ना, लीजे
 नितप्रते नाम । शुद्धे मन ध्यावो, एह तरणनो ठाम
 ॥ १०९ ॥ ए जतियां सतियांसुं राखो उज्ज्वल

જિહાં ફાલિફ પત્રનો ચોટ માળી તિહાં ॥ ૧ ॥
 સ્વામી ઝીતલ જિન માન આનન્દ ૫, મતી
 મુલમા નમ તિત આનન્દ ૫ । ૫ફ માગર ફોડ
 તળો અતળો ફચો ૫ફમો માગર ઝળો ફ
 મપ્રચો ॥ ૨ ॥ મજન ઝવીન ઝમામઠ લાળ
 ઝપર ફાલિફ પત્ર ના ઝડ ઝળા ઝતર । શ્રીશ્રવાન
 મતિ માગર માગર માગર માગરો વેલે નાળ

धया, केवली वंदिये भाव भगते सया । विमल
जिन वन्दिये साध सिमन्धर वली, समणी धरणी
धरा आगम सांभली ॥ ७ ॥ गुरु सुदरशन
मुनि सागर दत्त ए, स्वयंभू हरि बंधव भद्र शिव
पत्त ए । नव सागर बिच अंतरे केवली, जे धया
ते सह वंदिये वलि वलि ॥ ८ ॥ स्वामी अनंत
जिन प्रणमिये जसु गणी, समणी पोमा नमूं
सुगुरु श्रेयांस मुनि । जीश अशोक भववीथ
सुप्रभ जति, भ्रात पुरुषोत्तम केशव नरपति ॥ ९ ॥
सागर च्यार नो अंतरो भाखिये, केवली वदिने
शिवसुख चाखिये । जिणवर धर्म अरिट्ट गणधर
कहूं, सती श्रमणी शिवा वान्दी शिव सुख लहू ॥
१० ॥ पूर्व भव कृष्ण गुरु ललित सु शिष्य ए, राम
प्रणमूं सुदरशण निश दीस ए । बंधव पुरुष
सिंह केशव भयो, आन्धव पंच सुमर पुढवी
गयो ॥ ११ ॥ सागर तीन बिच आंतरे भाखिये,
पूण पढ्योपम ऊणो करि दाखिये । तिहां कण
राय ऋषि मधव मुनिवर भयो, जे धन छोडिनै

મુન મયમ યયો ॥ ૧૨ ॥ ચાયો ચક્રીમર મનત
 કુમાર ન વડિયે અન રુગિયા અરિહાર ન । રૂપ
 અન્તર મુનિ મુનિ ગયા જિકે કેવલી વડિયે
 માવ મગત નિરુ ૧૩ ॥



गानन सुनिबर बन्द । १० आ० ॥ भक्ते
 निज निर नामगी माई । कर्म हरीति केवल
 गन्ना, पहुँचा निबहुन नामगी माई । २ ॥ श्री० ॥
 नव निधु खवटे रैन जिन म्यागी, चक्की श्री हरि-
 सेनगी माई । आनव इही सम्वर मगडी बेगे बगी
 दिव जेनगी माई । ३ ॥ श्री० ॥ बग्स बले इहाँ पंच
 गल अंगर, तिहाँ चक्की जयगयगी माई । बले अनेग
 हक्ते पहुँचा, ते बन्दू मम लायगी माई ॥ ४ ॥
 श्री० ॥ गौतम सहस्र सागर गाजं गम्भीर थम्भीर
 उदारगी माई अचल कंठिल अक्षोभ प्रसेण, दशमो
 विष्णु कुमारी माई ॥ ५ ॥ श्री० ॥ प्रोह सम
 प्रगन् श्री नेमीरवर, समग ते सहस्र अठार गी
 माई । बरदत्त आदि मुनि पनरै से, बान्दू केवल
 धार री माई ॥ ६ ॥ श्री० ॥ अक्षोभ सागर
 सहस्र बन्दू, हेमवन्त अचल सुबहरी माई । धरणि
 दुरण अभिबन्द आठमो भगवा इग्यारे अइरी
 माई ॥ ७ ॥ श्री० ॥ अम्बक विष्णु सुन धारणी
 अइल, सुनिबर एह अठार री माई । आठ आठ

पलदेव धारणी पूनरी माई । बीस बरस संयम
 धरी सीख्या, चवठे पूरव सूत्र री माई ॥ १५ ॥
 रुक्मणी कृष्ण कहुं कुमर परजन्त, जम्बुवती सुत
 सम्परी माई । परजन्त सुत अनिरुद्ध अनोपम,
 जास वेद रवि अम्बरी माई ॥ १६ ॥ श्री० ॥
 समुद्र पिजै शिवा देवी रा नन्दन, सच नेमी दृढ़
 नेम री माई । वारे अगै सोला बरसे, रमणी
 पचासे तेम री माई ॥ १७ ॥ श्री० ॥ समुद्र-
 विजय सुत मुनि रहनेमी, ए सहु राज कुमाररी
 माई । कर्म हणीने मुक्ते पहुता ते प्रणमूं वारम्बार
 री माई ॥ १८ ॥ श्री० ॥ यक्षणी आद दे
 शिव्यणी समणी, आराज्यां सत्स चालीस री
 माई । साधव्यां सिद्धि तीन सत्स ते, वान्द्रूं कुमति
 टालीसरी माई ॥ १९ ॥ श्री० ॥ पौमा ने गौरी
 गन्धारी, लखमणा सुसमा नाम री माई । जम्बु-
 वती सतभामा रुक्मणी, हरि रमणी अनिराम री
 माई ॥ २० ॥ श्री० ॥ मूलमिरी मूलदत्ता वेजं,
 सम्प कुमर री नार री माई । अन्तगट अगे

धीरभद्र जस आदि दे, सिद्धा सहस्र प्रमाण । तेह
 मुनिवर वन्दतां, हुवे परम कल्याण ॥ साधवी
 संख्या सह अडतीस, सहस्र वखण् पुष्पचूलादिक
 सहस्र दो, सिद्धि ते मन आण् ॥ २ ॥ समणी
 सुपासिया मीळसी, भाषी धर्म चौ जाम । ए
 अधिकार कळो, श्री ठाणांग सुठाम ॥ चौदश
 पुर्वी बली, चौनाणी केशी कुमार । परदेशी
 प्रतिबोधिगो, कीभो बहु उपगार ॥ ३ ॥ वरस
 अठाइसौ अन्तरो, सिद्धा साधु अनेक । ते सह
 धंद मुविनय मूं, आणी चित्त विवेक ॥ मुनिवर
 चौदे सहस्र गुरु, प्रणमूं श्री महावीर । सातसौ
 केवली वन्दिये, गणधर एकादश धीर ॥ ४ ॥
 इन्द्रभूती अग्निभूती, तीजा वान्द वाइभुई । विगत
 सुधर्म वन्दतां, मुक्त मति निर्मल होई ॥
 मंडीपूत मोरीपूत, अकम्पित नित शिवदास ।
 १, प्रणमूं श्री प्रभास ॥ ५ ॥
 सजई नोजनेय । सेतन
 संख कह्ये ॥ धीर

भाव । एम कहै जयमलजी. एहिज नरगनो डाव
 ॥ ११० ॥ संवन अठारन. वर्ष माने मिरदार ।
 गढ़ भालोगामां. एह कह्यो अधिकार ॥ १११ ॥

❀ अथ चौबीसी पद ❀

१-श्री अद्वैताथजी का स्तुत ।

॥ उमादे मटियाणी ॥ ण्डेजी ॥

श्री आदीश्वर स्वामी हो, प्रणमं शिरनामी
 तुम भणी । प्रभु अन्नरजामी आप । मोपर महार
 करीज हो, मेटीज चिन्ता मन नणी । म्हारा काटो
 पुरङ्कित पाप ॥ श्री आदीश्वर स्वामी हो ॥ देर ॥ १ ॥
 आदि धर्मकी कीयी हो. भर्तृक्षेत्र सर्पणी काल
 में । प्रभु जुगलिया धर्म निवार । पहिला नरवर १
 मुनिवर हो २. तीर्थङ्कर ३ जिनहुवा ४ केवली ५ ।
 प्रभु तीर्थ थाप्या चार ॥ श्री ॥ २ ॥ मा मरुदेव्या
 धारी हो, गज हाँदे मुक्ति पधारिया । तुम जनम्यां

वीरभद्र जस आदि दे, सिद्धा सहंस प्रमाण । तेह
 मुनिवर वन्दतां, हुवे परम कल्याण ॥ साधवी
 संख्या सह अडनीस, सहंस बखणं पुष्पचूलादिक
 सहंस दो, सिद्धि ते मन आणुं ॥ २ ॥ समणी
 सुपासिया सीभसी, भाषी धर्म चौ जाम । ए
 अधिकार कखो श्री ठाणांग सुठाम ॥ चौदश
 पुर्वी वली, चौनाणी केशी कुमार । परदेशी
 प्रतियोधियो, कीधो बहु उपगार ॥ ३ ॥ वरस
 अठाइसौ अन्तरो, सिद्धा साधु अनेक । ते सह
 बंदू सुविनय सुं, आणी चित्त विवेक ॥ मुनिवर
 चोदे सहंस गुरु, प्रणमूं श्री महावीर । सातसौ
 केवली बन्दिचे, गणधर एकादश धीर ॥ ४ ॥
 इन्द्रभूती अग्निभूती, तीजा बान्दूं वाइभुई । बिगत
 सुधर्म बन्दतां, मुक्त मति निर्मल होई ॥
 मंडीपूत मोरीपूत, अकम्पित नित शिवदास ।
 अचल भ्राता मेतार्य, प्रणमूं श्री प्रभास ॥ ५ ॥
 वीर गण वीरजसा नृप, संजई नोजनेय । सेतन
 सम्य उदायण, नरपत संख कहैय ॥ वीर

पिङ्गल नै शिवराजो जी । काल उदाई अँवन्तो
 मुनि वन्दतां सीभै काजो जी ॥ ४ ॥ नि० ॥
 मकाई मुनि किङ्किम वन्दिये, अर्जुन माली हुलासो
 जी । काशव खेमनि धृतहरि जाणिये, केवल रूप
 कैलाशो जी ॥ ५ ॥ नि० ॥ मुनि हरचन्द वार तियै
 वलि, सुदरशन पूरण भद्दो जी । साध समण भद्र
 समता आदरै, सुपइठ समय समन्दो जी ॥ ६ ॥
 नि० ॥ मेह मुनीश्वर अँवन्तो मुनि, राय ऋषि
 अलक्षो जी । श्री जिन शिष्य ए सह्य मुक्ते
 गया, सेवै सुर नर सको जी ॥ ७ ॥ नि० ॥
 सहंस छतीसे समणी चन्द्रणा, आद दे चवदे सै
 सिद्धो जी । देवानन्दा जननी वीरनी, केवल
 ज्ञान समिन्दो जी ॥ नि० ॥ नित २ वन्दूं
 समणी ए सह्य ॥ ८ ॥ समणी जैवन्ती पढम सिक्का-
 तरी, सिद्धि केवल पामोजी । नन्दा नन्दवती
 नंदोतरा, बले नन्दसेणिया नामो जी ॥ ९ ॥ नि० ॥
 मरता समरता मरा मरना नमूं, मरदेवा बले
 जाणोजी । भद्रा सुभद्रा सुजाया जिन तणी,

वैशाली सावण, पिङ्गल नाम निहन्त । परवायक
 पूछ्या, खन्धक समय पहन्त ॥ २ ॥ काली
 पुत्र मेहल आनन्द ऋषये ज्ञानी । वले कासव
 चौधो, धिवरां पास सन्तानी ॥ ३ ॥ मुनि तीसग
 कुन्दत बले नियंती पूत । धन नारद पुत्र मुनि,
 सामहती संयुक्त ॥ ४ ॥ मुनि क्षत्र सर्वण
 भुई, क्षिपर कण्ठो आनन्द । जिन ओसो ल्यायो,
 धन २ सिंहो मुनिन्द ॥ ५ ॥ वले पूछ्या जिनने,
 लेश्यादिक बहु भेद । गुण गाऊं महामुनि
 माकंडी पुत्र उमेद ॥ ६ ॥ हिव श्रेणिक सुत
 कहूं, जाली कुमार मयाली । उवयाली पुरससेण,
 वारिसेण आपदा टाली ॥ ७ ॥ देहदन्त नै
 लठदन्त, धारणी नन्दन होय । वेहल नै वेयास,
 चेलणा अङ्गज दोय ॥ ८ ॥ इक नन्दा नन्दन,
 मुनिवर अमय महन्त । देहसेण नै महासेण,
 लठदन्त नै गुढदन्त ॥ ९ ॥ सुधदन्त कुमार
 हल्ल, द्रुम नै द्रुमसेण ॥ गुण गाऊं महा द्रुमसेण,
 सिंह नै सिंहसेण ॥ १० ॥ मुनिवर महासेण

निण प्रति लाभ्यो मुनि पुष्करन्त, विदांघो यथो
 सु जान । तृण सम जाणी सहु गृह वान,
 आदरी आठे प्रवचन मात, भविषण तसु गुण
 गान ॥ ३ ॥ पूर्व भव नृपति धनपाठ, विसमण
 भद्र नै दान रसाल, देई शिवा शिव थाय ।
 संयम लेई ते मुनिराय, लटि केवल ने शिवपुर
 जाय, ते बन्दू मन लाय ॥ ४ ॥ पूर्वभव
 मेगरथ राजान, सुभर्म मुनि नै देई दान, भोजी
 भव जिनदास । संवर पाली जे यथा सिद्ध, केवल
 दरशन ज्ञान समिद्ध, बान्दू तेह उदास ॥ ५ ॥
 नेत्राई पूर्वभव जाण, संभृत भिजे नै दोन बवाण,
 तर ते । होई । चोर समोषे सयम
 ने, तता । तम हणी नै सोधो दिन प्रति
 जोई ॥ पूर्वभव नामदत्त धनेसर,
 सुनोसर, महिबल नाम कुमार ।
 ज्ञाना, भव सागर थी चैन
 दुगार ॥ ७ ॥ गृहपति हतो
 तलाग्यो जनि सतोष, नाम मुनि

जितशत्रु सुबुद्धि, कर्महणी तिण करी विशुद्धि,
ते बन्दूं विख्यात ॥ १३ ॥ मुनि जयघोष विजै-
घोष बांदूं, बले श्री नाम गृणापुत्र बांदूं । कमला-
वती इक्षुकार, पुत्र पुरोहित बले तसु नार, नाम
जसा जम्बेगे सारी, बन्दता नित जयकार ॥ १४ ॥

ढाल १३ कीर्ति ।

॥ चतुर विचारि रे—एकशा ॥

मुनि इसिदाम ने धनो बले बन्वाणिये रे, गुण
फवत्त कत्तिय संयुत्त । संठाण शालभद्र आनन्द
तेतली रे, दशार्ण भद्र अवनत ॥ १ ॥ मुनि गुण
गाइये रे० गावंता परमानन्द । शिव गुण साधने
करी अहो निश संपजै रे, भाजें भव भय इन्द
॥ २ ॥ मु० ॥ अणुत्तर अङ्गनी एहिज बीजी
ना रे एश् मुनिवर नाम । :

ही परमाण । पिता नाभ महाराजा हो भव देव
तणो कर नर धया । प्रभु पाग्या पढ निरवाण ॥
श्री० ॥ ३ ॥ भरतादिक सौ नंदन हो, बे पुत्री
ब्राह्मी सुन्दरी । प्रभु ७ धारा अंग जान । सगला
केवल पाया हो, समाया अविचल जोत मे । कांइ
त्रिभुवन मे विख्यात ॥ श्री० ॥ ४ ॥ इत्यादिक
षट् ताखा हो, जिन कुल में प्रभु तुम अपना ।
कांइ आगम मे अधिकार । और असंख्या ताखा
हो, ऊधाखा सेवक आपरा । प्रभु शरणा ही
आधार ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अशरण शरण कहीजै हो,
प्रभु विरढ विचारो सायवा । अहो गरीब निवाज ।
शरण तुम्हारी आयो हो हृ चाकर निज चरना
तणो । म्हारी सुणिये अरज अवाज ॥ श्री० ॥ ६ ॥
तू करुणा कर ठाकुर हो, प्रभु धरम दिवाकर जग
गुरु । कांइ भव दुख दुकृत टाल । विनयचन्दने आपो
हो, प्रभु निज गुण संपन सास्वती । प्रभु दीनानाथ
दयाल ॥ श्री० ॥ ७ ॥

जितशत्रु सुबुद्धि, कर्महणी निण करी विशुद्धि,
ते वन्दूं विख्यात ॥ १३ ॥ मुनि जयघोष विजै-
घोष बांदूं, वले श्री नाम मृगापुत्र बांदूं । कमला-
वती इक्षुकार, पुत्र पुरोहित वले तसु नार, नाम
जसा जम्बेगे सारी, वन्दता नित जयकार ॥ १४ ॥

ढाल १३ कीर्ति ।

॥ चतुर विचारिये रं—पदेशी ॥

मुनि इसिदास ने धनो वले बखाणिये रे, सुण
कवत्त कत्तिय संयुत्त । संठाण शालभद्र आनन्द
तेतली रे, दशार्ण भद्र अँवन्त ॥ १ ॥ मुनि गुण
गाह्ये रे० गावंता परमानन्द । शिव सुख साधने
करी अहो निश संपजै रं, भाजे भव भय द्वन्द
॥ २ ॥ मु० ॥ अणुत्तर अङ्गनी एहिज बीजी
वाचना रे, अँ दश मुनिवर नाम । नन्दी सूत्र में
साध सुभह पणे कल्या रे, नन्दीसेण अभिराम ॥
३ ॥ मु० ॥ विषम नन्दी फल अधिकार धनो मुनिरे,
धनो देव दिन तात । सुव्रता समणी गुरुणी शिष्यणी,

तेह ॥ १० ॥ मु० ॥ श्री जसोमद्र ने मुनि
सम्भूतविजें बलि रे, भद्रबाहु थूलभद्र । एम
अनेरा जिनवर आण माही हुवा रं, ते मुनि गाऊं
समुद्र ॥ ११ ॥ मु० ॥ काल अनन्ते मुनिवर
जे मुक्ते गया रे, संप्रति विचरे तेह । नाण
दर्शन ने चरण करण धुर धुरारे, श्री देव बन्दे
तेह ॥ १२ ॥ मु० ॥ कलश ॥ चौवीस जिनवर,
प्रथम गणधर चक्री हलधर जे हुवा । संसार
तारक केवली बलि समण समणी संथुवा ॥
संवेग श्रुत धर साध सुखकर, आगम वचने जे
सुण्या । ज्ञानचन्द्र गुरु सुप्पसाये, श्री देवचन्दे
संथुण्या ॥ १३ ॥

॥ श्री बड़ी साधु बन्दना सम्पूर्ण ॥



मोड़ो भगडा राइ सूं, काई घरजो फोगट बाद ॥
 स० ॥ ५ ॥ वर्षा चहन घग्वाण्योजी, जाणो घण
 बादल बीजली, काई नरपति चहन निशाण ।
 आच्छी रीत समाइजी सुखदाई रुंही आदरो, काई
 ए भ्रावक अहनाण ॥ स० ॥ ६ ॥ कोड भवारा
 कीभाजी उडावै पातक आपणा, काई अवल समाई
 एक । सुर नर पदवी पावैजी शिवपुर ना सुग्न लहे
 शाश्वता, काई आणन्द लील अनेक ॥ स० ॥ ७ ॥
 अफल दिहाडो जावैजी पाछो नही आवै आपरो,
 काई धर्म धिना करी हृन्द । सफल दिहाडो तेहिजी
 चिन देई धर्म समाचरो, काई जपो वीर जिणन्द ॥
 स० ॥ ८ ॥ करणी रुंही कीजैजी लाहो भल लीजै
 कोइ सूं, काई अवसर लाभो आज । काल अनन्तो
 दोहरोजी नही छै सोहरो जिन कणो, काई सारो
 आत्म काज ॥ स० ॥ ९ ॥ सम्बत अठारै गुणसठै
 जी तिथि मटासुदि भली सप्तमी काई शनिवार
 सुखदाय । चन्द्र भाण सराईजी समाई रुंही रीत
 सूं, काई चाइयास चित्तलाय ॥ स० ॥ १० ॥

४ ॥ राय प्रदेशीरे हुंतीम रे, स्वरिहन्ता नार ।
 इष्ट कांत वाली घणीम रे, सत्र मे अधिकार ।
 निज स्वारथ विन पापणीस रे, मारो निज भरतार
 रे ॥ मू० ॥ ५ ॥ जुटल आवक रे हुंतीम रे, दइता
 तीसने दोय । अग्नि मांती प्रजालियो सरे, दया
 न आणी कोय । माठी गतनी पाहुणीस रे, गई
 जमारो खोय रे ॥ मू० ॥ ६ ॥ ब्रह्मदत्त चकी
 तणीस रे, हुंती चूलणी मान । व्यभिचारण बूक
 गईस रे, दीर्घ राय के साथ । घात विचारी पुत्रनीस
 रे छै ए बहुली बात रे ॥ मू० ॥ ७ ॥ सहस्र विद्या
 त्रिगण्ड धणीस रे, रावण मोटो राय । सीता ने
 हरतां धकांस रे, बैठो लङ्का गमाय । घर फुट्यो
 बैरी हण्योस रे, धका नरक मे खाय रे ॥ मू० ॥
 ८ ॥ पदमोत्तर हुरमत गईस रे, गये कीचक ना
 प्राण । पाण्डव त्रिया द्रौपदीस रे मूल न राखी
 काण । माठी गत मरने गयोस रे, मारे छै जमराण
 रे ॥ मू० ॥ ९ ॥ जिणहपि ने जिनपालजीस रे,
 मंधव हुंता दोय । रेणा देवी रे वज्र पस्यास रे,

२-श्री अजितनाथजी का स्तवन ।

। इतिमन म गग माये न धिय ॥ पदेगो ।

श्री जिन अजित नमो जयकारी तुम देवनको
 देवजी । जय शत्रु गजाने विजिया गणी को,
 आत्म जान तुमैवजी । श्री जिन अजित नमो
 जयकारी ॥ दे० ॥ १ ॥ दृजा देव अनेग जगमें, ते
 मुक्त डाय न आवेजी । नर मन नर चित्त हमने
 एक, नुहिज अधिक मुद्रावैजी ॥ श्री० ॥ २ ॥
 मेव्या देव यणा भव न में, नो पिण गरज न
 मारी जी । अचकै श्री जिनगज मिल्यो नृ, पृष्ण
 पर उपकारीजी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ त्रिभुवन में जग
 उज्ज्वल नेरो, फल रक्षो जग जानेंजी । वंदनीक
 वृजनीक सकल लोकको, आगम एम बगवानें जी ॥
 श्री० ॥ ४ ॥ नृ जग जीवन अंतरजामी, प्राण
 आधार पियारे जी । सब विधिलायक संत महा-
 यक, भक्त बडल वृद्ध धारो जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥
 अष्ट मिट्टि नव मिट्टि को दाता, नो सम अवर न
 कोटि जी । वर्य तेज सेवक को दिन दिन, जेय तेध

ससार ॥ ए आंकडी ॥ मोह मिथ्यात की नीद में
जीवा, सुतो काल अनन्त । भव भव माहें तूं भट-
क्तियो जीवा, ते साम्भल विरतन्त ॥ जी० ॥ १ ॥
ऐसा केई अनन्त जिन हुवा जीवा, उत्कृष्टो ज्ञान
अगाध । इण भव धी लेनो लियो जीवा, कुण
बतावे धांरी आद ॥ जी० ॥ २ ॥ पृथ्वी पाणी अग्नि
मे जीवा, चौथी वायु काय । एक एक काया मझे
जीवा, काल असंख्याता जाय ॥ जी० ॥ ३ ॥
पंचमी काय वनस्पति जीवा, साधारण प्रत्येक ।
साधारण मे तूं बस्यो जीवा, ते साम्भल सुविवेक
॥ जी० ॥ ४ ॥ सुई अग्र निगोद मे जीवा, श्रेणि
असंख्याती जाण । असंख्याता प्रतर एक श्रेणि
मे जीवा, इम गोला असंख्याता प्रमाण ॥ जी०
॥ ५ ॥ एक एक गोला मध्ये जीवा, शरीर असं-
ख्याता जाण । एक एक शरीर मे जीवा, जीव
अनन्ता प्रमाण ॥ जी० ॥ ६ ॥ ते मां धी अनादी
जीवण जीवा, मोक्ष जावे दग चाल । एक शरीर
खाली न हुवे जीवा, न हुवे अनन्ते काल ॥ जी० ॥

ऊपर रहैं वेहु पाय । आंख्यां आटी मुष्टी वेहु जीवां,
 इम रखो भिष्टा घर मांय ॥ जी० ॥ १५ ॥ वाप
 विरज माता रुद्र जीवा, इसडो लियो थे आहार ।
 भूल गयो जन्म्यां पछै जीवा, सेवी करे अविचार
 ॥ जी० ॥ १६ ॥ ऊट कोड सुई लाल करे जीवा,
 चापै रुं रुं मांय । अष्ट गुणी हुवै वेदना जीवा
 गरभावासारे मांय ॥ जी० ॥ १७ ॥ जन्मतां हुवै
 कोड गुणी जीवा, मरतां कोडा कोड । जनम मरण
 री जीवडा जीवा, जाणजो मोटी खोड ॥ जी० ॥
 १८ ॥ देश अनारज ऊपनो जीवा, इन्द्री हीणी
 होय । आज्मो ओछो हुवै जीवा, धर्म किसी विध
 होय ॥ जी० ॥ १९ ॥ कदाचित नर भव पामियो
 जीवा, उत्तम कुल अवतार । देही निरोगी पायने
 जीवा, घरी खोयो जन्मवार ॥ जी० ॥ २० ॥ ठग
 फांसीगर चोरटा जीवा, धीवर कस्तूरी न्यात ।
 उपजी ने सुई जिसी जीवा, पंखी न रही कोई जान
 ॥ जी० ॥ २१ ॥ चवदेई राजलोक में जीवा, जनम
 मरणरी जोड । खाली बालाव मात्र ए जीव



पन्द्रह जात । भव जीवा मार देवे एकण जीवने,
करै अनन्ती घात ॥ ८ ॥ भव जीवां अर्थ अनर्थ
धर्म कारणे, जल ढोल्या बिन ज्ञान । भव जीवां
बाहिर शुचि बहुला किया, मांहे मैल अज्ञान ॥
९ ॥ भव जीवां वैतरणी लोही राधनी, तिणरो
तीखो नीर । भव जीवां तिणने डुबोवे तेहमे, छिन
छिन होय शरीर ॥ १० ॥ भव जीवां ढांढा ज्युं
चरतो सदा, नही जाण्यो तिथि वार । भव जीवां,
पान फूल रुख छेदतो, दया न आणी लिंगार ॥
११ ॥ भव जीवां वृक्ष तिहां कुल सांवली, तिणरी
वैसाणे छांय । भव जीवां पान पडे तरवारसा, टूक
टूक होय जाय ॥ १२ ॥ भव जीवां धन्धा में खूतो
रहे, जूती घररे भार । भव जीवां लोह तणे रथ
जोतरे, धरती धूप अंगार ॥ १३ ॥ भव जीवां
परनी छाती दाह दे, चोख्या वित्त बहुवार । भव
जीवां धन खाभो कुटुम्बियां, सहे एकलो मार ॥
१४ ॥ भव जीवां हाथ पांव छेदन करै, नाखे अंग
मरोर । भव जीवां पुकार करे किण आगले, वहां



ण संग पामे साता । तप्तमी सात निवारिये,
 कुपसन महा दुःखदाय । दुर्गति कारण शिव
 रिहसु काँई रक्त अजान अधाय प्रबल दुःख आप
 किया पावे ॥ वी० ॥ ७ ॥ रमणी रङ्गरानो मतवालो,
 लगावे आत्म ने कालो । सीख सतगुरु की नहिं
 लागी, अभोगति जाय कुमति रागी । अष्टमी आठूं
 नद नजो, अष्ट रिपु जड जार । आठूं गुण परगट
 हुवेस काँई, शिव सुन्दर सुखसार । द्विदुख मे
 फेर नहीं आवे ॥ वी० ॥ ८ ॥ जगन सहु इन्द्र-
 जाल जाणी, विषय तृष्णा नज वर प्राणी ।
 कषायानि अलगी कीजे, प्रवर ज्ञानानृत रस पीजे ।
 नवमी नव तत्व भणी, अद्वै यथार्थ सार । बाढ़
 अभङ्ग ब्रत आदरोस काँई, ध्यान विमल वर धार ।
 चले गुण येणी शुद्ध भावे ॥ वी० ॥ ९ ॥ कामिनी
 कनक फन्द फंसियो, लिप्त मोह जाल विषय
 रसियो । नरक फुल निगोद मे जार्, परम पीडा
 सरी संकटार् । दशमी दश विध आदरो, अनन्य
 धर्म सुविनीत । विनय उलम्भा बाधदास

पोष घीज पावे, सफल क्रिया करणी धावे । ज्ञान
 विन क्रिया सह करणी, तुच्छ फल छार लेप वरणी ।
 चौदह गुणस्थानक चढ़ो, क्षपक श्रेणि धर खन्त ।
 घाती कर्म खपायनेस काई, लहै केवल वृत्तन्त ।
 आत्मा परमात्मा धावे ॥ घी० ॥ १४ ॥ चरण
 तप भग दर्शन वाखूं, मुक्ति मग आख्या जिन
 वाखूं । एह विन सीभयो को नाहीं, काण्यो शिव
 पन्थ जैन मांही । पूनम पणदश भेद सूं, सीभा
 सिद्ध अनन्त । भाव धरी भजिये सदास काई,
 अरिहन्त श्रमण महन्त । प्रणमतां परमानन्द पावे
 ॥ घी० ॥ १५ ॥ गणाधिप जयवर यशधारी, भजो
 भवि सम्प्रति सुखकारी । सुगुरु सुप्रसाद सुमति
 आई, शहर सरदार मांही गाई । उगणीसै इक-
 तीस मे, भाद्रव सुदि गुरुवार । तिथि पण्टी कुम्भो
 भर्णस काई, सन्तोष मति अनुसार । सुणत
 आह्लाद हृदय आवे ॥ घी० ॥ १६ ॥

इति धली इन्द्र सुरांरो नाथ रे । उमगी रे ने
 सगला आंधन्यां रे, जोयजो काई अवरज वाली
 पान रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ जुगलियां रे तीन पत्थो-
 पननो आयुषो रे, लान्ही उथारी तीन कोस री
 जाय रे । कलकल पुरै ज्यनि दश जानना रे,
 पादल जिन गया दिलाय रे ॥ आ० ॥ ६ ॥
 भगवन्त चौथीसवां श्री वर्द्धमानजी रे, शकेन्द्र
 सोल्यो इस्तडी बाय रे । स्वामी दोय घडी आयुने
 बधारल्योरे, जिनि यह भस्मग्रह टल जायरे ॥ आ०
 ॥ ७ ॥ बलना भीवीर जिनेन्द्र इस्तडी कहै रे, सुन
 रे शकेन्द्र मांररी बाय रे । तीन काल में दान हुई
 नहीं रे आयुषो बधाखो नहिं जाय रे ॥ आ० ॥
 ८ ॥ अलिख संतार नजी सुनि नीसखा रे, करना
 सुनि नवकरनी बिहार रे । भारंड पक्षीनी ज्यनि
 उपमा रे, न धरै सुनि मनना नेह निगार रे ॥
 आ० ॥ ९ ॥ चारित्र पाटे रुही रीति सुं रे, देवे
 बली अपनो छन्दो रोज रे । तुल्य विराजे सुनि
 सुक्ति में रे, यश लरै इहलोक ने परलोक रे ॥

स्यां राज ॥ आ० ॥४॥ अष्ट कर्म ढल अति जोग-
वर, ते जीत्यां सुख पास्यां । जालम मोह मार कें
जगसे, माहम करी भगास्यां राज ॥ आ० ॥ ५ ॥
अवट पंथ नजी दुर्गति को, शुभगति पंथ समा-
स्यां । आगम अग्र्य तणे अनुमारे, अनुभव दशा
अभ्यास्यां राज ॥ आ० ॥६॥ काम क्रोध मद लोभ
कपट तजि, निज गुण सृं लवलास्यां । विनंचन्द
संभव जिन तृष्टौ, आवा गमन मिटास्यां राज
॥ आ० ॥ ७ ॥

४-श्री अभिनन्दन ग्यामीजी का स्तवक ।

॥ आदर जीव क्षिम्या गुण आदर ॥ पदेशी ॥

श्री अभिनन्दन, दुःख निकन्दन, वन्दन पूजन
योगजी ॥ श्री० ॥ १ ॥ संवर राय सिद्धारथ राणी,
जेहनों आत्म जान जी । प्राण पियारो साहिब
सांचो, तुही जो मातनें तातजी ॥ श्री० ॥ २ ॥
कैट्यक सेव करं शङ्कर की, कैट्यक भजै मुरारी

यह धर्म । कैई मिथ्याती होसी मानवी । मुश्कल
 निकलेला ज्यांरा भ्रम ॥ ५ ॥ हंस अनारज
 सुखिया होयसी, दुखिया तो होसी सज्जन लोक ।
 काल दुकाल पड़सी अति घणा, उन्दर सर्पादिक
 होसी थोक ॥ ६ ॥ रसमे सरसाई थोड़ी होयसी,
 आजपो पावेला पूरो नांय ॥ चौमासा लायक क्षेत्र
 साधने, थोड़ा मिलेला भरत मांय ॥ ७ ॥ साधु
 श्रावककी पड़िमा विछेद जावसी । शिष्य गुरुरा
 अविनीत । गुरु चेलाने थोड़ा पढ़ावसी । मुश्कल
 निकलेला ज्यांरा भ्रम । कुमाणस कलेश घणा
 होयसी । अल्प होयसी न्यायवन्त । हिन्दूरा जाया
 नीचा बाजसी । ऊंचा तो बाजसी म्लेच्छ लोग ॥
 नीचा कुलरा राजा बाजसी । करसी खोटा-खोटा
 न्याव । ज्यारें घरमे लोहड़ो लावसी, सो धनवन्त
 कहवाय ॥ सम्बत् उगणीस वर्ष इकसटे । चितौड़-
 गढ़ कियो चौमास । गुरु नन्दलाल तणै शिष्य
 जोड़िया । अल्प कियो समास ॥

गही, निव पापसे उरते रहो । फिरते रहो शुभ
कामसे, उपकार नी करते रहो । एमी बातोंको
दिलसे जमा तो सही ॥ प्यारे० ॥ ५ ॥

॥ पूज्य गुण पुष्पांजली ॥

हृषभादि महावीरजी वन्द वार हजार, प्रथम
पाट सुभर्मजी द्वितीय जसु अणगार, प्रभव स्वामी
नोसरे सयम्भव चतुर सुजाण जसोमद्र सन्नुन
विजय मद्र माहु गुण खान ॥ १ ॥ स्थूल मद्र ये
आठवां आर्यसिंह बलसिंह, सोवन स्वामी
इग्यारमा वयर स्वामी स्थण्डिल जितधर आर्य
समंद यद सोलवां नन्दोल खान, नागरस्ती
रेवंतजी सिंहगणी प्रणाम ॥ २ ॥ सीतवां स्थण्डिल
जानिए ऐनवंत नागजीन, गीरेन्द्र स्वामी तेईतना,
भूतारेन रहे प्रीति ॥ गीरेणो और इस्तगणी
देवगणी जना प्रणय जाण सत्ताहत्तने पाट ॥

जैनी बाजो हो नरां, बोलेो वचन विचार ।
 खुले मुँहे बोलतां, लागे पाप अपार ॥१॥
 अठाई दिन आठकी परमव खरची मांग ।
 संसार हांती कारणे, नगर जीमाणो नांग ॥२॥

—कोठारी चान्दमल

निवेदन ।

जन समाज में सामायिक के समय तो
 लोग पुस्तको से ढाल, स्तवन मन्त्रायादि
 जयगायन वांचते हैं । किन्तु बाद में अच्छे -
 जानकार श्रावक भी उधाड़ मुख पढ़ते हैं । यह
 अभ्यास पापकारी है । अतः इन घुरी आदत
 को छोड़ देना ही ठीक है ।

—कोठारी चान्दमल

जी। गणपति परमेश्वर को स्तुति ॥ श्री ० ॥ १ ॥
 पारती ॥ श्री ० ॥ २ ॥ तब गणेश जी,
 सो तब भवको स्वयं जी। तब गणेश जी,
 भवसे बन्दी न न्याये उपायी ॥ श्री ० ॥ ३ ॥
 जटपी इन्द्र नरिन्द्र निवाज, तटस्थ परमेश्वर
 जी। तब पञ्चनीक नरिन्द्र इन्द्र को दीन न्याय
 कृपाल जी ॥ श्री ० ॥ ४ ॥ जब लग आवागमन
 छटे, तब लग कर्ण अरदासजी। स्वयंति सति
 ज्ञान समकित गुण पाऊं दृढ़ विमवासजी ॥ श्री ०
 ॥ ५ ॥ अधम उद्धारण विग्रह तितारो, जोयो दण
 संसारजी। लाज विनयचन्द्रकी अब तोनें, भव
 निधि पार उतारजी ॥ श्री ० ॥ ६ ॥

५-श्री सुमतिनाथजी का स्तुतन ।

॥ श्रीशीतल जिन साहिबजी ॥ पदेशी ॥

सुमति जिणेश्वर साहिबजी, मगरथ नृप नो
 नन्द। सुमङ्गला माता तणो जी, तनय सदा सुख-
 फन्द, प्रभु त्रिभुवन तिलो जी ॥ १ ॥

સુપ્તિ ટાલાર, સદા સદિસા નિલોજી । પ્રણમં વાર
 હજાર પ્રભુ ત્રિભુવન નિલોજી ॥ ૩ ॥ અધુર નો
 યન યોદિયોજી યાલતી કાસુર સુદાસ । ન્યં સુખ-
 યન યોદ્યો સદી જિન સદિસા કદિ ન જાય ॥
 પ્રભુ ૦ ૬ ॥ ઝરૂં પદ્મજ સુરજ સુખી જી, વિક્રમં
 સુર્ય પ્રવાહ । ન્યં સુખ યનદો ગદ્ ગદ્, કશિ જિન
 જરિન કુલાસ ॥ પ્રભુ ૦ ॥ ૪ ॥ ગદ્ગદો બીડ બીડ
 ધરંજી જાન કર્ણાચ્છત્રુ જેજ । ન્યં યો યન નિશ ઝિન
 રહે, જિન સુસરન સં નેજ ॥ પ્રભુ ૦ ॥ ૫ ॥ કામ
 યોગની લાલસા જી વિરતા ન ધરં યજ્ઞ । વિજ
 નુમ બજન પ્રતાપ થી ટાણે સુરપતિ યજ્ઞ ॥ પ્રભુ ૦
 ॥ ૬ ॥ અવનિધિ વાર ડનારિયે જી, અન્ત ઇન્દ્રજિત
 ઇગલાન । વિર્નચન્દ્ર થી વિનતી, યાનો કૃપા નિધાન
 ॥ પ્રભુ ૦ ॥ ૭ ॥

૬-શ્રીપદમમુન્દરામીજીવા મન્ત્રકન ।

॥ પ્રથમ કેસ મન્ત્ર વાંદ દુહાયા ॥ ૭૮૦ ॥

૩૮મ પ્રભુ પાવન નામ નિજારો પ્રભુ પતિ

उत्तारन तारो ॥ १२ ॥ जन्मि भीतर मीन कम्माई,
अति पापिण जमारो । तदपि जीत तिम्रा तज प्रभु
भज, पावै भवदपि पारो ॥ पदम० ॥ १ ॥ गौ
जाग्रण प्रमदा पातक गी मोटी तित्या न्यारो ।
तेतनो करणतार प्रभु भजने होत तित्या सं न्यारो
॥ पदम० ॥ २ ॥ वेण्या जुगल नण्डाल जुवारी
चोर मत्ता भट मारो । जो रत्यादि भर्ज प्रभु तोने,
तो निवृत्त ससारो ॥ पदम० ॥ ३ ॥ पाप परालको
पुज घन्यो अति मानो मेरु अकारो । ते तुम नाम
हताशन सेती, सतड्यां प्रजलत सारो ॥ पदम० ॥ ४ ॥
परम धर्मको मरम मतारस, सो तुम नाम उचारो ।
या सम मन्त्र नही कोई दृजो त्रिभुवन मोहन
गारो ॥ पदम० ॥ ५ ॥ तो सुमरण विन इण
कलयुगमे, अवर न को आधारो । मैं बलिजाऊं तो
सुमरन पर दिन २ प्रीत घधारो ॥ पदम० ॥ ६ ॥
कुसमा राणीको अङ्गजात तूं, श्रीधर राय कुमारो ।
निनैचन्द्र कहे नाथ निरशन, जीवन प्राण हमारो
॥ पदम० ॥ ७ ॥

७-श्रीसुपार्श्वनाथ प्रभु का स्तवन ।

॥ प्रभुजी दीन डगल सेवक गगन जाये ॥ एहेरी ॥

श्री जिनगज सुगम, पूगे आश हमारी ।
 प्रतिष्ठ नैन नरेश्वर को सुत, पृथ्वी तुम मरुतानी ।
 सगुण सनेही साहब सांचो, सेवकने सुखमारी
 ॥ श्रीजिन० ॥ १ ॥ धर्म काज धन मुक्त इत्यादिक,
 मन बांछिन सुखपूगे । वार वार तुम्ह विनती करी,
 भव = चिन्ता बुरी ॥ श्रीजिन० ॥ २ ॥ जगत
 शिरोमणि भगति निवारी, कल्प वृक्ष मन जागृ ।
 पूरण ब्रह्म प्रभु परमेश्वर, भव भव तुम्हें पिछागृ
 ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥ हूं सेवक तुं साहब नेगे, पावन
 पुरष विजानी । जनम = जिन निध जाजं नो,
 पातो प्रीति पुगनी ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥ ताग्न नग्न
 लन अशक्त शरणको, विरद इमो तुम मोहे । नो
 मन दीनदयाल जगत में, इन्द्र नगिन्द्र न को हूं ॥
 श्रीजिन० ॥ ५ ॥ स्वयन्म गमण बड़ो मनुष्यों में, शैल
 सुमेरु पिगजै । तू ठाकुर त्रिभुवन में मोहो, भगत
 किरां दुख भाजै ॥ श्रीजिन० ॥ ६ ॥ जगन जगो-

वैराग्य-सागर ।

— — —

समाप्त

आम्र बोटागो जवानमल चान्दमल ।

हृदय-पुष्प (समाप्त) ।

— — —

महात्मनः प्रिये

पोतवाल प्रेस ।

१० १२ विमाने स्वीट

कलकत्ता ।

— — —

द्वोर निर्माणद २५३३

द.क.वृ. २०००]

[नि. मल्ल]

॥ मुक्त० ॥ ४ ॥ चन्द्र चक्षोरन के मनमें, गज
 आवाज होवे घनमें । पिय अभिलाषा ज्यों त्रिय
 तनमें, त्यों वसियो तं मो चित्त मनमें ॥ मुक्त०
 ॥ ५ ॥ जो मुनजर साहिव तेरी, तो मानो विनती
 मेरी । काटो भरम करम बेरी, प्रभु पुनरपि नहिं
 परुं भव फेरी ॥ मुक्त० ॥ ६ ॥ आत्म ज्ञान दशा
 जागी, प्रभु तुम सेती मेरी लौ लागी । अन्य देव
 भ्रमना भागी, विनैचन्द्र तिहारो अनुरागी ॥ मुक्त०
 ॥ ७ ॥

६-श्री सुविधनराज की स्तुति ।

॥ बुढापो बेरी आवियो हो ॥ पदेशी ॥

श्री सुविध जिणेश्वर वंदिये हो ॥ डेर ॥ काकंदी
 नगरी भली हो, श्री सुग्रीव नृपाल । रामा तसु पट
 रागनी हो, तस सुत परम कृपाल ॥ श्रीसु० ॥ १ ॥
 त्यागी प्रभुता राजनी हो, लीधो संजम भार ।
 निज आत्म अनुभाव थी हो, पाम्या प्रभु पद
 अविकारी ॥ श्री० ॥ २ ॥ अष्ट कर्म नो राजवी हो,

मोह प्रथम क्षय होन । मन समन्ति चारित्र नो
हो, परम ज्ञायक गुण होन ॥ श्री० ॥ ३ ॥ ज्ञाना-
वरणी दर्शणावरणी हो, अन्तरागके अन्न । ज्ञान
दर्शण बल ये त्रिहृत् ता प्रगट्या अनन्ता अनन्त
॥ श्री० ॥ ४ ॥ अवा वात सुग पामिया हो आयु
क्षय करन श्री जिनराय ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नाम करम
नो क्षय करी हो, अमूर्त्तिक कृपाय । अगुरु लवू पण
अनुभव्यो हो, गोत्र हरम मृकाय ॥ श्री० ॥ ६ ॥
आठ गुणा कर ओलह्या हो जात रूप भगवन्त ।
बिनैचन्द के उर बसो हो, अह निश प्रभु पुष्पदन्त
॥ श्री० ॥ ७ ॥

१०-श्री शीतलकाम्पजीकी स्तुति ।

॥ जिनारा ॥ पदेशा ॥

जय जय जिन त्रिभुवन धणी ॥ डेर ॥

श्री हृदय नृपति पिता, नन्दा धारी माय ।

रोम रोम प्रभु मो भणी शीतल नाम सुहाय ॥

जय० ॥ १ ॥ करुणा निध करतार, सेव्यां सुर

नर जेहवो । वांछित सुख दाता ॥ जय० ॥ २ ॥
 प्राग प्रियारो नृं प्रभु. पतिव्रता पति जेन ।
 लगन निगन्तर लग रही. दिन दिन अधिको प्रेम ॥
 जय० ॥ ३ ॥ जीतल चन्दननी सें. जपना निग दिन
 जाप । विदय कथाय ना जगन नैयो नव दुख
 नाप ॥ जय० ॥ ४ ॥ आनन्द प्रगान थी, उपजै
 चिन्ता अनेक । ते दुख काटो मानसी. आपो अचल
 विवेक ॥ जय० ॥ ५ ॥ गंगादिक भुवा वृषा.
 नय गन्ध अन्ध प्रहार । नकल जरीगी दुख हरो.
 दिल नृ विन्द विचार ॥ जय० ॥ ६ ॥ सुपग्नत्र
 होय जीतल प्रभु. नृं आशा विनगन । दिनेचन्द
 कहै नो भगी दीजै मुक्ति मुकान ॥ जय० ॥ ७ ॥

११-श्री श्रेयांसुखसुखी स्तुति ।

॥ गगनकांक्षो देगो होरो सो ॥

श्रेयांसु जिनन्द सुख रे ॥ देर ॥

चेतन जाग कन्याग करन को आन निन्यो
 अवसर रे । गान्ध प्रमान विद्यान प्रभु गुन. मन

चञ्चल गिर कर रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ ॥ ॥
 धिलास भजन को, दृढ़ विश्वास पसर रे ।
 भ्यास प्रकाश लिये विन, सो सुमरन ॥ श्री० ॥ २ ॥
 कंदूष क्रोध लोभ मद माया
 सबही पर हर रे । सम्यक् दृष्टि सहज गुण पाया
 ज्ञान दशा अनुसर रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥
 मंद पाप
 जीवन तन धन अरु, सजन सनेही घर रे ।
 छोड़ चले पर भवकुं, बान्ध शुभाशुभ धर रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥
 मानस जनम पदारथ जिनकी, आशा
 करत अमर रे । ते पूरव सुकृत कर पायो, धरम
 मरम दिल भर रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥
 विश्वसैन नृप
 विस्त्रा राणी को, नन्दन तूं न बिस्तर रे । सहज
 मिटै अज्ञान अविद्या, मुक्त पंथ पग धर रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥
 तूं अविकार विचार आतम गुण, भ्रम जंजाल
 न पर रे । पुद्गल चाय मिटाय बिनैचन्द्र, तूं जिनते
 न अवर रे ॥ श्री० ॥ ७ ॥

१२-श्री वासुपूज्यजीकी स्तुति ।

॥ फूलसी देह पलकमे पलटे ॥ पदेशी ॥

प्रणमूं वास पूज्य जिन नायक, सदा सहायक
तूं मेरो । विषमी वाट वाट भय थानक, परमासय
शरणो तेरो ॥ प्रणमूं० ॥ १ ॥ मल दल प्रवल दुष्ट
अति दान्ण, चौतरफ दिये बेरो । तो पिण कृपा
तुम्हारी प्रभुजी. अरियन भी प्रगटै चेरो ॥ प्रणमूं०
॥ २ ॥ विकट पहार उजार विचालै चोर कुपात्र
करै हेरो । निण विरियां करिये तो सुमरण, कोई
न छिन सकै डेरो ॥ प्रणमूं० ॥ ३ ॥ राजा बाद-
शाह कोड कोपै, अति तकरार करै छेरो । तदपी
तूं अनुकूल हुवै तो, छिनमें छूट जाय केरो ॥
प्रणमूं० ॥ ४ ॥ राक्षस भूत पिशाच डांकिनी,
सांकिनी भय न आवै नेरो । दुष्ट मुष्ट छल छिद्र न
लागै, प्रभु तुम नाम भज्यां गहरो ॥ प्रणमूं० ॥ ५ ॥
विष्कोटक कुटादिक सङ्कट, रोग असाध्य मिटै
देहरो । विष प्यालो अमृत होय प्रगमें, जो
विश्वाम जिनन्द केरो ॥ प्रणमूं० ॥ ६ ॥ मान जया

वसु नृपके नन्दन, तत्त्व जगारय पुष प्रेरो । वे कर
जोरि बिनैचन्द्र बिनवे वेग मिटे सुभ भव फेरो
॥ प्रणम० ॥ ७ ॥

१३-श्री विमलनाथ स्वामीका स्तुतन ।

॥ भिग २ मोट विटम्बना ॥ ण्देशा ॥

विमल जिनेश्वर सेविये । धारी बुध निमल हो
जाय रे ॥ जीवा ॥ विषय विकार विसार ने, नूं
मोहनी करम म्पाय रे ॥ जीवा ॥ विमल जिनेश्वर
सेविये ॥ १ ॥ सूत्र साधारण पणे । परतेक बनस-
पति माय रे ॥ जीवा ॥ छेदन भेदन ते सही ।
मर मर उपज्यो तिण काय रे ॥ जीवा ॥ वि० ॥२॥
काल अनन्त तिहागन्यो । तेहना दुःख आगम थी
संभाल रे ॥ जीवा ॥ पृथ्वी अप्प तेउ वायु मे ।
रह्यो असंख्या असख्यातो कालरे ॥ जीवा ॥ वि० ॥३॥
एकेन्द्री सूं बेद्री धयो । पुन्याई अनन्ती वृद्ध रे
॥ जीवा ॥ सती पंचेन्द्री लगे पुन्य बंध्या । अन

अनन्ता प्रसिद्ध रे ॥ जीवा ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव
नरक निग्यत्र में । अथवा माणस नव नीच रे
॥ जीवा ॥ दीन पणे दुःख भोगद्या । इणपर चारों
गति बीच रे ॥ जीवा ॥ वि० ॥ ५ ॥ अथके उत्तम
कुल मित्यो । भेद्या उत्तम गुण माथु रे ॥ जीवा ॥
सुण जिन वचन मनेह से । समकित व्रत गुद
आगथ रे ॥ जीवा ॥ वि० ॥ ६ ॥ पृथ्वी पनि
कीरति भानुको । सामाराणी को कुमार रे ॥ जीवा ॥
विनैचन्द्र कहे ते प्रभु । जिर सहगे द्विचड़ा रो हार
रे ॥ जीवा ॥ वि० ॥ ७ ॥

१४- श्री अकालनाथजी का स्वरूप ।

॥ देव पद्मांगरं स्तेल या ॥ पडेगी ॥

अनन्त त्रिनेश्वर नित नमो, अद्भुत ज्ञान
अलेख्य । ना कद्विषे ना देविये, जाके रूप न रंज
॥ अनन्त ॥ १ ॥ सूक्ष्म यी सूक्ष्म प्रभु चिदानन्द
विद्रूप । पवन शब्द आकाश यी सूक्ष्म ज्ञान
मन्त्र ॥ अनन्त ॥ २ ॥ सकल पदार्थ चित्तं, जे
जे सूक्ष्म ज्ञेय । निगयी तं सूक्ष्म महा, तो सम

अवर न कोन अनन्त ॥ कवि पाण्डित कन
कन पके, आनन अरे विचार को सिंग तुम अनु-
भव विनो न लके रहना उतर अनन्त ॥ ४

मधुमे गोमुख लालनो देवो आगे आप । कहि न
लके मधु तुम लुके अलन अजमा जाय ॥

अनन्त ॥ मन दुःख बागो को विवै पहुवे
नाने हर, र ताझे लोकलोक को निरविकल्प
निराकार अनन्त ॥ मान जता तिरथ
दिन मधु तुम अनन्त निरुद्ध विनैवद अब
ओलखो ताहि न ललननन्द अनन्त । ५ ॥

१५-श्री शर्दिनाशक्यो का नृकन्द ।

। नृकन्द के देवो न हने । खेरो ।

अनन्त निरखन लल विवै मतो प्यारो प्राण
लनन कन्द न बिलर हो निगल लहो लदा
अलखितन अलन अलन ॥ १ ॥ ज्य पानिहारी
कुनन न बिलरै नष्टो नरिन निदान । पलक न
बिलरै हो पदनिनो निड भगो, बकवो न बिलरै रे
आन अलन ॥ २ ॥ ज्य लोभो मन अलकी

लालसा, भोगी के मन भोग । गेगी के मन
 माने औषधि, जोगी के मन जोग ॥ धरम० ॥ ३ ॥
 इणपर लागी हो पूरण प्रीतडी. जाव जीव पर्यन्त ।
 भव भव चाहूं हो न पड़े आंतरो, भय भञ्जन
 भगवन्त ॥ धरम० ॥ ४ ॥ काम क्रोध मद मच्छर
 लोभ थी, कपटी कुटिल कठोर । उत्पादिक अवगुण
 कर हूं भखो, उर्द कर्म केरे जोर ॥ धरम० ॥ ५ ॥
 तेज प्रताप तुमारो प्रगटै. मुक्त हिवड़ामें रे आय ।
 तो हूं आत्म निज गुण संभालने, अनंत बली
 कहिवाय ॥ धरम० ॥ ६ ॥ भानू नृप सृत्रता जननी
 तणो, अंगजान अभिराम । विनैचंद ने रे बल्लभ
 तूं प्रभु. सुध चेतन गुण धाम ॥ धरम० ॥ ७ ॥

१६-श्री शान्तिनाथ स्कामी का

स्तुत ॥

॥ प्रभुजी पधारो हो नगरी हम तणी ॥ पदेशी ॥

शान्ति जिनेश्वर साहब सोलमों । शान्तिदा-
 * यक तुम नाम हो ॥ सौभाग्य ॥ तन मन वचन सुध

यह पुस्तक चान्दमलकी माजी माद्वि

छोगिजी की तरफ से

जैन भाइयों की सेवा में

मादर भेट ।

पुस्तक यत्न से रक्खें और जयणा से पढ़ें

पुस्तक मिलने का पता —

(१) बाबू कोठारी जवानमल चान्दमल ।

मु० बलुन्दा (मारवाड़) ।

(२) बाबू कोठारी जवानमल चान्दमल ।

मु० सिराजगंज (पटना) ।

कर ध्यावता । परै सघली आन हो ॥ सौभाग्य
 ॥ १ ॥ विश्व सैन नृप अचला पटराणी । त
 कुल शिणगार हो ॥ सौभागी ॥ जन मति शान्ति
 करी निज देश मे । मरी मार निवार हो
 सौभागी ॥ २ ॥ विघन न व्यापे तुम सुख
 कियां । न्हारै दारिद्र दुःख हो ॥ सौभागी ॥ अ
 सिद्धि नव निदि मिलै । प्रगटै सबला सुख हो
 सौभागी ॥ ३ ॥ जेहने सहायक शान्ति जिन
 तं । तेहने कमीय न काय हो ॥ सौभागी ॥ जे
 कारज मनमें बहै । ते ते सफला धाय हो ।
 सौभागी ॥ ४ ॥ दूर दिशावर देश प्रदेश में
 भटके भोला लोक हो ॥ सौभागी ॥ सानिध्या
 सुमरन आपरो । सहजे मिटै सहु शोक हो न
 सौभागी ॥ ५ ॥ आगम साख सुणी छै एह
 जो जिण सेवक होय हो ॥ सौभागी ॥ ॥
 आशा पूरै देवता । चौसठ इन्द्रादिक सो
 सौभागी ॥ ६ ॥ भव भव अन्तरयामी तु
 हमने छै आधार हो ॥ सौभागी ।

विनचन्द्र विनवै । आपो सुख श्रीकार हो ॥
मौभागी ॥ ७ ॥

१७-श्रीकुण्डलस्थ स्वामीका स्तवन ।

॥ रेखता ॥

कुन्ध जिणराज तं जेमो. नहीं कोई देवतं
जैमो । त्रिलोकीनाथ तं कहिये, हमारी बांह दृढ़
गहिये ॥ कुन्ध० ॥ १ ॥ भवोदधि डूबतो नारो,
कृपानिधि आमरो थारो । भगेमा आपका भारी,
विचारो विगढ़ उपकारी ॥ कुन्ध० ॥ २ ॥ उमाहुं
मिलन को तोसे, न राखो आंतरा मोसे । जैमी
मिद्व अवस्था तेरी, तैमी चेतन्यता मेरी ॥ कुन्ध
॥ ३ ॥ कर्म भ्रम जाल को दृष्ट्यो, विषय सुख
ममन में लपट्यो । भ्रम्यो हूं चिहं गति माहीं उदै
कर्म भ्रम की छांटी ॥ कुन्ध ॥ ४ ॥ उदै को जोर है
जालूँ, न छूटै विषय सुख तालूँ । कृपा गुन्देवकी
पाई, निजानम भावना आई ॥ कुन्ध ॥ ५ ॥ अजब
अनुभूति उर जागी. सुगति निज सूर्य में लागी ।

कुनो नम पर तो जाना विनायक नम नम
 मान ॥ कृष्ण ॥ २ ॥ श्री गुरु सर नम नम
 अतो सर्वज्ञ सार सारा । तिनना । श्री नम
 गुण मे न नम अविना उमने ॥ कृष्ण ॥ ३ ॥

१८-श्री अर्जुनाथ स्वामीजी का

रत्नसूत्र ।

स्वामीजी का प्रवेश ।

अष्ट नम अविनासी, शिव सुख लीधो ।
 विमल विज्ञान विलासी । साहिब सीधो ॥ १ ॥
 नृ नैनन भज अर्जुनाथ ने, ते प्रभु त्रिभुवन राय ।
 नान श्रीधर सुदर्शन देवी माता, तेहनों पुत्र
 कहाय ॥ साहिब सीधो ॥ २ ॥ जोड़ जनन
 करतां नहो पामे, एही मोटी नाम । ते जिन
 भक्ति करी नै लहिये, मुक्ति अमोदक ठाम ॥
 साहिब ॥ ३ ॥ समकित सहित कियां जिन
 भगती, ज्ञान दर्शन चारित्र । तप वीर्य उपयोग
 निहारा, प्रगटै परम पवित्र ॥ साहिब ॥ ४ ॥ सो

उपयोगी मरूप चिदानन्द, जिनवर ने नृं एक ।
 द्वैत अविद्या विभ्रम मेटो, वार्धं गृह विवेक ॥
 साहित्य० ॥ ५ ॥ अलग्न अरूप अग्नण्डित अवि-
 चल, अगम अगोचर आपै । निरविकल्प निकलंक
 निरञ्जन अद्भुत जोनि अमापै ॥ साहित्य० ॥ ६ ॥
 ओलग्न अनुभव अमृत याको, प्रेम महित नित
 पीजै । हं नृं छोड़ विनैचन्द अन्नस, आनम राम
 रमीजै ॥ साहित्य० ॥ ७ ॥

१६-श्री मल्लिकार्जुन स्वामीजी का

स्तवस्तु ।

॥ लावणी ॥

महि जिन बाल ब्रह्मचारी, कुम्भ पिता पर-
 भावनी मह्या । निनकी कुंवारी ॥ टंक ॥ मानी
 कृंव कन्दरा मांही, उपना अवतारी । मालनी
 कुमुम मालनी बांछा, जननी उरधारी ॥ म० ॥ १ ॥
 निणथी नाम महि जिन थाप्यो, त्रिभुवन प्रिय

મારો અતુલ મરિચી મુનિશ મધુલી કેડ ખરો
 મારો મં ॥ ૨ ॥ વાગન કાલ જાન મજ આવે,
 અવનિ વ મારો । મિતિનાવુની ઘેરિ જોતરકા
 સેના વેલ મો । મં ॥ ૩ ॥ રાજા કુન્ન પ્રકાશી
 મુન વૈ રોનક વિધિ મારો । મુન મુન જાન મજી
 નો વાગન આવા અવકારી ॥ મં ॥ ૪ ॥ ઓમુજ
 ખીસ દોષો વિનાને, રાજ્યો હુ ગિયારી । મુનલી
 તક રજો નિજ અતુલ ધોધી રકવારી ॥ મં ॥ ૫ ॥
 ઓજન સગત મરો તા મુનલી ઓજિય શિય-
 મારો । અવનિ મુન મુનિયા મનિદર, યોગિ મુન
 દિના વારો ॥ મં ॥ ૬ ॥ મુનલી રેગલ મુન મુન
 મોજા અવતર વિચારી । રાક ઉચાર લીનો મુનલી
 કો અવજ્યો અવિ મારો ॥ મં ॥ ૭ ॥ મુનર
 મુનર મુન ન જાવે, રાજ્ય મુન મારો । મુન ઉપ-
 રેગલ દિયો ઓમુજ મુ, મોર દર્યા મારો ॥ મં
 ॥ ૮ ॥ મરો અતુલ ઉદારક રેગી, મુનલી રક
 વારી । મુન કિયા પદકૈ અવ મુન મો, મારિ મરક
 વારી ॥ મં ॥ ૯ ॥ મુન મુન પ્રતિ ઓગે મુનિ રોમ,

मिद्व गति संभारी । विनैचन्द्र चाहत भव भवमें.
भक्ति प्रभु थारी ॥ म० ॥ १० ॥

२०-श्री मुनि मुव्रत स्कामी का
गुत्कृत ।

॥ चेतरे चेतरे मानवी ॥ पदेर्णा ॥

श्री मुनि मुव्रत साहिवा, दीन दयाल देवां
तणा देव के । तारण तरण प्रभु तो भणी, उज्ज्वल
चित्त मुमरुं नितमेव कै ॥ श्री मुनि मुव्रत साहिवा
॥ १ ॥ हूं अपराधी अनादि को. जनम जनम
गुन्हा किया भग्नर कै । लड़िया प्राण छः कायना,
सेविया पाप अटार करुं कै ॥ श्रीमुनि० ॥ २ ॥
पूख अशुभ करतव्यता, ते हसना प्रभु तुम न
विचार कै । अधम उधारण विन्द छै, शरण आयो
अव कीजिये मार कै ॥ श्रीमुनि० ॥ ३ ॥ किञ्चित
पुन्य परभाव थी. उण भव ओलख्यो श्रीजिन
धर्म कै । निवृत्त नरक निगोद थी, एहवी अनुग्रह
करो परब्रह्म कै ॥ श्रीमुनि० ॥ ४ ॥ माधुपणो नहिं

संगतो, आगत व्रत न किया अर्द्धाचार के ।
 आदरों तो न अगधिया तैलवी मलियों अनन्त
 संसार के ॥ श्रीमुनि० ॥ ५ ॥ अब समकित व्रत
 आदरों, नदपि अगधक उत्तम मय पार के ।
 जनम जीतर सफलता नृप तृणपर विनय पार
 हजार के ॥ श्रीमुनि० ॥ ६ ॥ सुमति नराधिप तृप्त
 पिता धन धन श्री पदमावती माय के । तसु सुत
 त्रिभुवन तिलक तू, वन्दन पितृचन्द शीश नवाप
 के ॥ श्रीमुनि० ॥ ७ ॥

२१-श्री नेमनाथजी का रतवन ।

॥ सुणियोरें वाग कुटिल मझारी तोता लें गई ॥ पदार्थ ॥

सुज्ञानी जीवा भजले जिन इकबीसमों ॥ टेर ॥
 विजयसेन नृप विप्राराणी नेमीनाथ जिन जागो ।
 चौसठ इन्द्र कियो मिल उत्सव सुर नर आनन्द
 पागो रे ॥ सुज्ञानी० ॥ १ ॥ भजन कियां भव
 भवना दुष्कृत, दुक्ख दुभाग मिट जावे । काम
 क्रोध मद मच्छर तृष्णा दुरमत निकट ॥ २ ॥

॥ सु० ॥ २ ॥ जीवादिक नव तन्व द्विये घर, जंय
 हेय समुझीजै । तीजी उपादेय ओलखने, समक्ति
 निरमल कीजै रे ॥ मुज्ञा० ॥ ३ ॥ जीव अजीव बन्ध
 ये तीनं, जंय पदार्थ जानो । पुन्य पाप आस्रव
 परहगिये, हेय पदार्थ मानो रे ॥ मुज्ञा० ॥ ४ ॥
 संवर मोक्ष निर्जग निज गुण उपादेय आढगिये ।
 कारण कारज समझ भली विधि, भिन भिन
 निरणो करिये रे ॥ मुज्ञा० ॥ ५ ॥ कारण जान
 समुझी जियको कारज क्रिया पसारे । दोनं की
 माझी सुध अनुभव आपो खोज निहारो रे ॥
 मुज्ञानी ॥ ६ ॥ तं सो प्रभु प्रभु सो तं है, द्वैत
 कल्पना भेदो । गुढ चेतन आनन्द विनैचन्द, पर-
 मानम पद भेदो रे ॥ मुज्ञानी० ॥ ७ ॥

२२-श्री अरिष्टनेम प्रभुका मत्कृत् ।

॥ नगरी मृदु वर्णा छै जी ॥ पदेर्गा ॥

श्रीजिन मोहन गारो छै, जीवन प्राण हमारो
 छै ॥ देर ॥ समुद्र विजय सुत श्री नेमीश्वर, यादव

कुल गो टीको । स्तन उद्ध भारनी सेवा देवी,
 जेतो नन्दन नीको ॥ श्री० ॥ १ ॥ सुन पुकार
 पशु की करुणातर जानि जगत सुग्न फीको । नव
 भव नेह नज्यो जोवन मे, उग्रसेन नृप धी को ॥
 श्री० ॥ २ ॥ सतन्त्र पुरुष सो सजम लोभो, प्रभुजी
 पर उपकारी । धन धन नेम राजुल की जोड़ी, महा
 बालब्रह्मचारी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ बोधानन्द सरूपा-
 नन्द मे, चित्त एकाग्र लगायो । आत्म अनुभव
 दशा अभ्यासी शुक्त ध्यान निज ध्यायो ॥ श्री०
 ॥ ४ ॥ पूर्णानन्द केवली प्रगटे, परमानन्द पद
 पायो । अष्टकर्म छेदी अलवेसर, सहजानन्द
 समायो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नित्यानन्द निराश्रय निश्चल,
 निर्विकार निर्वाणी । निरान्तक निरलेप निरामय,
 निराकार वर नाणी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ एहवो ज्ञान
 समाधि संयुक्तो, श्री नेमीश्वर स्वामी । पूरण कृपा
 विनैचन्द प्रभु की, अबते ओलख पामी ॥ श्री०
 ॥ ७ ॥



२४-श्री महावीर मनु का स्तवन ।

॥ श्री नरकार जयो मन रगे ॥ एदेशा ॥

धन २ जनक सिद्धार्थ राजा, धन वसलादे
मात रे प्राणी । ज्यां सुत जायो गोद खिलायो,
वर्द्धमान विख्यात रे प्राणी ॥ श्री महावीर नमो
वर नाणी, शासन जेहनो जाण रे ॥ प्रा० ॥ १ ॥
प्रवचन सार विचार हिया मे, कीजै अरध प्रमाण रे
॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ २ ॥ सूत्र विनय आचार तपस्या,
चार प्रकार समाधि रे ॥ प्रा० ॥ ते करिये भव
सागर तरिये, आत्म भाव अराधि रे ॥ प्रा० ॥
श्री० ॥ ३ ॥ ज्यो कश्चन तिहुं काल कहीजै,
भूषण नाम अनेक रे ॥ प्रा० ॥ त्यो जगजीव चरा-
चर जोनी, है चेतन गुण एक रे ॥ प्रा० ॥ श्री०
॥ ४ ॥ अपणो आप विषै धिर आत्म, सोहं हंस
कहाय रे ॥ प्रा० ॥ केवल ब्रह्म पदारथ परिचय,
पुद्गल भरम मिटाय रे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ५ ॥
शब्द रूप रस गन्ध न जामे, ना सपरस तप छांदि

रे ॥ प्रा० ॥ तिमर उद्योत प्रभा कछु नार्हीं, आत्म
 अनुभव मांहि रे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ सुख दुख
 जीवन मरन अवस्था, ते दश प्राण संघात रे
 ॥ प्रा० ॥ इणथी भिन्न विनैचन्द्र रहिये, ज्यों जल
 में जल जात रे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ७ ॥

॥ कलश ॥

चौबीस तीरथ नाम कीरति,
 गावतां मन गढ़ गहै ।
 कुमट गोकुलचन्द्र नन्दन,
 विनैचन्द्र इणपर कहैं ॥
 उपदेश पूज्य हमीर मुनिको,
 तत्व निज उरमें धरी ।
 उगणीस सौ छः के छमच्छर,
 चतुर्विंशति स्तुति डम करी ॥

अनुपूर्वी ।

जहा १ है वहा नमो अरितनाथ बोलना ।

जहा २ है वहा नमो सिद्धाण बोलना ।

जहा ३ है वहा नमो आगरिगाण बोलना ।

जहा ४ है वहा नमो उवज्झाणाण बोलना ।

जहा ५ है वहा नमो लोण सब्बसाहण बोलना ।

अनुपूर्वी गुणने का फल ।

अनुपूर्वी गुणिये जाय,

छ. मासो तपनो फल होय ।

सदेह मन आणो लिगार,

निर्मल मन जणो नवकार । १ ।

शुद्ध वचन परि विवेक,

दिन दिन प्रत्यै गिणवी एक ।

एम अनुपूर्वी जे गुणे,

ते पाच सो सागरना पापने हणे । २ ।

अशुभ कर्म के हरण को, मन बडो नवकार ।

आणो आदश अङ्ग मे देव तिथो तत्त्व सार ॥ ३ ॥

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

म म म म म म

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

म म म म म म

५ ५ ५ ५ ५ ५

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

५ ५ ५ ५ ५ ५

५ ५ ५ ५ ५ ५

न	न	न	न	न	न
अ	अ	अ	अ	अ	अ
इ	इ	उ	उ	ए	ए
उ	ए	इ	ए	इ	उ
ए	उ	ए	इ	उ	इ

न	न	न	न	न	न
ए	ए	ए	ए	ए	ए
इ	इ	उ	उ	अ	अ
उ	अ	इ	अ	इ	उ
अ	उ	अ	इ	उ	इ

वेगम्य मागर ।

२	२	२	२	२	२
३	३	३	३	३	३
४	४	५	५	६	६
५	६	४	६	४	५
६	५	६	४	५	४

२	२	२	२	२	२
४	४	४	४	४	४
३	३	५	५	६	६
५	६	३	६	३	५
६	५	६	३	५	३

विषय	पृष्ठा
१८ चउच्चिहार उपवास का पंचस्त्राण ..	१७४
१९ रात्रि चउच्चिहार का पंचस्त्राण	१७४
२० ताम्र उस्मास की थोकडो	१७४
२१ माश्र मार्गनो थोकडो	१८३
२२ ताम्र बोलकरा जाव तीश्रदूर गोत्र बावे	१८३
२३ कर्म विपाक वम कथा ना बोल	१८७
२४ कामदेव श्रावकर्ता सञ्भाय	२२३
२५ मृगापुत्र की ढाल	२२५
२६ म्त्रा चरित्र की ढाल	२२८
२७ चार शरणा की स्तवन	२३३
२८ चेत चेत नर चेत	२३५
२९ भुलो मन भमरा फाट भयों	२३७
३० मान न कीज रे मानवी ..	२३८
३१ कर्म सञ्भाय ..	२४३
३२ शान्तिनाथ प्रभुजी का स्तवन ...	२४६
३३ पूज्य श्रीलालजी महर्षि की लावणी	२४६
३४ पूज्य श्री श्री १००८ श्रीलालजी महाराज को स्तवन	२५६
३५ कर्मचन्दजी स्वामी कृत व्यान .	२५७
३६ साधु मुनिराज के २२ परीषद	२६६
३७ इग्यारे गणधराको स्तवन	२७०
३८ तपसी श्री श्री सिरेमलजी महाराज के गुणो की ढाल	२७२
३९ तेरह ढाल की बटी साधु वन्दना ...	२७४

१२'	१२'	१२'	१२'	१२'	१२'
२०'	२०'	२०'	२०'	२०'	२०'
५	५	२०	२०	१२'	१२'
२०	१२'	५	१२'	५	२०
१२'	२०	१२'	५	२०	५

१२'	१२'	१२'	१२'	१२'	२०'
१२'	१२'	१२'	१२'	१२'	१२'
५	५	२०	२०	२०'	२०'
२०	२०'	५	२०'	५	२०
२०'	२०	२०'	५	२०	५

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

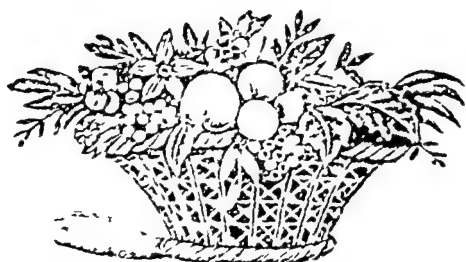
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

2	2	2	2	2	2
1	1	1	1	1	1
3	3	2	2	1	1
2	1	3	1	3	2
1	2	1	3	2	3
2	2	2	2	2	2
1	1	1	1	1	1
3	3	2	2	1	1
2	1	3	1	3	2
1	2	1	3	2	3

अथ श्री मोलह मत्तीनी स्तवन ।

आदिनाथ आदि जिनवर बंदी, सफल मनो-
 ग्रथ कीजिये ॥ प्रभाने उठी मङ्गलीक कामे.
 मोलह मत्तीना नाम लीजिये ॥ १ ॥ बालकुमारी
 जगहिनकारी ब्राह्मी भगवती बहेनड़ी ॥ वद २
 व्यापक अक्षर रूपे मोलह मत्ती मांदि जे बड़ी ॥
 ॥ २ ॥ बाहुबल भगिनी मनिय शिरोमणि.
 सुन्दरी नामे ऋषभ सुता ॥ अंक स्वरूपी त्रिभु-
 वन मांदि. जेह अनोपम गुण युता ॥ ३ ॥
 चन्दनबाला बालपणे श्री, शीयलवती गृह आविका
 ॥ उड़दना बाकला वीर प्रतिलाभ्या, केवल लही
 वन भाविका ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुया धारणी
 नंदनी, गजेमती नेम बल्लभा ॥ चौवन बेडो काम
 ने जीन्यो संयम लेई देव दुल्लभा ॥ ५ ॥ पत्र
 भगवती पांडव नागी. द्रुपद ननया बगवाणिये ॥
 एक मां आटे चीर पुगना, शीयल महिमा नम
 जाणिये ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नागी निष्पन्न

त्रिविधे तेहने वन्दिये ए । नाम जपंतां पातक
जाए, दर्शन दुरित निकन्दिये ए ॥ १४ ॥ निषथा-
नगरी नलह नरिन्दनी, दमयन्ती तस गेहिनी ए ।
संकट पड़तां गीयलज राख्युं, त्रिभुवन कीर्ति जेहनी
ए ॥ १५ ॥ अनङ्ग अजिता जग जन पूजिता,
पुष्पचुला ने प्रभावती ए । विश्व विख्याता कामित
दाना, सोलमी सती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीर
भात्री शास्त्रे साग्री, उदय रतन भाखै मुडा ए ।
घाहणु वहता जे नर भणशे, ते लेखे सुख सम्पदा
ए ॥ १७ ॥ इति ॥



आथं आजाना साती वही

रासि ॥

॥ दोहा ॥

अञ्जना मोटी सती, पाल्यो शील रसाल ।
अशुभ कर्म उदय हुवा, आयो अणहुन्तो आल ॥
शील पाल्यो तिण किण विधे, किण विध आयो
आल । हिवै धुरसूं उत्पति कहूं, सुणज्यो सुरत
सम्हाल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

॥ कडखानी ॥ एदेशी ॥

महिन्दपुरी जग जाणिये, राजा हो महिन्द
षसे तिण ठामक । तसु पटराणी छै खड़ी, मानवेगा
राणी तेहनो नामक ॥ सौ पुत्र राणी तिण जन-
मिया, ते रूप में खडा छै अभिरामक । तयारे केडे

जाई एक बालिका, अञ्जना कुंवरी छै तेहनो नामक
 ॥ सती रे ठिगोमणि अञ्जना ॥ १ ॥ मान पिताने
 बाहली बणी, बंधव सगलां ने गमती अत्यन्तक ।
 रूप में छै रलियामणी. नैण दीठां बणो हरप थं-
 तक ॥ सजन सगा ने सुहामणी, सखी सहेलियां
 में रही नित खेलक । विद्या भणी सुत्र अति बणी,
 दिन दिन बधे जिम चम्पक बेलक ॥ स० ॥ २ ॥
 अञ्जना कुंवरी मोटी हुई, चिन्तवी ने राय वित्त
 मभारक । पछै वेग प्रधान तेड़ावियो, कहे अञ्जना
 बर तणो करो रे विचारक ॥ जव एक कहे रावण
 ने दीजिये, एक कहे दीजे मेघ कुमारक । ते पुत्र
 छै राजा रावण तणो, तिणरो जोवन रूप बणो
 श्रीकारक ॥ स० ॥ ३ ॥ जव एक कहे डम सांभलो.
 बरप अठारमें मेघ कुमारक । चारित्र लेसी बंगण
 मं, बरप छावीम में जासी मोक्ष मभारक ॥ तां
 कन्या ने सुत्र किहों थकी, सगलाई कर देखो मन
 में विचारक । मेघ कुमार ने वो मनी, और विचारो
 कोर्ट राज कुमारक ॥ स० ॥ ४ ॥ रतनपुरी नणो

राजवी, राग प्रताड बिगाधर नामक । तेहनो पुत्र
 अति दीपतो, पवनकुमार है तेहनो नामक ॥
 अञ्जना ने वर योग है ७ राजा कियो बचन प्रमा-
 णक । पीछे दूत मेल्यो निण नगरी मे, सगपण
 कीधो है मोटे मण्डाणक ॥ स० ॥ ५ ॥ रूप ने
 गुण अञ्जना नणो, प्रगट हुवो है लोक मे नामक ।
 ते पवनकुमार विण साभल्यो, जब प्रहस्त मन्त्री ने
 कहे है आमक ॥ कहे आपां जावां रूप फेरने,
 जोवाने अञ्जना नणो रूप शिणगारक । पीछे मनो
 करी दोनुं नीसखा, ते आय उभा महल नले निण
 वारक ॥ स० ॥ ६ ॥ हिंदे पवनजी निरखे छै
 अञ्जना, प्रहस्त नीची घाली रखो दिष्टक । रूप में
 जाणे देवांगणां, बाणी बोले जाणे कोयल बाणक ।
 चम्पक वरण चतुर घणी, आंख्या जाणै मृगनैन
 समानक ॥ स० ॥ ७ ॥ अञ्जना बैठी सिधासणे,
 दोनुं पासे अनेक सखिया नणा हृन्दक । वस्त्र
 आभूषण अगे धखा शोभ रही जाणे पूनम
 चंदक ॥ हिंदे बसन्त माला हमउज्जरे बाई ने जोग

जोड़ी निमी श्रीकारक । उद्धोः पञ्चमी जणिपे,
 मेहवी यमी है अङ्गना नाक ॥ २० ॥ २ ॥ हिं
 बीजी सुखी हम उद्धो, पद्धा नो वर मन जिनका
 जेहक । मेहवा पञ्चमी वर नदी, वरन अङ्गना
 वरिष्ठ जेहक ॥ गंभु इन्दी ने जीपे, वर
 छावीन में पञ्चमी मेहवा । निज काण्ड क
 वरिष्ठो, कल्या ने वर नदी जणिपे जेहक ॥ २०
 ॥ २ ॥ हिं अङ्गना सुख हम उद्धो, वर वर
 ने नर नो अवनाक । वर कणी कणी काहें
 वेना नो जामी सुखि मङ्गलक ॥ सुख नाहें
 निज सुख ना, पञ्चमी सुखी ने वर जे
 वरक । आ नो ने नर कृष्णजी, वर नदी उद्धो
 मोह विह्वलक ॥ २० ॥ १० । हिं पञ्चमी वर
 नदी जिनके आ वर में नदी अङ्गना वरणाक ।
 वर नदी वर ने जणिपे, निज मेहवा नदी नर
 विह्वलक सुख जामा नो वर करे, नो हिं वरणा
 वर उद्धो । जे वर नो वरने वर वरणा
 वर ने वरन नो सुख जामक ॥ २० ॥ ११ ।

दिपथ

उपदेशिक ढाला—

- ४० सारा सुखसाजा निज त्पार०
 - ४१ तू जाग रे सुताना तारे काल घरा आना०
 - ४२ सारे रथानकरा जान ए०
 - ४३ मरत लखजा रे, कनक ने कामणा०
 - ४४ जीवा तूतो भालो रे प्राणा हम०
 - ४५ भव जावा आदि जिनेश्वर जिनड
 - ४६ पखवाहे को ढाल
 - ४७ अनाधो मुनिका ढाल
 - ४८ आउतो तूटा को साधो को नही रे . .
 - ४९ भगवत स्तुति . .
 - ५० पूज्य आ आ १००८ आ जवाहरलालजी महाराज के गुणाका ढाल—महारा पूज परमेश्वर स्वामी०
 - ५१ पञ्चमे ओरे को स्तवन
 - ५२ पूज्य आ आ जवाहरलालजी महाराज के गुणा को स्तवन—प्यारे प्रभु का ध्यान लगातो सदा
 - ५३ पूज्य गुण पुष्पाञ्जलि .
-

आशीष केतुमती मानक ॥ लृण उतारै रे बैनड़ी,
 रूप देख मन हरपित थायक । जाचक बोले विरुदा-
 चली, डणविध पवनजी परणवा जायक ॥ स०
 ॥ १५ ॥ सेना मिणगारी चतुरङ्गिणी, गाजेजी
 अम्बर बाजैजी नृक । स्वजन सगा मिलिया वणा,
 जान चाले जाणे गङ्गा नों पूरक ॥ वर विद्याधर
 दीपतो, शोभ रव्यो तिणरो वदन सनूरक । चिहुं
 दिश साथे सेवक वणा हाथ जोडी रव्या ऊभा
 हजूरक ॥ स० ॥ १६ ॥ महिन्दपुरी नेड़ा आविया,
 आई बधाई राजी हुवो रायक । दीधी यधामणी
 तेहने हरपित हुई अञ्जना तणी मायक ॥ आरती
 नों महोच्छव करे, महिन्द राजा मन हरप न
 मायक । स्वजन सगा मिलिया वणा, सेना छेई
 राजा माहमोजी जायक ॥ स० ॥ १७ ॥ महिन्द
 राजा माहमो आवियो, ढोल दमामा ने बूरे निशा-
 णक । राजा हो राणी सहू मिल्या, व्यापियो,
 निमर ने आंयम्यो भाणक ॥ सुमरो सामेलै
 आवियो, पवनजी देखने आनन्द थायक । धवल

मङ्गल गावे गोरङ्गी, लोक अञ्जना नों वर जोयवा
जायक ॥ स० ॥ १८ ॥ महिन्द राजा मोटा राजा
भणी, अति वणो दियो आडर मनमानक । उच्छ-
रङ्ग मन मांढे अति वणो, भाव भगति मूं मिलियो
राजानक ॥ जान उतारी रे आण ने, आपिया
भोजन विविध पकवानक । ऊपर सिखरण सांचवे,
खादिम स्वादिम दिया वणा मिष्टानक ॥ स० ॥
१९ ॥ हिवे पवनजी तोरण आविया, तो ही
अञ्जना ऊपर वणो रे अभावक । नाम सुण्या ही
राजी नहीं, मूल नहीं मन तेहनी चावक ॥ धवल
मङ्गल गावे गोरङ्गी, पूरण सासु करे बहु भांतक ।
पिण मन में न भावे पवन ने, ये तो परणे रे
अञ्जना बालवा दाहक ॥ स० ॥ २० ॥ रूपा तणो
रे मण्डप रच्यो, सोवन तणी मांडी तिहां वेहक ।
सोवन पाट मोत्यां जड्यो, अञ्जना ने पवनजी बैठा
छै तेहक ॥ हथलेवे हाथ मेल्यो तिहां, नयण
निहालेछै अञ्जना नारक । पिण पवन ने मूल गमे
नहीं, द्वेष जागे पहिली बात विचारक ॥ स० ॥

२१ ॥ द्विवे पवनजी परण ने उतल्या, कीथी पहरा-
वणी अञ्जना नो तातक । गयवर आपिया अति
वणा, ताजा तुरङ्ग दीथा विख्यातक ॥ कनक रत्न
बहु आपिया, आपी छै रूपा नणी बहु कोढ़क ।
वसन्तमाला दामी आदि दे, पांच सै दामियां
सरीखी जोड़क ॥ स० ॥ २२ ॥ द्विवे परणी ने
रतनपुरी मंचल्या, माहमो आयो तिहां प्रह्लाद
रायक । अञ्जना मन हरपित थई. मासु सुसरा ना
पूजिया पायक ॥ पांच सौ गांव राजा दिया,
आप्या छै आभरण रतन बहु मोलक । आया छै
बीन्द ने बीन्दणी, आया छै तिहां वाजते ढोलक
॥ स० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

दिवे कितोक काल गयां पीछे, आयो भेटणो
राय । तिहां पवन रो द्वेय परगट हवे, ते सुणज्यो
चित्त लाय ॥

॥ डाल ॥

पीहर थी आवो रे मुंगडी वस्त्र आभरण
 आपिया तासक । वसन्तमाला ने देई करी, अञ्जना
 मेलिया पवन रे पासक ॥ मुंगडी पवन खाधी
 नरो वस्त्र गहणा न पहरिया अङ्गक । अञ्जना स्
 द्वेष आणने, वस्त्र गहणा दिया मानङ्गक ॥ स०
 ॥ २४ ॥ वसन्तमाला बिलखी यई, आय कही
 अञ्जना कने जानक । स्वामी रो आपां ऊपरे, हेत न
 दोसे होई तिलमानक ॥ अञ्जना आख्यां आंतू
 भरे, मै सु चकी छै भगति अनेकक । ये नर दीसे
 छै निरमला, आपणे दोसे छै कर्म विशेषक ॥ स०
 ॥ २५ ॥ हिवे अञ्जना बैठी रे मालिये, पवनजो
 तुरी खिलावण जायक । आवता जावतां निरखनी,
 निम निम मन मे हरषित धायक ॥ पवनजी कोपे
 रे परजले, निजर दीठां मूल न सुहायक । नारी
 निहाले छै मो भणो, गोखे आडि दीनी भीत
 विणायक ॥ स० ॥ २६ ॥ पांच सौ गांव फोते

किया, माता पिता कहे सांभलो पृतक । अञ्जना
 सती रे सुलखणी, बहू ने संपिये निज घर सृतक ॥
 मोटा रे कुल नणी ऊपनी, राजा हो महिन्द नणी
 वहै लाजक । अञ्जना सं आदर कीजिये, डम कहे
 केतुमती ने राय प्रह्लादक ॥ स० ॥ २७ ॥ बापरो
 आणो पाछो मेलियो, आणे आयो बले बड़ो
 वीरक । अञ्जना कहै नवी आविये, मेल्या आभरण
 अद्भुत चीरक ॥ स्वामी रे मन मान्या नहीं, पीछर
 आय ने सं करुं बातक । डम कही बंधव मोकल्यो,
 दुःखधरे घणो मायने तातक ॥ स० ॥ २८ ॥ डम
 थारे बरस बीच में गया, ए कथा ऊपरे एतोई
 सम्यन्धक । हिवे रावण ने वरुण कटकी थई, मांढो-
 मांढि ऊपनो अति द्वेषक ॥ हय गय रथ सजिया
 वणा, पाला बखतर शोभे शरीरक । शूरां ने सुभट
 जिणगागिया, चालियो कटक बाजी रण भेरक ॥
 स० ॥ २९ ॥ एक तेड़ो रतनपुरी आवियो, प्रह्लाद
 गय करे जाया ने साजक । पवनजी हाथ जोड़ी
 कहे, एनो छै पिताजी डम नणो काजक ॥ तुम घर

रैठा लीला लगे पुर जाया नो एत पमाणक । इम
 कतिने आपुपगाल संचर्या तार मे अनुप ने लीनो
 है घाणक ॥ स० ॥ ३० ॥ पवनजी चाले रे कटक
 मे मन माहे चिन्तवे अशना नारक । दूर यकी
 पाय लागसा, भाव कुभाव देगां एक वारक ॥
 घसन्तमाला माहरी बैनरी, दही नो कचोलो न
 भरी ने आणक । सुकन रहा मनावल्यां, मारग
 माहे उभो रहो आणक ॥ स० ॥ ३१ ॥ सुकन
 मिसे पिउ देवस्था नमग करी ने हं लागसू
 पायक । लोक सहु इम जाणसो, दही नो कचोलो
 देवसी नायक ॥ कटक जाना पिउ वांदस्था, जाण
 से अशना आदरी पवन कुमारक । जिहां लगे
 स्वामी आवे नहो तिहां लगे मनमे कलं रे सन्तो-
 षक ॥ स० ॥ ३२ ॥ हिवे गयन्द वैसी दल सचखा,
 मात पिता ने नमाविगो शीशक । सज्जन सहु रे
 सन्तोषिया, अशना ऊपर अति घणी रीसक ॥ दूर
 धकी दृष्टि परी, चतुर चितारा नो जोवो चितारा-
 नक । पूतली लिखी रन्ना सारसी एह चितारा ने

देवो इनामक ॥ स० ॥ ३३ ॥ मन्त्री कहे नहीं
 पतली, भीति ओटे ऊँची अञ्जना नारक । मांभल
 पवन कोप्यो वणो । काँई मिली मोने मारग मझा-
 रक ॥ दूर टेली आवी करी, आशा अलुयी मेली
 आयो जातक । वसन्तमाला मोंड़े कड़का, मुख न
 देखावज्यो तुम नणो नाथक ॥ स० ॥ ३४ ॥ अंजना
 कहे दासी भणी, पोते छै म्हारे अति वणा पापक ।
 गेहली ए गाल न बोलिये, कटक जाना काँई
 दीधो सरापक । आशा मोटी मन मांढरे, काँई
 कुसांवण काढियो प्हक । देई ओलंभा दासी भणी,
 बांढ भाली ले गई वर मांढक ॥ स० ॥ ३५ ॥
 द्विवे अञ्जना कहे सुण सुन्दरी, मोने दुःख मांढे
 दुःख उपनो आजक । पाणी मांढे करी पातली,
 सामरे पीढरे गई मांढरी लाजक ॥ चारित्र लेवो
 मोने मिरै, करणी करी साहं आतम काजक ।
 नाम जपुं जगदीश नों, तेह मं पामिये अविचल
 राजक ॥ स० ॥ ३६ ॥ द्विवे नगर थकी दल मंचसो,
 माग में दूर कियो रे मलाणक । चकवो चकवी

तिहां टलबले, व्यापियो तिमिर ने आंध्रम्यो
भाणरु ॥ पवनजी मन्त्री ने डम कहे, अंजना नों
भूल न लीजिये नामरु । पुरुष पराया सुं मन करे,
चक्रवा चक्रवी नी परे मूकी छै नाररु ॥ स० ॥ ३७॥
मन्त्री कहे सुणो कुंवरजी, तुमे एवड़ो काई आणो
मन मे भरमरु । मोटकी सती छै अंजना, अहो
निशि सेवती जिन तणो धर्मरु । पुरुष परायो वंछे
नहीं, वचन काजे तुमे कांय करो द्वेषरु ॥ आ
शील सरोवर भूलती, गुण किया शिव गामी जाण
विशेषरु ॥ स० ॥ ३८ ॥

॥ देह ॥

वचन सुणी मन्त्री तणो, कोमल थयुं निज चित्त ।
पवनजी मन्त्री ने कहे, सुणो हमारा मित्त ॥ १ ॥
खोटो ए कारज में कखो, सन्तापी निज नार ।
वचन वरां से दुहवी, करवो कवण बिचार ॥ २ ॥
मो मन मे प्यारी बसे, जाणूं मिलिये जाय ।
लोके लाज रहे नहीं, मन मन में मुर्झाय ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेहिज्ज ॥

हिंवे पवनजी कहे सुणो मन्त्रवी, हं कटक
जाऊं छं नारी ने सन्नापक । पाछो जाऊं तो प्रजा
हंसे, महेला मांहे लाजे मांहेरो वापक ॥ मन्त्री कहे
छाना जावस्यां, तेड़ी सेनापति कहे नूं रुखवालक ।
अमे यात्रा करी ने पाछा आवस्यां, तिहां लग
कटक नी कीजे रुखवालक ॥ स० ॥ ३९ ॥ हिंवे
प्रछन्नपणै दोनूं आविया, आवी ने अंजना नों
उघाड्यो किंवाडक । वसन्नमाला नव उठने, उता-
वली बोले छै गाली दो चारक ॥ कहे शूरो पुन्य
गयो कटक में, कोण रे लम्पट आयो इण ठामक ।
प्रभाते हं राजा ने चिनवी, छाडाय देसूं हं तेहना
गामक ॥ स० ॥ ४० ॥ प्रहस्त मन्त्री डम उचो,
उहां आयो छै प्रह्लाद नो नन्दक । अंजना तणो छै
जिर धणी, वंश विद्याधर दीपक चंदक ॥ वसन्न-
माला आवी ओलव्यो, नयण निहाली ने पामी
आनन्दक । किंवाड ग्योली ने मांहि लिया, वसन्न
नाला ववावियो नरिन्दक ॥ स० ॥ ४१ ॥

निवेदन ।

मानाजी की उत्कट इच्छा थी कि एक ऐसी पुस्तक प्रकाशित की जाय जो आत्मार्थी जनोके व्याख्याय और ज्ञानवृद्धिमें सहायक हों। उन्हीं की सद्प्रेरणा से यह प्रस्तुत पुस्तक आप लोगों की सेवा में उपस्थित की गयी है। सग्रह कौम हुआ है ? इसके निर्णायक आप लोग हैं। पुस्तक प्रकाशित करना मेरा प्रथम प्रयास है। ऐसी अवस्था में अनेकों त्रुटिमें रह जानी सम्भव है। आशा है उदार सज्जनचन्द्र सुधार कर पढ़ेंगे एवं मुझे सूचित करने की कृपा करेंगे, ताकि द्वितीयावृत्तिमें सशोधन कर दी जाय।

भवदीय—

कोठारी चान्दमल ।

॥ दोहा ॥

अंजना सती तिण अवसरे. वंठी सामायिक
मांय । कर्म धर्म संभालती, रही धर्म लव ल्याय ॥
वसन्तमाला तिण अवसरे, हाथ जोड़ी कहै आम ।
सती रे सामायिक तिहां लगे. राजा करो विश्राम
॥ १ ॥

॥ दाल तेहिज देशि ॥

हिवे अंजना सामायिक पूरी करी, हाथ जोड़ी
लागे पिउ ने पायक । पवनजी कहै तूं मोटी सती,
लीन रही श्रीजिन धर्म मांहिक ॥ वचन बरां से मै
दुहवी, मै तने कीधो अभाव अगाधक । हाथ जोड़ी
करूं विनती ग्वमज्यो सती म्हारो अपराधक ॥
स० ॥ ४२ ॥ अंजना पाय नमी कहै, एहवा बोल
बोलो काई स्वामक । जेहवी पग तणी मोजड़ी,
तेहवी पुरुष ने स्त्री जाणक ॥ हाथ जोड़ी ने आण
उभी रही, मधुर सुहामणा बोलती वैणक । कहै
प्राप्ति विण किम पामिये, जाणे पत्थर गाली ने

कीधो छै मैणक ॥ स० ॥ ४३ ॥ तीन दिवस रमा
 तिहां पवनजी, तिहां भाव भगति निण कीर्ण
 विशेषक । वाय ढोले बींभने करी, पटरस भोजन
 आपिया अनेकक ॥ हाव भाव करे छै अंजना
 प्रीतम सुं वणी सांचवी रीतक । पवनजी आनद
 पास्या वणा. अंजना सुं धरी अति वणी प्रीतक ॥
 स० ॥ ४४ ॥ हिवे पवनजी पाछा निकले, अंजना
 बोली छै जोड़ीजी हाथक । आशा रहे कटाव
 मांहरें, लोक माने किम मांहरी बातक ॥ निण सुं
 मान पिता ने जणावज्यो, बाहना आभरण आप्या
 अहनाणक । शङ्का पड़े तो देखावज्यो, मान पिता-
 दिक सहू लेसी जाणक ॥ स० ॥ ४५ ॥ हिवे
 वसन्तमाला ने तेडी तिहां, पवनजी देई मनमानक ।
 मांहरें अंजना राणी मारां शिरे, प्रत्यक्ष चिन्नामण
 ने समानक ॥ तं कर्जे जनन वणा तेहना, जिम
 दांत ने जीभ भेला रहे जेहक । जिम तं अंजना ने
 भेली ग्हे, किम दीजे वणी भोलावणी तेहक ॥ स०
 ॥ ४६ ॥ वसन्तमाला ने माणक मोती दिया.

पीजार् धन दियो रे विशेषक । तणी सन्तोषी है
 वचन सं, वसन्तमाला हई हरष विशेषक ॥
 प्रहस्त मन्त्री ने इम कहै, जतन तीज्यो कुंवरजी ना
 तेहक । कुजले खेमे देगा पधारज्यो न्हे बाट जोवां
 जाणे उमज्यो मेहक ॥ स० ॥ ४७ ॥ सीम देवे
 अजना चालनां, रण माते आवे प्रणा पुरुष दुष्टक ।
 सौ पुत्र आवे है वरुण ना तेहने आगल रखे
 फेरवो पृष्ठक ॥ दुरजन कटक है वरुण नो लोहना
 षाण जाणे मुके अङ्गारक । निहा क्षत्री तणी रीन
 राखज्यो मरण भली पिण नही भली हारक ॥
 स० ॥ ४८ ॥ हिवे पोल धकी रे पाछी बली, नैणा
 मे दूटी है जल तणी धारक । मैं कटुक वचन कयो
 कंध ने, मुंह दाकी ने रोवै निण वारक ॥ वसन्त-
 माला आय भीरज देवे, हिवे आयो छै सामायिक
 कालक । देव गुरु धर्म हिये धरो, ब्रत पञ्चक्खाण
 थे लेवो संभालक ॥ स० ॥ ४९ ॥ हिवे अंजना
 सती निण अवसरे, रुडी रीन पाले ब्रत रसालक ।
 कर्म धर्म संभालती, सुखे गमावे छै इण विभ

कालक ॥ ध्यान धरे देवगुरु नणो मंसार नी जां
 छै काचीजी मायक । बोल सज्जाय गुणे थोकड
 इण परे अंजना ना दिन जायक ॥ स० ॥ ४० ।
 हिवे उदर आधान जाणी करि, अंजना मन मां
 हरप अपारक । धन खरचे करे धुपटा, लोकी
 दान देव शुभकारक ॥ भावना भावे उलट मन
 पात्र सुपात्र देवे मुक्ति ने लेहक । उदरह मन मां
 अनि वणो, दान देती न गिणे खेन कुखेनक ॥
 स० ॥ ४१ ॥ हिवे गणी राजा भणी विनवे
 मांभलो विनती मांझी आपक । अंजना करे धन
 उडावणां, इण मं धुरलगे पवन न कीधो मिला-
 पक ॥ तोही मन मांहे मान राखे वणो, कटक
 जानां पाही गहनी मामक । आप करो तो ह एहने
 वरजवा काजे जाजं निण ठामक ॥ स० ॥ ४२ ॥
 गजा पिण डीची छै आगन्या, हिवे केतुमती चानी
 मोहे मण्डाणक । साथे महेनियां लीधी वणी. मन
 मांहे मान बहु आणक ॥ आगे वयाउडा मेलिया.
 अंजना नृपते हरपित थायक । भाव भगति करी

वचन काने सुण्या. केतुमती राणी बोले छै तेहक ।
 पृथ्व लग तोने परहरी, मुक्त पुत्र ने तुक्त किमो
 मनेहक ॥ आज लगे अलगावणी, तूं आभरण
 चौरी ने निरमल थायक । विणध्यो रे दूध कांजी
 थकी, द्विवे मामग मूं परि पीहर जायक ॥ स०
 ॥ ५७ ॥ सासुग वचन काने सुण्या, अंजना रे
 मन उपनो दाहक । पुत्र तुमारो पाछो बले, तिहां
 लगे मुक्तने राखो वर मांहिक ॥ सासरा में सासुजी
 तुम नणो कहो तो पेंठ ग्वाह ने काहूं दिन रातक ।
 चरण कमल मूं गिर रही, हूं कलङ्क लेई किम पीहर
 जायक ॥ स० ॥ ५८ ॥ केतुमती राणी क्रोधे चढ़ी,
 पग रुगी क्रोध मूं डेलियो झीजक । अन्न मोड़ी ने
 उभी थई थड हड धृजी ने अति बणी रीमक ॥
 अलगी रहें मुक्त आंख थी. जिहां लगे म्हाग नगर
 नी सीमक । तिहां लगे अंजना ब्रह्म रहे. जिहां लगे
 मुक्त ने अन्न पाणी नणो नेमक ॥ स० ॥ ५९ ॥
 यमन्तमान्दा ने तेही करी. बन्धन बांधने टेरी छै
 तेहक । ते चोग्या आभरण म्हाग पुत्र ना. चोग

देगात् के डेडस देहक ॥ तेरे गरी रे टेरी गरी,
 घाजे है नाइणा रोवती तेहक । वसन्तमाला रम
 सुग्न भणे, चोर तो पवनजी सति तेहक ॥ स० ॥
 ६० ॥ हिवे कालो रे रथ अणावियो, कालाई तुरंग
 जोतरा है डोयक । काला ही वस पहराविया,
 काली हो भूरसी ठीधी है तेहक ॥ काली हो
 मस्तक रागही अंजना ने वसन्तमाला बैसाणो
 ताहक । अंजना चाली पीहर भणी, दुःख घणो धरती
 मन मांयक ॥ स० ॥ ६१ ॥ हिवे चालियो रथ
 उतावलो, आयो है बाप तणी भूम तेहक । दूर धी
 मेहल देखिया, सारथी रथ पाछो बाल्यो तेहक ॥
 जुहार करी अंजना भणी, सारथी चित्त मांहे
 चिन्तवे आमक । दुष्ट अकारज मैं कियो, मैं बन
 मांहे अंजना मेली इण ठामक ॥ स० ॥ ६२ ॥ हिवे
 सांझ पड़ी दिन आंधम्यो, रयण बिहाणी घोर
 अन्धकारक । हाथो हाथ सूझे नहीं, इण बेला मुझ
 ने कुण आधारक ॥ नाम जप जगदीश नों, इण
 विध काहे दुःख भारी रातक । शुद्ध सामायिक

परहण अङ्क ॥ अहनाण दीसे छै वाग्का नयन
 भरे जाणे मोत्यां ना वृन्दक । मुख कमलाणो छै
 बुगे, जाणै राहु ने अन्तरे दव गयो चन्दक ॥ सः
 ॥ ७० ॥ हम देवी माना धरणी हली सचेत छै
 रोवे बांगां जी पाइक । हं क्यों नहीं रही रे बांझणी,
 हण कलङ्क आप्यो म्हाग कुल मभारक ॥ हं मगा
 मम्बन्धी में किम फिस्, लेई कटारी ने वेदमं मांही
 कुम्बक । जिन कुखे अंजना उपनी, दीधो छै दुःख
 में दुःख विशेषक ॥ स० ॥ ७१ ॥ गणी ने रोवनी
 देवने, दाम्यां मिल आई अंजना ने पामक । आठ
 विहुणी उभी किमे, माय छोड़ी चाई तुम नणी
 आठक ॥ मामु ने मुमग लजाविया, लजावियो
 पीहर मांय मोमानक । तं बंश विगोवण उपनी,
 त्रिवे पापणी तं मंढो मति देवानक ॥ स० ॥ ७२ ॥
 यमन्तमान्ना बलनी कहे, एहवी अचुंकी थे बोले
 छे वायक । पवन कुंवर यरे आवसी, प्रछ कीजे
 निरणो मन मांयक ॥ आ सती तो संजम ले मही,
 गले छै गर्भ नणो ए फाठक । ए कलंक आय

काया नही भरे पवनजी आगवागी राखे है आगक
 ॥ स० ॥ ७३ ॥ इम कती दोन पाणी निकली,
 भार् भोजायां तणे घर जायक । बन्धव मांहे बैसी
 रया अंजना आंगणे उभी है आयक ॥ आय
 भोजायां मिली तिहां, मन बिना तिणा आपी है
 बाहक । आंगुली लेई हांतां भरी, आयवा न दीधी
 तिण ने घर मांयक ॥ स० ॥ ७४ ॥ इम अंजना
 घर घर छिण्डी घणी, किणहि न दीधी आयवा घर
 मांहेक । दीन बन्नन मुन बोलती, नयण भरे मुख
 रोवती तेहक ॥ भृगु नृषा करी आकुली, अन्न
 पाणी आपे कुण नामक । उभी है दीन दयामणी,
 नांखे निसासा उभी तिण ठामक ॥ स० ॥ ७५ ॥
 हिवे मिलने भोजायां ते इम कहें, बाई धे आपरो
 आपो संभालक । धरसूं जी हाखा क्यं नी हुवा,
 एह कखो जिसो कर्म चण्डालक ॥ अमे तो
 अवला स्यूं करा, आंगणे उभा रहो न लिगारक ।
 हम घर आया राय जाणसी, तुम तणा वीर ने
 कादसी बारक ॥ स० ॥ ७६ ॥ बंधवा किण ही

न पृच्छियो. स्वजन किण ही न पृच्छी रे नागक ।
 जिण दीदी छे अञ्जना सती, तिहां प्रोद्धिन प्रथम
 मृदिया द्वारक ॥ लोकांगी आमंग किन हुवे,
 अञ्जना ने नेही राखे घर मांगक । आदर भाव
 किनाई नही. एहवा कर्म उडय हुआ आयक ॥
 म० ॥ ७७ ॥ अञ्जना ने देवे आवती लोक
 आडा जइ देवे किंवाइक । घरमें कोई आवन
 देवे नहीं. वचन बोले लोक विविध प्रकारक ॥
 अञ्जना दुख वेदे वणो, जागे बही छे ग्वड़ग नी
 धारक । दुःख मांहे दुःख भाले वणो, अमरुन बरे
 मन मांदि अवारक ॥ ७८ ॥ द्विजे अञ्जना नृपा रे
 रत्नबले, जल लेई आयो ब्राह्मण नीरक । गण
 कुंवरी पाणी पियो, जीनल उत्तम निरमल नीरक ॥
 चलती अञ्जणा कहे नेहने, नगर मांहे तो नहीं
 पीउं पाणक । पोल बाहिर जल पीवसुं, इहां तो
 छे मांदिग वाप नी आणक ॥ म० ॥ ७९ ॥ नगर
 बाहिर जल बावरे, अञ्जना वमन्नमाना ने कहे छे
 आमक । गहन वन मोटी उजाड़ में, जंचा तो